मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 60 | अंक : 06 | दिसम्बर, 2019 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

शांति हो, सदभावना हो भाईचारा हो
फिर धरा पर वो सुधामय प्रेमधारा हो !

मानवाधिकार दिवस

सत्यमेव जयते

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

"विद्यालय प्रांगण में प्रार्थना सभा स्थल बहुत पवित्र स्थान होता है। यहीं से अनुशासन एवं सद्संस्कारों का बीजारोपण होता है। कक्षावार पंक्तियों में आँखें मूँदे, हाथ जोड़ खड़े इन अनुशासित विद्यार्थियों की भावपूर्ण प्रार्थना माँ सरस्वती अवश्य सुनती है, अज्ञान का तिमिर हर उन्हें ज्ञान का वरदान देती है।"

अज्ञानता से हमें तार दे माँ

शिक्षा का अर्थ है सीखना और सिखाना। विद्यालय ज्ञान के मंदिर समान होते हैं। वहीं देश के भविष्य कहे जाने वाले बच्चों की आरम्भिक नींव तैयार होती है। विद्यालयों से अपने आपको मैं विशेष रूप से जुड़ा हुआ महसूस करता हूँ। जब पढ़ता था तब भी और आज भी एक अपनापन विद्यालयों से अनुभूत करता हूँ। विद्यालय मुझे मंदिर ही नहीं तीर्थ स्थान जैसे लगते हैं। शिक्षक ज्ञान देने वाले ऐसे गुरुजन हैं जिनमें मुझे समाज सुधारकों एवं नैतिक मूल्यों की स्थापना करने वालों की छवि दिखाई देती है। शिक्षामंत्री के रूप में जब भी विद्यालयों में जाने तथा गुरुजनों से मिलने का अवसर मिलता है तब वर्षों से मन मंदिर में बसी उक्त वर्णित छवि देखने का प्रयास करता हूँ। बहुत जगहों पर अच्छा तो कहीं-कहीं कुछ अच्छा नहीं लगने वाला अनुभव होता है। अच्छे की सराहना करके मुझे अपार सुख व सन्तोष की अनुभूति होती है, मगर जो ठीक नहीं है, उसकी तरफ ध्यान दिलाना भी अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। यह विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के दौरान गुरुजनों से दिए संस्कार ही हैं।

पिछले महीने राजस्थान में शिक्षा विभाग के अंतर्गत एक नई पहल 'आओ चले विद्यालय की ओर' हमने की। शिक्षा में गुणात्मक सुधार करने के उद्देश्य को लेकर शैक्षिक संवाद कार्यक्रम की यह शुरूआत इस अपेक्षा और संकल्प के साथ हुई है कि एक अकेला कुछ अधिक नहीं कर सकता लेकिन हम सब मिलकर प्रयास करेंगे और हमारे केन्द्र में विद्यालय और उसमें पढ़ने वाले बालक-बालिकाएँ होंगे तो हमारा राजस्थान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में देश में शीर्ष स्थान पर पहुँचेगा। इस अभियान का शुभारंभ शिक्षा नगरी कोटा से हुआ है। हमारे संस्थाप्रधान तथा शिक्षक समाज की सहभागिता सुनिश्चित करते हुए शैक्षिक उन्नयन के लिए मिशन भावना से कार्य करें। बच्चे तो हमारे मोरमुकुट हैं। उनका हित हमारा प्रथम उद्देश्य होना चाहिए।

विद्यालय प्रांगण में प्रार्थना सभा स्थल बहुत पवित्र स्थान होता है। यहीं से अनुशासन एवं सद्संस्कारों का बीजारोपण होता है। कक्षावार पंक्तियों में आँखें मूँदे, हाथ जोड़ खड़े इन अनुशासित विद्यार्थियों की भावपूर्ण प्रार्थना माँ सरस्वती अवश्य सुनती है, अज्ञान का तिमिर हर उन्हें ज्ञान का वरदान देती है-

हे शारदे माँ! हे शारदे माँ!!
अज्ञानता से हमें तार दे माँ!!

यह वर्ष 2019 का आखिरी महीना है। शीघ्र ही हम इस वर्ष की विदाई कर नए वर्ष का स्वागत करेंगे। समय चक्र अनवरत चलता रहता है। इसका अपना अनुशासन है। इस माह में हमें यह समीक्षा (Review) करनी चाहिए कि वर्ष के प्रारम्भ में जो संकल्प हमने लिए थे, उन्हें कहाँ तक पूरा कर पाए। इस वर्ष रही कमियों एवं हुई भूलों को ध्यान में रखते हुए नए वर्ष 2020 के लिए हमें नियोजन (Planning) करना है। सर्दी का आगमन हो चुका है। अब दत्तचित्त और लक्ष्योन्मुखी होकर पढ़ने, शिक्षण-अधिगम और कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं को चरम पर पहुँचाने में आनन्द आएगा। गुरुजन विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए प्रेरित करें। अर्द्धवार्षिक परीक्षा के साथ ही औपचारिक परीक्षाओं का दौर शुरू हो जाएगा। राजस्थान के मेरे विद्यार्थी हर परीक्षा-हर प्रतियोगिता में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करें, मैं यही चाहता हूँ और आप गुरुजनों से यही अपेक्षा करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ.......

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 60 | अंक : 6 | मार्गशीर्ष शु.–पौष शु. २०७६ | दिसम्बर, 2019

प्रधान सम्पादक
नथमल डिडेल

❊

वरिष्ठ सम्पादक
अनिल कुमार अग्रवाल

❊

सम्पादक
मुकेश व्यास

❊

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

❊

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 011
दूरभाष : 0151–2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **–वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- दृढ़ संकल्प : शक्ति और परिणाम 5

आलेख

- सन्त सन्दर्भों में गाँधी दर्शन 6
  डॉ. रामनारायण शर्मा
- महात्मा गाँधी : युग पुरुष 12
  पवन भँवरिया
- औपचारिक शिक्षा की बुनियाद–गुणवत्तापूर्ण पूर्व प्राथमिक शिक्षा 13
  डॉ. डी.डी. गौतम
- प्रारंभिक शिक्षा में आई.सी.टी. 15
  हुकम चन्द चौधरी
- जीवन की चुनौतियों का दृढ़ इरादों से सामना करें 18
  हीराराम चौधरी
- सिंगल यूज प्लास्टिक : हानिकारक 35
  शबनम भारतीय
- संस्कार, नैतिक मूल्य एवं कौशल विकास 36
  गिरीराज छंगाणी
- हौंसला 37
  भोगीलाल पाटीदार
- ज्ञान को प्रयोग में लेने पर ही प्रभाव दिखता है 38
  संगीता भाटी
- शिक्षा चौपाल : एक नवाचार 42
  महेश कुमार मंगल

रपट

- स्काउट स्थापना दिवस पर फ्लेग का विमोचन 9
  सवाई सिंह
- संवाद कार्यक्रम–''आओ चले विद्यालय की ओर...' 10
  रामस्वरूप मीणा
- महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) कोटा 48
  राहुल शर्मा

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश–परिपत्र 19–34
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 34
- पञ्चाङ्ग (दिसम्बर, 2019) 34
- बाल शिविरा 43–44
- शाला प्रांगण 45–47
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 39–42

- सुधियों की देहरी पर
  कवयित्री : तारकेश्वरी तरु 'सुधि'
  समीक्षक : **रामजीलाल घोड़ेला**
- सम्भवामि युगे युगे
  लेखक : हुक्मीचंद लाम्बीवाला
  समीक्षक : **सतीश चन्द्र श्रीमाली**
- धुन्ध, धुआँ और धूप
  लेखक : सुरेशचन्द्र सर्वहारा
  समीक्षक : **ज्ञानप्रकाश 'पीयूष'**
- भूतणी (राजस्थानी बाल उपन्यास)
  उपन्यासकार : श्री देवकिशन राजपुरोहित
  समीक्षक : **डॉ. रामरतन लटियाल**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

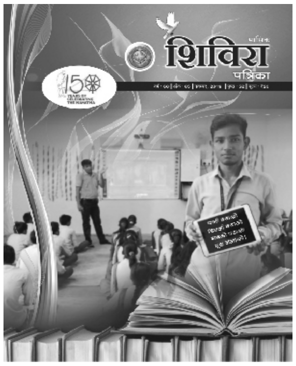

▼ चिन्तन

पुष्पिताः फलवन्तश्च तर्पयन्तीह मानवान्।
वृक्षदं पुत्रवत् वृक्षास्तारयन्ति परत्र च।।

-महाभारत

अर्थ-फलों और फूलों वाले वृक्ष मनुष्यों को तृप्त करते हैं। वृक्ष देने वाले अर्थात् वृक्षारोपण करने वाले व्यक्ति का तारण, वृक्ष परलोक में भी करते हैं।

पाठकों की बात

- सादर प्रणाम। माह नवम्बर 2019 का शिविरा अंक मिला। प्रतिमाह शिविरा अंक का बेसब्री से इंतजार रहता है। डिजीटल कक्षा कक्ष एवं विभिन्न स्थानों की प्रेरक गतिविधियों के चित्रों से सज्जित आकर्षक आवरण पृष्ठ। माननीय शिक्षा मंत्री महोदय द्वारा गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा की अपील एवं माननीय निदेशक महोदय द्वारा अपनेपन के भाव के द्वारा अपना विद्यालय श्रेष्ठ विद्यालय की अपील प्रेरणाप्रद लगी। शिविरा में बाल शिविरा को स्थान देकर प्रकाशित करना छात्रों, अभिभावकों एवं शिक्षकों, सभी के लिए प्रेरणाप्रद है तथा इससे सभी का उत्साहवर्द्धन होता है। छात्र व अभिभावक यह महसूस करते हैं कि राजस्थान के शिक्षा विभाग की इतनी बड़ी पत्रिका ने हमारी रचनात्मक अहमियत समझे, इसलिए हम सभी तहेदिल से सम्पादक मंडल के आभारी है। पत्रिका में समाहित सभी विधाओं के लेख एवं रचनाएं उच्च स्तरीय प्रेरणादायक, मार्गदर्शक एवं सम्बल प्रदान करने वाली है। पत्रिका में आप पूरे भारत से प्राप्त रचनाओं को स्थान देकर राष्ट्रीय एकता की भावना को बल प्रदान करते हैं। इस पत्रिका में विशेष रूप से झारखंड से अंकुश्री का पर्यावरण आलेख, ग्वालियर से बाल दिवस का डॉ. श्रीवास्तव का आलेख, हिमाचल से श्री पवन चौहान का बाल मनोविज्ञान आधारित आलेख देकर एकता की मिशाल कायम की है। सम्पूर्ण सम्पादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना। आप इसी प्रकार विचारों रूपी ज्ञान गंगा का प्रवाह हम पाठकों तक नियमित प्रवाहित करते रहेंगे ऐसी प्रार्थना है। जय हिन्द-जय भारत।

  -हजारीराम विश्नोई, जोधपुर

- शिविरा नवम्बर के अंक में 'अपनों से अपनी बात' में माननीय शिक्षा राज्य मंत्री डोटासरा जी ने गुणवत्ता पूर्ण प्राथमिक शिक्षा पर अपना संकल्प व्यक्त कर तदनुरूप शिक्षकों से अपेक्षा की है। आज प्राथमिक शिक्षा का स्तर किसी से छिपा हुआ नहीं है, अतः संकल्पबद्ध होकर प्रयास करने होंगे तथा प्राथमिक शिक्षा को गुणवत्ता के मापदण्डो का निर्धारण कर अमल में लाने चाहिए। प्राथमिक शिक्षा में बस्ते के बोझ पर भी विचार किया जाना चाहिए। माननीय मंत्री जी की बात शिक्षा के मूल से जुड़ी हुई है। दिशाकल्प में निदेशक महोदय ने शिक्षकों, भामाशाहों की पीठ थपथपा कर उनका उत्साह अभिवर्द्धन किया है। अंक में प्रकाशित आलेख संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण, जल, थल और स्वास्थ्य के लिए घातक प्लास्टिक तथा शिक्षा एवं समाज आदि अच्छे तथा प्रेरक बौद्धिक आलेख है।

  -शान्तिलाल सेठ, बाँसवाड़ा

- मासिक पत्रिका शिविरा नवम्बर 2019 का अंक पढ़ा। अपनी बात में मंत्रीजी ने संस्कारित प्रतिभाशाली छात्रों की अपेक्षा की है। राष्ट्र की अवधारणा ही संस्कृति व संस्कार है। दिशाकल्प में माननीय निदेशक महोदय के प्रेरणाप्रद आह्वान से उत्कृष्ट गुणात्मक बोर्ड परीक्षा परिणाम मिलेगा। अंक की रचना गाँधी कल आज व कल समीचीन आलेख है। मुखावरण पर पानी-बिजली की बचत, वृक्ष लगाने व सबको पढ़ाने की प्रेरणा है।

  -घनश्याम विश्नोई, जैसलमेर

- माह नवम्बर की शिविरा पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित चित्र शिक्षकों एवं छात्रों के लिए प्रेरणादायी तथा अंकित वाक्यांश पर चलने का आह्वान हमारे प्रगति का सूचक है। शिविरा में प्रत्येक माह में कुछ नवीनता से पाठकों के ज्ञान में अभिवृद्धि होती है। बाल शिविरा पृष्ठ पर रचनात्मक लेखन से विद्यार्थियों की गतिविधियों जिनमें विभिन्न आयाम प्रस्तुत किए गए। इससे छात्र-छात्राओं की ऊर्जा का सदुपयोग होता है। निदेशक महोदय के निर्देशों की पालना से उत्कृष्ट बोर्ड परीक्षा परिणाम संख्यात्मक के साथ-साथ गुणात्मक प्रतिशत में भी बढ़ोतरी होगी। बाल सभाओं के माध्यम से अभिभावक अध्ययनरत विद्यार्थियों की प्रकृति को जान सकेंगे तथा विद्यालय की समस्त गतिविधियों के संचालन की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

  -सालगराम परिहार, बालोतरा, बाडमेर

- माह नवम्बर की शिविरा में माननीय मंत्रीजी की 'अपनों से अपनी बात' व निदेशक महोदय का 'दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ' शिक्षक समुदाय के लिए प्रेरणादायक है। निदेशक महोदय ने भामाशाहों के सहयोग के लिए उत्साहवर्धन किया। पत्रिका में प्रकाशन सामग्री का चयन व सभी विधाओं के आलेख व रचनाएँ सम्पादक मण्डल की सूझबूझ एवं पारंगतता को प्रकट करती है। बाल शिविरा में बालकों की रचनाओं का रंगीन आवरण में प्रकाशन करना नवरचनाकारों का उत्साह बढ़ाएगी। पत्रिका के आवरणीय सुन्दरता एवं सम्पूर्ण सामग्री सभी शिक्षकों के लिए पठनीय एवं उपयोगी है। सम्पादक मण्डल को इसके लिए बहुत-बहुत बधाई।

  -मुकेश कुमार शर्मा, बीकानेर

सत्यमेव जयते

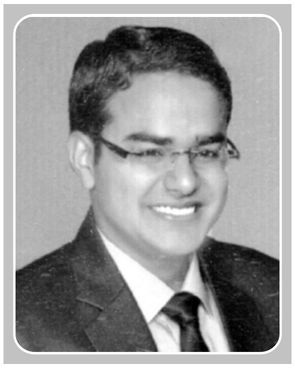

नथमल डिडेल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

"निरन्तर अभ्यास और अध्ययन से दृढ़ विश्वास बनता है और नई शक्ति आती है। अतिरिक्त परिश्रम करके विद्यार्थी और शिक्षक अपने विद्यालय को विशिष्ट विद्यालय बनाने का गौरव प्राप्त करें।"

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

दृढ़ संकल्प : शक्ति और परिणाम

आपको विदित है कि वर्तमान शिक्षा सत्र 2019-20 की बोर्ड परीक्षा फरवरी, 2020 में आयोज्य है। परीक्षा की दृष्टि से प्रत्येक संस्थाप्रधान और शिक्षक यह सुनिश्चित करें कि उपलब्ध शैक्षिक दिवसों में न केवल पाठ्यक्रम पूर्ण हो अपितु विद्यार्थी अपनी क्षमता का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन भी करें। निश्चित समयावधि की कार्ययोजना बनवाकर विषयाध्यापकों से अतिरिक्त कक्षाएं लगवाकर, विद्यार्थियों की कठिनाइयों के निवारण की व्यवस्था की जाए, निरन्तर अभ्यास, निश्चित समयावधि में जाँच और सतत मूल्यांकन के साथ निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किया जाए। किसी विद्यालय में रिक्त पद और न्यून अधिगम लब्धि की स्थिति में संस्थाप्रधान पीइइओ/सीबीइओ से बेहतर समन्वय करते हुए समीपवर्ती विद्यालय से योग्यताधारी शिक्षकों को शिक्षण व्यवस्थार्थ लगवाकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षण की सुनिश्चितता करवाएं। प्रत्येक विद्यालय में पाठ्यक्रम पूर्ण करवाना संस्थाप्रधान की व्यक्तिगत जिम्मेदारी होगी।

वर्तमान सत्र की अर्द्धवार्षिक परीक्षा 10 से 23 दिसम्बर तक आयोज्य है। इस परीक्षा का तत्काल मूल्यांकन करवाते हुए प्राप्तांकों के आधार पर विद्यार्थियों की तैयारियों को नई दिशा दी जाए। शीतकालीन अवकाश (25-31,दिसम्बर) की अवधि में भी विद्यार्थी अध्ययन और रचनात्मकता से सतत जुड़े रहें ऐसी व्यवस्था की जाए कि उनकी विषयगत कठिनाइयों का निवारण हो। निरन्तर अभ्यास और अध्ययन से दृढ़ विश्वास बनता है और नई शक्ति आती है। अतिरिक्त परिश्रम करके विद्यार्थी और शिक्षक अपने विद्यालय को विशिष्ट विद्यालय बनाने का गौरव प्राप्त करें।

विद्यालय परिसर में और सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर सामुदायिक बालसभा का आयोजन होता है। संस्थाप्रधान और शिक्षक प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को बालसभा रूपी मंच प्रदान कर उनकी नेतृत्व क्षमता को नए आयाम प्रदान करें। एसडीएमसी और एसएमसी के सदस्यों का सक्रिय सहयोग लेकर विद्यालय के भौतिकस्वरूप और उच्चस्तरीय शैक्षिक वातावरण की निर्मिति सुनिश्चित करें। स्थानीय भामाशाहों और अभिभावकों में विद्यालय के प्रति अपनेपन का सर्वोच्च भाव जाग्रत करें।

हम सभी शिक्षित हैं, आइए कल के सुखद भविष्य के लिए आज कुछ नया करें, विशेष करें, सार्थक करें...

सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना के साथ...

(नथमल डिडेल)

गाँधी 150वीं जयन्ती विशेष

सन्त सन्दर्भों में गाँधी दर्शन

❒ डॉ. रामनारायण शर्मा

मोहनदास कर्मचन्द गाँधी ऐसे अद्‌भुत महात्मा थे जिन्होंने जगत के महानतम धार्मिक एवं दार्शनिक आचार्यों से सनातन व सार्वभौमिक तथ्यों को ग्रहण कर व्यावहारिक जीवन के लिए उपयुक्त एक नवीन दार्शनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। यद्यपि गाँधी शास्त्रीय दार्शनिक नहीं थे किन्तु महात्मा गाँधी का भारतीय चिन्तकों में अनन्य स्थान था। जगत के अन्य महान् व्यक्तियों से वे इस अर्थ में भिन्न हैं कि वे जन्म से ही महान नहीं थे। उन्होंने दो सद्‌गुणों-सत्य के प्रति निष्ठा तथा प्राणिमात्र के प्रति प्रेम को परीक्षण द्वारा व्यावहारिक जीवन में उतारकर अपने को महान बनाया। इस नैतिक नेतृत्व ने गाँधी को भारत के ही नहीं अपितु विश्व के महान् नैतिक-धार्मिक चिन्तकों की पंक्ति में बैठा दिया है। उनका जीवन दर्शन एक सच्चे सन्त को व्याख्यायित करता है।

मोहनदास करमचन्द गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात में हुआ था। बाल्यकाल में उनके ऊर्वर मस्तिष्क पर रामायण, भागवत आदि ग्रन्थों का अत्यधिक प्रभाव पड़ा, जिसके फलस्वरूप धर्म एवं नैतिकता में उनकी दृढ़ आस्था हो गई। हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण कर कानून के अध्ययन हेतु वे इंग्लैण्ड चले गए तथा 1891 में बैरिस्टर बनकर भारत लौटे। यहाँ अल्पवास के पश्चात् वे दक्षिण अफ्रीका चले गए, जहाँ कई वर्षों तक उन्होंने जातिगत भेदभाव के विरुद्ध अहिंसक आन्दोलन चलाया। भारत लौटने पर उन्होंने स्वतंत्रता-संग्राम का नेतृत्व किया। आधुनिक भारत दर्शन में गाँधी का विशिष्ट योगदान नीति-मीमांसा तथा समाज दर्शन के सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप देने में निहित है।

गाँधी नैतिक युक्ति को अत्यधिक महत्त्व देते थे। उनके लिए अन्तरात्मा ईश्वर की आवाज है, कर्त्तव्य का आदेश है, जिसका उन्होंने सदैव पालन किया।

यद्यपि गाँधी कानून के विद्यार्थी रहे तथा उन्हें कोई शास्त्रीय दार्शनिक प्रशिक्षण भी प्राप्त नहीं था तथापि भारतीय एवं पाश्चात्य धर्म ग्रन्थों के व्यापक अध्ययन एवं विभिन्न विषयों पर विद्वानों से चर्चा एवं वार्तालाप के फलस्वरूप उन्होंने सत्य का अनुसंधान किया और वे युगपुरुष के रूप में उभरकर सामने आए।

सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन् के शब्दों में-'गाँधीजी उन पैगम्बरों में से हैं, जिनमें हृदय का शौर्य, आत्मा का शील और निर्भीक व्यक्ति की हंसी के दर्शन होते हैं। उनका जीवन और उनके उपदेश आत्मा में आस्था, उसके रहस्यों के प्रति आदरभाव, पवित्रता में निहित सौन्दर्य, जीवन के कर्त्तव्यों को स्वीकार तथा चरित्र की प्रामाणिकता जैसे मूल्यों के साक्षी है, जो इस राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं से परे सार्वभौम है और युगों से ही इस देश की धरोहर रहे हैं।'

गाँधी को जिन पुस्तकों ने प्रभावित किया, उनमें गीता, रामायण, महाभारत, बाइबल, कुरान आदि धर्मग्रन्थों के अतिरिक्त मैक्समूलर की पुस्तक 'व्हाट इट कैन टीच अस' आर्नल्ड की-'लाइट ऑफ एशिया' ऐनीबेसेन्ट की-'हाउ आई बिकेम ए थियोसाफिस्ट', रस्किन की 'अन टू दिस लास्ट' तथा कार्लाइल की-'हीरोज एण्ड हीरो-वर्शिप' आदि का उल्लेख किया जा सकता है।

गाँधी की मुख्य कृतियाँ हैं-'मेरी आत्मकथा'/'सत्य के प्रयोग', 'हिन्दू धर्म', 'अनासक्तियोग' (गीतों की व्याख्या), 'सत्याग्रह' आदि।

विवेच्य विषय 'सन्त सन्दर्भों में गाँधी दर्शन' को देखें तो सच्चे संत के लक्षणों के अन्तर्गत शास्त्रीय विवेचनानुसार संत विषयों में लिप्त नहीं होते, शील और सद्‌गुणों की खान होते हैं। उन्हें पराया दुख देखकर दुख और सुख देखकर सुख होता है। वे समता रखते हैं उनके मन में कोई उनका शत्रु नहीं होता। संत लोग मद से रहित और वैराग्यवान तथा लोभ, क्रोध, हर्ष और भय का त्याग किए हुए रहते हैं। वे बहुत ही कोमल चित्त वाले दीन-दुखियों पर दयावान तथा मन, वचन और कर्म से ईश्वर की विशुद्ध भक्ति करने वाले होते हैं। संतजन सबको सम्मान देते हैं पर स्वयं मानरहित होते हैं। शांति, वैराग्य, विनय और प्रसन्नता से प्रफुल्लित, सबके प्रति सरलता व मित्रभाव, मन व इन्द्रियों के निग्रह करने वाले, नियम और नीति पर अडिग, मृदुभाषी, निन्दा और बड़ाई दोनों स्थितियों में समान रहने वाले तथा मन, वाणी और शरीर से सदैव दूसरे का उपकार करना जिनका सहज स्वभाव है, ऐसे लोगों को शास्त्रों में 'संत' कहा गया है। 'आदर्श आचार संहिता' के रूप में ख्यात 'रामचरितमानस' में भी इसी प्रकार से संतों के गुण बखूबी वर्णित हुए है। तुलसी कहते हैं-

पर उपकार वचन मन काया।
संत सहज सुभाउ खगराया।।

सत्य के अनुसंधानकर्त्ता गाँधी में इस प्रकार के दिव्यगुण थे किन्तु वे फिर भी अपने आप को संत नहीं मानते और महात्मा कहलाना भी उनको पसंद नहीं था। यह उनकी और भी महानता है। वे वास्तव में अद्‌भुत संत थे, उनका जीवन दर्शन संत होने के मायने को बखूबी परिभाषित करता है। एतदर्थ उनके विचार द्रष्टव्य है-

''मैं सोचता हूँ कि वर्तमान जीवन से 'संत' शब्द निकाल दिया जाना चाहिए, यह इतना पवित्र शब्द है कि इसे यूँ ही किसी के साथ जोड़ देना उचित नहीं है। मेरे जैसे आदमी के साथ तो और भी नहीं, जो बस एक साधारण-सा सत्य-शोधक होने का दावा करता है, जिसे अपनी सीमाओं और त्रुटियों का अहसास है और जब-जब उससे त्रुटियाँ हो जाती हैं, तब-तब बिना हिचक उन्हें स्वीकार कर लेता है और जो निस्संकोच इस बात को मानता है कि वह किसी वैज्ञानिक की भांति, जीवन की कुछ शाश्वत सच्चाईयों के बारे में प्रयोग कर रहा है, किन्तु वैज्ञानिक होने का दावा भी वह नहीं कर सकता, क्योंकि अपनी पद्धतियों की वैज्ञानिक यथार्थता का उसके पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है और न ही वह अपने प्रयोगों के ऐसे प्रत्यक्ष परिणाम दिखा सकता है, जैसे कि आधुनिक विज्ञान को चाहिए।''

गाँधी के दर्शन को उनके प्रकीर्ण लेखन और उक्तियों से ही संश्लिष्ट किया जा सकता है। गाँधी सत्य की नीति को प्रकाशित करते हुए लिखते हैं-''मैं संत के वेश में राजनेता नहीं हूँ। लेकिन चूंकि सत्य सर्वोच्च बुद्धिमता है इसलिए कभी-कभी मेरे कार्य किसी शीर्षस्थ राजनेता के-से कार्य प्रतीत होते हैं। मैं समझता हूँ कि सत्य और अहिंसा की नीति के अलावा मेरी कोई और नीति नहीं है। मैं देश या अपने धर्म तक के उद्धार के लिए सत्य और अहिंसा की बलि नहीं दूँगा। वैसे इनकी बलि देकर देश या धर्म का उद्धार किया भी नहीं जा सकता।''

गाँधी सत्य और अहिंसा को तत्वतः एक ही मानते हैं तथा ईश्वर से प्रार्थना में भी सत्य के प्रति दृढ़ आस्था की याचना करते हैं। वे बचपन से ही सत्य के प्रति निष्ठावान रहे हैं। इसी बात को इंगित करते हुए गाँधी कहते हैं-

''मेरा मानना है कि मैं बचपन से ही सत्य का पक्षधर रहा हूँ यह मेरे लिए बड़ा स्वाभाविक था। मेरी प्रार्थनामय खोज ने **'ईश्वर सत्य है'** के सामान्य सूत्र के स्थान पर मुझे एक प्रकाशमान सूत्र दिया- **'सत्य ही ईश्वर है'**। यह सूत्र एक तरह से मुझे ईश्वर के रू-ब-रू खड़ा कर देता है। मैं अपनी सत्ता के कण-कण में ईश्वर को व्याप्त अनुभव करता हूँ।'' गाँधी अपने परिभाषित सूत्र-**'सत्य ही ईश्वर है'** को समझाते हुए कहते हैं-''यदि मानव जिह्वा के लिए ईश्वर का पूर्णतया वर्णन सम्भव हो तो हमें कहना होगा कि ईश्वर सत्य है, परन्तु मैंने एक कदम आगे बढ़ाकर कहा कि 'सत्य ईश्वर है'। मुझे सत्य के सम्बन्ध में कोई दोहरा अर्थ नहीं मिला तथा नास्तिक लोग भी सत्य की आवश्यकता शक्ति को स्वीकार करते हैं। अतः **'सत्य ही ईश्वर है'**, यह परिभाषा मुझे अधिकतम संतोष देती है।''

इस प्रकार गाँधी नैतिक युक्ति को अधिक महत्त्व देते थे। उनके लिए अन्तरात्मा ईश्वर की आवाज है, कर्त्तव्य का आदेश है, जिसका उन्होंने सदैव पालन किया। गाँधी सच्चाई में ही विश्वास करते थे। उनका अदम्य विश्वास था कि अंततः सच्चाई ही फलीभूत होती है तथा जीत भी सच्चाई की होती है। गाँधी अपने आप को महात्मा भी नहीं मानते तथा सन्यासी भी नहीं कहते। इस संदर्भ में उनके विचार द्रष्टव्य है-

''मुझे नहीं लगता कि मैं महात्मा हूँ। लेकिन मैं यह अवश्य जानता हूँ कि मैं ईश्वर के सर्वाधिक दीन-विनीत प्राणियों में से एक हूँ।''

गाँधी अपनी महात्मा की पदवी को रेखांकित करते हुए कहते हैं-

''इस महात्मा की पदवी ने मुझे बड़ा कष्ट पहुँचाया है और मुझे एक क्षण भी ऐसा याद नहीं जब उसने मुझे गुदगुदाया हो।''

''मेरी महात्मा की पदवी व्यर्थ है। यह मेरे बाह्य कार्यकलाप के कारण है, मेरी राजनीति के कारण जो मेरा लघुतम पक्ष है और इसलिए क्षणजीवी भी है। मेरा वास्तविक पक्ष है सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य के प्रति मेरा आग्रह और इसी का महत्त्व स्थायी है। यह पक्ष चाहे जितना छोटा हो पर इसकी उपेक्षा नहीं करनी है। यही मेरा सर्वस्व है। मुझे मेरी असफलताएँ और मोहभंग भी प्यारे हैं, ये भी तो सफलता की ही सीढ़ियाँ हैं।''

दुनिया बहुत कम जानती है कि मेरी तथाकथित महानता किस कदर मेरे मूक, निष्ठावान, योग्य और शुद्ध कार्यकर्त्ताओं-स्त्री एवं पुरुषों-के अनवरत कठोर परिश्रम पर और नीरस कामों में भी उनकी लगन पर आश्रित है।

गाँधीजी अपने आप को सन्यासी भी नहीं मानते। वे तो वास्तव में सत्य और अहिंसा के अनन्य साधक थे। लंगोटी को जीवन का सहज विकास मानने वाले वास्तव में अद्भुत संत गाँधी कहते हैं-''मैंने अपने आप को कभी सन्यासी भी नहीं कहा। सन्यास बड़ी कठिन चीज है। मैं तो स्वयं को एक गृहस्थ मानता हूँ जो अपने सहकर्मियों के साथ मिलकर, मित्रों की दानशीलता पर जीवन निर्वाह करते हुए, सेवा का विनम्र जीवन जी रहा है.....। मैं जो जीवन जी रहा हूँ वह पूर्णतया सुगम और बड़ा सुखकर है, यदि सुगमता और सुख को मनः स्थिति मान लें तो मुझे जो कुछ चाहिए, वह सब उपलब्ध है और मुझे व्यक्तिगत पूंजी के रूप में कुछ भी संजोकर रखने की कतई जरूरत नहीं है।'' वस्तुतः यह एक सच्चे साधु के लक्षण हैं। गाँधी कहते हैं- ''मेरी लंगोटी मेरे जीवन का सहज विकास है और यह अपने आप आ गई, न मैंने इसके लिए कोई प्रयास किया, न पहले से सोचा।''

गाँधी का जीवन दर्शन उनके सच्चे संत की भांति जीवन जीने के अनुभवों पर आधारित है, जो कि सदैव प्रेरणा योग्य है तथा शुभ कर्मों में लगे रहने का सन्देश है। गाँधी जन सेवा के हित में इन्द्रिय-निग्रह और अहिंसा को अचूक अस्त्र की भाँति मानते थे। उनका कहना था- ''मेरा इंद्रिय-निग्रह और अहिंसा दोनों मेरे व्यक्तिगत अनुभव की उपज है, जनसेवा के हित में इन्हें अपनाना आवश्यक था। दक्षिण अफ्रीका में गृहस्थ, वकील, समाज-सुधारक या राजनीतिज्ञ के रूप में जो अलग-थलग जीवन मुझे बिताना पड़ा, उसमें अपने कर्त्तव्यों के सम्यक निर्वाह के लिए आवश्यक था मैं अपने जीवन के यौन पक्ष पर कठोर नियंत्रण रखूं और मानवीय सम्बन्धों में, वे चाहे अपने देशवासियों के साथ हों अथवा यूरोपियनों के साथ, अहिंसा और सत्य का दृढ़ता से पालन करूँ।''

गाँधी अनवरत काम और वास्तविक जीवन-आनंद के अपने अनुभव को साझा करते हुए कहते थे- ''अनवरत काम के बीच मेरा जीवन आनंद से परिपूर्ण रहता है। मेरा कल कैसा होगा, इसकी कोई चिन्ता न करने के कारण मैं स्वयं को एक पक्षी के समान मुक्त का अनुभव करता हूँ .... मैं भौतिक शरीर की जरूरतों के खिलाफ निरन्तर ईमानदारी के साथ संघर्षरत हूँ, यही विचार मुझे जीवित रखता है।''

जीवन में अहंकार का त्याग करना बहुत कठिन बात है, किन्तु गाँधी अहंकार के त्याग को बहुत आवश्यक मानते हुए कहते हैं- ''यदि हम धर्म, राजनीति, अर्थशास्त्र आदि से मैं और मेरा निकाल सकें तो हम शीघ्र ही स्वतंत्र हो जाएँगे और पृथ्वी पर स्वर्ग उतार सकेंगे।''

सच्चे संत और ईश्वर के भक्त, निन्दा-स्तुति को समान समझने वाले, सदैव मननशील स्थिर बुद्धि वाले तथा ममता और आसक्ति से रहित होते हैं। गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ऐसे पुरुष के लक्षणों को वर्णित करते हुए अर्जुन से कहते हैं-

तुल्यनिन्दास्तुतिमौंनी सन्तुष्टो येन केन चित्।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्ये प्रियो नरः।।

अर्थात् जो निन्दा-स्तुति को समान समझने वाला, मननशील और जिस किसी प्रकार से भी शरीर का निर्वाह होने में सदा ही संतुष्ट है और रहने के स्थान में ममता और आसक्ति से रहित है- वह स्थिर बुद्धि भक्तिमान पुरुष मुझको प्रिय है।

गाँधीजी इस बात को वास्तव में जीते हैं वे एक अद्‌भुत संत है। स्तुति अभिनन्दन से परेशान गाँधी कहते हैं– ''मैं अविवेकी लोगों द्वारा की जाने वाली आराधना–स्तुति से सचमुच परेशान हो गया हूँ। इसके स्थान पर यदि वे मेरे ऊपर थूकते तो मुझे अपनी असलियत का सही अन्दाजा रहता और तब मुझे अपनी भयंकर भूलों और अन्य मिथ्यानुमानों को स्वीकार करने, अपने कदम पीछे हटाने या कार्यकलापों को पुनर्विन्यास करने की आवश्यकता न पड़ती।''

गाँधी अपने जीवन में सम्मान और अभिनन्दनों को रेखांकित करते हुए कहते हैं–

''मुझे भेंट किए गए 'अभिनन्दन–पत्रों' में से अधिकांश में मेरे लिए ऐसे–ऐसे विशेषणों का प्रयोग किया जाता है जिनके मैं कदापि योग्य नहीं हूँ। इनसे न इनके लेखकों का कुछ भला होता है न मेरा। इनके कारण मुझे अकारण शर्मिन्दा होना पड़ता है, क्योंकि मुझे यह स्वीकार करना पड़ता है कि मैं इन विशेषणों के योग्य नहीं हूँ, जो विशेषण उपयुक्त भी है, उनका अतिशय प्रयोग कर दिया जाता है। ऐसे अभिनन्दनों से मेरे गुणों की शक्ति बढ़ने में कोई मदद नहीं मिलती। बल्कि यदि मैं सावधान न रहूँ तो उनसे मेरा सिर फिर सकता है। अच्छा तो यही है कि आदमी के सुकृत्यों की भी बहुत चर्चा न की जाए। सबसे उपयुक्त प्रशंसा तो उनका अनुकरण ही है।''

गाँधी जीवन के प्रति दृढ़ आस्थावान थे, ईश्वर में उनकी पूर्ण आस्था थी तथा वे कर्त्तव्य पथ पर अडिग थे। वे कर्म पथ पर चलते हुए कहते हैं–

''मैं मार्ग जानता हूँ। वह सीधा और संकरा है। वह तलवार की धार की तरह है। मुझे उस पर चलने में आनन्द आता है। जब मैं उससे फिसल जाता हूँ तो रोता हूँ। ईश्वर का वचन है जो प्रयास करता है वह कभी नष्ट नहीं होता। मुझे इस वचन में पूरी आस्था है। इसलिए अपनी कमजोरी की वजह से मैं चाहे, हजार बार नाकामयाब रहूँ पर मेरी आस्था कभी नहीं डिगेगी। बल्कि यह आशा कायम रहेगी कि जिस दिन यह शरीर पूरी तरह नियंत्रण में आ जाएगा, उस दिन मुझे ईश्वर की आलौकिक आभा के दर्शन हो जाऐंगे और ऐसा होगा जरूर।''

गाँधी इस संदर्भ में अपने अनुभवों को साझा करते हुए लिखते हैं–

''मेरी अंतश्चेतना मुझे एक दिशा में ले जाती है और शरीर विपरीत दिशा की ओर जाना चाहता है। इन दोनों विरोधी दलों के कार्यों से मुक्ति पाई जा सकती है, पर वह मुक्ति कई धीमे और पीड़ाप्रद चरणों से गुजरते हुए ही प्राप्य है।''

गाँधी कर्म मार्ग का त्याग करके मुक्त नहीं होना चाहते। वे पलायन को स्वीकार नहीं करते। वे मानों संत कबीर के मार्ग का अनुसरण करते एक सच्चे साधु थे। गाँधी अनासक्त भाव से कर्म करते हुए तपश्चर्या द्वारा मुक्तिपथ को स्वीकार करते थे, एतदर्थ उनका कथन द्रष्टव्य है–

''मैं यह मुक्ति, कर्म का यंत्रवत् त्याग करके नहीं पा सकता– यह तो अनासक्त भाव से प्रबुद्ध कर्म करके ही पाई जा सकती है। इस संघर्ष में देह को निरन्तर तपाना पड़ता है, तब जाकर अंतश्चेतना पूरी तरह स्वतंत्र हो पाती है।''

गाँधी जी का मानना था कि ईश्वर की अराधना या प्रार्थना होठों से नहीं बल्कि हृदय से की जानी चाहिए। वस्तुतः यह बात सही है क्योंकि बिना निर्मलता के ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती है। रामचरितमानसान्तर्गत भगवान राघवेन्द्र का कथन है कि–

निर्मल मन जन सो मोहि पावा।
मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।

गाँधी भी अन्य संतों के भाँति अपने परित्राता भगवान 'राम' को ही मानते हैं। वस्तुतः यह उचित भी है क्योंकि श्री रामचन्द्र तो भारतीय जनमानस के हृदय में अनन्त काल से समाए हुए हैं। भारतीय लोकजीवन में किसी मर्यादा, परम्परा अथवा सिद्धान्त की प्रतिष्ठा में श्रीराम से उत्तम कोई भी आदर्श भारतीय पौराणिक इतिहास में दृष्टिगत नहीं होता। भगवान श्री रामचन्द्र जी का व्यक्तित्व, जीवन अथवा आदर्शों का अनुकरण और अनुसरण करके कोई भी जन–समान्य विशिष्टजन के रूप में प्रतिस्थापित हो सकता है। निःसन्देह 'राम' भारतीय संस्कृति के मानव रत्न है।

मीरा ने– 'राम धन पायो'

कबीर ने–मन लाग्यो मेरो यार फकीरी में। जो सुख पावो राम भजन में, सो सुख नाहिं अमीरी में।।

सूरदास ने–''सुने री मैंने निर्बल के बल राम, पिछली साख भरूं संतन की, आडे संवारे काम।''

इसी प्रकार **गुरुनानक** ने–'कहे नामक राम भज ले जात अवसर बीत।' सकल मिथ्या यह जानो, भजना राम सही।

तुलसी ने–'श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन हरण भवभय दारुणम् और वाणी व खड्ग दोनों के विशेष रूप से धनी भक्त एवं विलक्षण योद्धा **श्रीगुरुगोविन्दसिंह जी**–'राम परम पवित्र है, रघुवंश के अवतार। दुष्ट दैतन के संहारक, संत प्राण– आधार व अन्य अनेक संतों, कवियों– **नरसिंह मेहता, प्रीतम, धनोभगत, धीराभगत** आदि–आदि ने बहुत ही हृदयग्राही व मधुर शब्दावली में उनकी महिमा का गुणगान किया है। हमारी संस्कृति की जड़ें रामायण जैसे महाकाव्य में सुरक्षित हैं। भारतवर्ष के लिए राम एक ऐसा उद्‌गार है जो यहाँ के सहज जीवन में घुल–मिलकर रच–पच–बस गया है।

राम को अपना परित्राता तथा रामनाम की महत्ता को सन्दर्भित करते हुए गाँधी लिखते हैं–

''यद्यपि मेरे विवेक तथा हृदय ने बहुत पहले ही यह मान लिया था कि ईश्वर का सर्वोच्च गुण और नाम 'सत्य' है, मैं सत्य को 'राम' के नाम से पहचानता हूँ। मेरी परीक्षा की कठिन से कठिन घड़ी में इसी नाम ने मेरी रक्षा की है और आज भी कर रहा है। इसका सम्बन्ध बचपन से हो सकता है या फिर तुलसीदास के प्रति मेरे आकर्षण से। लेकिन यह अकाट्य तथ्य है और इन पंक्तियों को लिखते समय मेरी स्मृति मेरे बचपन के दृश्यों की ओर जाती है जब मैं अपने पैतृक मकान के पास बने रामजी के मन्दिर में नित्य दर्शन के लिए जाता था। मेरा राम तब वहीं रहता था। उसने मुझे अनेक भय और पापों से बचाया। यह मेरे लिए अंधविश्वास की बात नहीं थी। हो सकता है, उस मन्दिर का पुजारी बुरा आदमी हो मुझे उसके बारे में कुछ भी नहीं मालूम। हो सकता है उस मन्दिर में कुकृत्य होते हों। मुझे उनके बारे में कुछ भी नहीं मालूम। इसलिए उनका मुझ पर कोई प्रभाव नहीं है। जो मेरे विषय में सही था, और है, वही करोड़ों हिन्दुओं के विषय में भी है।''

जब मैं बच्चा था तो मेरी परिचारिका ने मुझे सिखाया था कि जब भी मुझे भय लगे या कष्ट हो रहा है तो 'रामनाम' का जप करूँ। बढ़ते ज्ञान और ढलती उम्र के बावजूद यह आज भी मेरी प्रवृत्ति का अंग बना हुआ है। मैं यहाँ तक

कह सकता हूँ कि अगर वस्तुतः होठों पर नहीं तो मेरे हृदय में तो चौबीस घंटे 'रामनाम' रहता है। यही मेरा परित्राता है, मेरा अवलंब है। विश्व के धार्मिक साहित्य में तुलसीकृत रामायण का प्रमुख स्थान है। मुझे महाभारत और यहाँ तक कि वाल्मीकि रामायण ने भी इतना आकर्षित नहीं किया।

गाँधीजी का मानना था कि ईश्वर का नाम उनके नियमों का पालन करना ही सर्वोत्तम आराधना है। गाँधी अपनी अनुभूति को व्यक्त करते हुए लिखते हैं–

''मैं स्वयं बचपन में तुलसीदास का भक्त रहा हूँ। अतः मैंने सदा ईश्वर को 'राम' के नाम से पूजा है। लेकिन मैं जानता हूँ कि ओंकार से आरम्भ करते हुए सभी प्रदेशों, देशों और भाषाओं में विद्यमान ईश्वर की पूरी नामावली से पारायण कर जाने पर भी परिणाम वही निकलेगा। ईश्वर और उसका नियम एक ही है। इसलिए उसके नियम का पालन करना सर्वोत्तम आराधना है।''

गाँधी का यह मानना था कि सर्वशक्तिमान एवं सर्वव्यापी ईश्वर केवल एक है। बस, उसके नाम अनेक हैं और हम उसका स्मरण उस नाम से करते हैं, जिससे हम सर्वाधिक परिचित हैं। वे इसी बात को पुष्ट करते हुए लिखते हैं–

''तत्वतः मेरा राम शाश्वत अजन्मा और अद्वितीय राम है। मैं केवल उसी की आराधना करता हूँ। मैं केवल उसका अवलम्बन चाहता हूँ, वही आपको भी करना चाहिए। वह सब के लिए बराबर है। इसलिए मैं नहीं समझ पाता कि मुसलमान या कोई और धर्मावलम्बी उसका नाम लेने से आपत्ति कैसे कर सकता है? हाँ, वह ईश्वर को राम–नाम से पहचानने के लिए बाध्य नहीं है। वह उसे अल्लाह या ध्वनि के सामंजस्य को बनाए रखने के लिए खुदा कह सकता है।''

मेरे लिए दसरथ पुत्र, सीतापति राम सर्वशक्तिमान तत्व है, जिसका नाम हृदय में धारण करने से सभी मानसिक, नैतिक और भौतिक व्याधियाँ दूर हो जाती हैं।

यह उल्लेख करना भी समीचीन होगा कि गाँधी के विचारों और उनकी चिन्तन–प्रक्रिया को लेकर आज भी बड़ी भ्रांतियाँ दिखायी देती हैं। आलोचकों का मानना है कि, गाँधी एक प्रकार से गूढ़ पहेली है, यह बात अक्सर न केवल उन लोगों के मुँह से सुनने में आती है जो गाँधीजी की उक्तियों और कृत्यों के आलोचक हैं बल्कि वे लोग भी कहते हैं जिनसे उनका काफी निकट का सम्बन्ध रहा है। गाँधीजी ने स्वयं इस बात को स्वीकार किया है कि उनके जीवन में अंतर्विरोध रहे हैं। गाँधी का कहना है कि मैंने कभी सुसंगति की अन्धपूजा नहीं की है। मैं तो सत्य का पुजारी हूँ अतः किसी प्रश्न के सम्बन्ध में किसी निश्चित समय पर मैं जो अनुभव करता हूँ, मुझे वही कहना चाहिए और इस बात की परवाह नहीं करनी चाहिए कि इस बारे में, मैं पहले क्या कह चुका हूँ– जैसे–जैसे मेरी दृष्टि स्पष्ट होती जाती है, दैनिक अभ्यास से मेरे विचार भी अधिकधिक स्पष्ट होते जाने चाहिए।

गाँधीजी को विश्वास है कि उनकी विसंगतियाँ केवल ऊपरी हैं। वे कहते थे मैं समझता हूँ कि मेरी विसंगतियों में भी एक संगति है।

विवेच्य विषयान्तर्गत हम देख रहे हैं कि गाँधी एक अद्भुत, नैतिक बल की प्रतिमूर्ति थे। उनके जीवन का उत्तरार्द्ध जाति, पंथ, दल, यहाँ तक कि देश से भी ऊपर उठकर मानव आत्मा की लोकोत्तर ऊँचाइयों को छू गया था। वे मानो सम्पूर्ण मानवता के लिए समर्पित हो गए थे।

विवेच्य विषय के अंतिम छोर पर जाते–जाते संस्कृत के कवि भवभूति का प्रसिद्ध वचन उद्धृत करना उपयुक्त होगा। **भवभूति** का कथन है–

'लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति'

अर्थात् पुरुषों का मानस कौन जान सकता है।

गाँधीजी ने लोकोत्तर पुरुष होते हुए भी अपना मन परिपूर्णतया लोगों के सामने खोलकर रखा हुआ था। अपनी तरफ से उन्होंने कोई गूढ़ता नहीं रहने दी थी।

निसन्देह गाँधी का जीवन दर्शन अनुभूतियों का दर्शन है। वे एक अद्भुत राष्ट्र भक्त और सच्चे–संत है। उनका जीवन मानो तपा हुआ खरा सोना है, एतदर्थ वे एक विचार की संज्ञा का रूप ले चुके हैं और विचार कभी मरता नहीं अतः गाँधी कल भी थे, आज भी हैं और कल भी होंगे।

पुस्तकालयाध्यक्ष
राजकीय सार्वजनिक जिला पुस्तकालय
श्रीगंगानगर (राज.)–335001
मो: 9413377347

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड

स्काउट स्थापना दिवस पर फ्लेग का विमोचन

❒ सवाई सिंह

7 नवम्बर को भारत स्काउट व गाइड के स्थापना दिवस को स्टीकर दिवस फ्लेग डे के उपलक्ष्य में मनाया गया। सी.ओ. स्काउट श्री सवाईसिंह ने बताया कि जिसके अंतर्गत स्काउट व गाइड के द्वारा आयोजित स्थानीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों की प्रदर्शिनी लगाई गई। स्काउट व गाइड फ्लेग का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर जिला प्रशासन से जिला न्यायाधीश श्री महेन्द्रसिंह सिसोदिया, जिला कलेक्टर श्री आलोक रंजन, एसपी. श्री जय यादव, एडीएम. श्री कृष्णपालसिंह चौहान, सीईओ. श्री दीपेन्द्रसिंह राठौड़, विधायक श्री गणेश घोघरा, सभापति श्री के.के. गुप्ता, नगरपरिषद आयुक्त श्री गणेशलाल खराडी, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी श्री मणिलाल छगन, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक शिक्षा श्री बंशीलाल रोत, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) प्रारम्भिक शिक्षा गोरधनलाल यादव के मार्गदर्शन में किया गया। स्काउट्र व गाइड्र एवं स्काउट व गाइड मौजूद रहे।

सी.ओ. (स्काउट), डूंगरपुर
मो. 9462383670

नई पहल

संवाद कार्यक्रम-''आओ चले विद्यालय की ओर...''

❒ रामस्वरूप मीणा

शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), राजस्थान सरकार की विद्यालयों के प्रति सकारात्मक सोच, राजस्थान में शिक्षा गुणवत्ता बढ़ाने हतु संस्थाप्रधानों एवं शिक्षा अधिकारियों से सीधा संवाद कर उनकी समस्या एवं सुझावों को प्राप्त कर उनमें आत्मविश्वास का संचार करने के लिए माननीय शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), राजस्थान सरकार श्रीमान गोविन्द सिंह डोटासरा द्वारा **शिक्षा मंत्री चले विद्यालय की ओर.....** कार्यक्रम की शुरूआत दिनांक 08 नवम्बर 2019 को राजस्थान की शैक्षणिक नगरी कोटा के यू.आई.टी. ऑडीटोरियम में माँ सरस्वती के माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ की गई।

इस अवसर पर संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, कोटा संभाग द्वारा मंचासीन अतिथि माननीय शिक्षा राज्य मंत्री श्री गोविन्द सिंह जी डोटासरा, माननीया शिक्षा सचिव महोदया, श्रीमान निदेशक महोदय, अन्य सम्भागों से पधारे सम्मानीय संयुक्त निदेशकगण व मुख्य जिला शिक्षा अधिकारीगण, डॉ. रणवीर सिंह जी विशेषाधिकारी, श्री महेन्द्र सिंह जी एवं कोटा संभाग से पधारे समस्त शिक्षाधिकारीगण, पत्रकार बन्धुओं, चारों जिलों से पधारे प्रतिभावान छात्र-छात्राओं व CSR योजना के तहत विद्यालयों में योगदान देने वाले भामाशाहों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करते हुए मंचासीन मुख्य अतिथियों को विश्वास दिलाया कि ''**कोटा संभाग के समस्त शिक्षाधिकारी एवं संस्थाप्रधान मिलकर आपके द्वारा चलाए गए अभियान को पूर्ण रूप से सफल बनाने में अपना शत प्रतिशत योगदान देंगे।**''

डॉ. रणवीरसिंह विशेषाधिकारी शिक्षा विभाग, राजस्थान द्वारा अपनी जन्मस्थली हाड़ौती परिक्षेत्र की होने के नाते शैक्षणिक नगरी कोटा में उपस्थित मुख्य अतिथियों एवं समस्त शिक्षाविदों का स्वागत एवं अभिनन्दन करते हुए कहा कि माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने इस अभियान के माध्यम से एक चुनौतीपूर्ण कार्यक्रम दिया है जिसके क्रियान्वयन के लिए माननीय शिक्षा मंत्री महोदय को विश्वास दिलाया कि यह हाड़ौती क्षेत्र माननीय के अभियान को सफल बनाते हुए गुणवत्ता युक्त शिक्षा के क्षेत्र में देश में राज्य को द्वितीय से प्रथम स्थान पर लाने के लिए परिश्रम की पराकाष्ठा से पीछे नहीं हटेगा।

श्री अखिलेश कुमार जैन अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, कोटा द्वारा कोटा संभाग की गतिविधियों के बारे में पीपीटी के माध्यम से बताया गया।

श्रीमान् नथमल डिडेल निदेशक महोदय, माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आज का दिन शैक्षणिक जगत में यादगार बनेगा। संस्था प्रधानों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि विभाग की योजनाओं व अपेक्षाओं को संस्था प्रधान अपने स्तर पर प्लान बनाए कि हमारा विद्यालय कैसे श्रेष्ठ बने। आप स्वयं अपग्रेड होंगे तब ही आपका विद्यालय श्रेष्ठ बनेगा। आज विद्यालयों में छात्रों से ज्यादा बालिकाओं का नामांकन बढ़ा है। हमें राज्य सरकार द्वारा दी जा रही योजनाओं को अभिभावकों तक पहुँचाकर अगले सत्र में विद्यालयों का 20 प्रतिशत से भी ज्यादा नामांकन बढ़ाना है। विभाग में किए जा रहे नवाचारों के प्रति सभी संस्थाप्रधान सजग रहकर निर्देशानुसार क्रियान्विति करें। ''**विद्यालयों को सेन्टर ऑफ एक्सीलेंस बनाने की दिशा में कार्य करना होगा।**'' शैक्षणिक सत्र के ढाई-तीन महिने बचे हैं, हमें बोर्ड परीक्षा परिणामों को बढ़ाना है, इसके लिए संभाग के दूर दराज के विद्यालयों की कमियां देखें व समाधान करें। बच्चों में रुचि पैदा करें तो वे आगे जा सकते हैं। आप अपने विद्यालय के बोर्ड परीक्षा परिणाम में 10 प्रतिशत की वृद्धि का प्रयास करें। हम सब को मिलकर राजस्थान को शिक्षा के क्षेत्र में नम्बर एक पर लाना है।

श्रीमती मंजू राजपाल माननीया शिक्षा सचिव, राजस्थान सरकार ने अपने जीवन के अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि उनका स्वयं का अध्ययन राजकीय विद्यालय में हुआ है। उनके अनुसार ''**विद्यालय की प्रगति में संस्थाप्रधान की भूमिका सबसे महत्त्वपूर्ण होती है।**'' शिक्षक व संस्थाप्रधानों के लिए परिणाम पर फोकस करने के साथ-साथ अभिभावकों की संतुष्टि सबसे महत्त्वपूर्ण है। NAS की रैंकिंग में राजस्थान प्रदेश को 24वें नम्बर से दूसरे नम्बर पर लाने के लिए सभी को बधाई देते हुए राज्य को प्रथम स्थान पर लाने हेतु प्रेरित किया। इसके अतिरिक्त माननीय शिक्षा मंत्री जी का यह अभियान पूरे राज्य में चलेगा, हम विद्यालयों को आदर्श बनाएँगें। संस्थाप्रधानों का ध्येय विद्यालय के शत-प्रतिशत परिणामों पर होना चाहिए। इस हेतु बच्चों की कमियों को चिह्नित किया जावे व उनके गेप्स को पूरा करने के लिए उनको अतिरिक्त शिक्षण सामग्री की व्यवस्था की जावे। संस्थाप्रधान अपनी टीम को साथ लेकर कमजोर छात्रों को चिह्नित कर उनकी क्या मदद की जानी है? उसकी समीक्षा कर योजनाबद्ध रूप से उनके लिए उपचारात्मक शिक्षण करवाएँ। इसके अतिरिक्त ऐसे प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को भी चिह्नित किया जावे जो बोर्ड परीक्षा में वरीयता/उच्च स्थान पा सकते हैं। ऐसे विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षण की व्यस्क्था करवाएँ। माननीय शिक्षा मंत्री जी ने हमें जो विजन दिया है उसे आप सभी को अपनी लगन और मेहनत से साकार करना है। तब ही राजस्थान को नम्बर एक पर लाकर माननीय मंत्री जी के उद्देश्य को पूरा कर पाएँगे।

श्रीमान् जिला कलक्टर महोदय, कोटा श्री ओम कसेरा द्वारा माननीय मंत्री महोदय एवं मंचासीन शिक्षा सचिव महोदया एवं निदेशक महोदय का स्वागत करते हुए कहा कि माननीय मंत्री जी का विजन बहुत सकारात्मक है और उनके कार्य करने की स्पीड बहुत तेज है। इसमें आप सभी को मेहनत व लगन के साथ समय पर

कार्य करने होंगे। जिला कलक्टर होने के नाते उन्होंने शिक्षा मंत्री जी को विश्वास दिलाया कि विद्यालयों के विकास में भरसक प्रयत्न करूंगा।

इस दौरान संभाग के प्रत्येक जिले के राजकीय विद्यालयों से कक्षा-8, 10 व 12 के प्रत्येक संकाय में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले 20 प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं, 13 भामाशाहों एवं श्री रमेशचन्द जी नागर व.अ. एवं कार्यवाहक प्रधानाध्यापक रामावि खजूरी ओथपुर (कोटा) द्वारा विद्यालय को 76 लाख रुपये व 09 बीघा जमीन के साथ एक वर्ष का वेतन दान किए जाने पर मंच पर माननीय शिक्षा मंत्री महोदय व माननीय अतिथियों द्वारा माल्यार्पण व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

माननीय शिक्षा राज्य मंत्री श्री गोविन्दसिंह डोटासरा ने अपने उद्‌बोधन में बड़ी सहजता एवं विनम्रता से शिक्षा अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि मेरे स्वयं से लेकर इस समय मंचासीन शिक्षा विभाग के उच्च पदस्थ अधिकारी शिक्षा सचिव, निदेशक एवं परियोजना निदेशक तक सभी राजकीय विद्यालयों के प्रोडक्ट हैं। यदि हमारे गुरु हमें इस लायक नहीं बनाते तो हम इस मुकाम पर नहीं पहुँच पाते। हम उन भामाशाहों को भी सेल्यूट करते हैं जिन्होंने विद्यालयों के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

माननीय शिक्षा राज्य मंत्री महोदय ने शिक्षा विभाग में शिक्षक एवं शिक्षा के हित में सरकार द्वारा किए गए प्रयासों को रेखांकित करते हुए कहा कि **''वर्तमान सरकार द्वारा वार्षिक कैलेण्डर में विद्यालय समय, शिक्षक प्रशिक्षण को गैर आवासीय एवं समय को तर्कसंगत कर शिक्षकों की अधिकांश समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया गया है। अब शिक्षको/शिक्षा अधिकारियों का दायित्व है कि वे सामुदायिक बाल सभाओं को प्रभावी बनावें। सरकारी विद्यालयों में वार्षिकोत्सव को अनिवार्यतः मनाया जावे, यूथ क्लब को जोड़ते हुए महापुरुषों की जीवनी से विद्यार्थियों को अवगत कराया जावे।''**

माननीय शिक्षा मंत्री ने इस अभियान का नाम बदलकर **'आओ चले विद्यालय की ओर'** की घोषणा करते हुए कहा कि अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता है। जब तक हम सब मिलकर विद्यालय की ओर नहीं चलेंगे और विद्यालय के बारे में नहीं सोचेंगे, उसमें अपना योगदान, विजन व मेहनत नहीं देंगे, तब तक कोई सफल नहीं होगा। आप सभी को इसमें एक साथ मिलकर चलना होगा तब ही स्वराज आएगा व सबको समानता का अधिकार मिलेगा। हम जो भी बने हैं आपके सहयोग के कारण हैं। हमें समाज के नन्हे-मुन्ने बच्चों को बहुत कुछ देना है। मैं आपसे अपेक्षा करता हूँ कि हम सब मिलकर ऐसा कर सकते हैं जिससे हमारा आने वाला कल बहुत सुन्दर व सर्वश्रेष्ठ होगा। हम मेहनत करके बच्चों के बेहतर भविष्य का निर्माण करके ही पूरे हिन्दुस्तान में क्वालिटी एज्यूकेशन में राज्य को नम्बर एक बनाएँगे। सरकार की ओर से शिक्षकों की माँग भी पूरी की जा रही है, ऐसे में शिक्षकों का दायित्व है कि सरकार की योजनाओं को मूर्त रूप प्रदान कर साकार करें।

कोटा संभाग के 96 विद्यालय ऐसे हैं जिनका बोर्ड परीक्षा परिणाम 50 प्रतिशत से कम रहा है। हाड़ौती में यह बात गले नहीं उतरती। प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में कई नवाचार किए जा रहे हैं। जिसके परिणाम भी अच्छे आ रहे हैं। कोटा एज्यूकेशन हब है। यहाँ से डॉक्टर, इंजीनियर व आईआईटीयन बन रहे हैं। कोचिंग संस्थानों को नियंत्रित करने के लिए सरकार कानून बनाकर लागू करेगी साथ ही एक कमेटी बनाई जाएगी जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की स्क्रूटनी व काउंसलिंग हो सकेगी।

मंच से ही माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने संगीत स्कूल रामपुरा, कोटा के पद भरने की घोषणा की।

माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने अपनी बात रखने के बाद शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालय के सर्वांगीण विकास एवं राजस्थान राज्य को नम्बर एक कैसे बनाया जा सकता है के लिए संवाद कर संस्थाप्रधानों से सुझाव आमंत्रित किए-

इस पर निम्नांकित संस्थाप्रधानों की ओर से निम्न समस्या/सुझाव आए-

1. प्रधानाचार्य राउमावि, सुन्दरपुरा जिला बून्दी द्वारा बताया गया कि विद्यालय में कम्प्यूटर लैब है परन्तु कम्प्यूटर ऑपरेटर के अभाव में बच्चों को कम्प्यूटर सम्बन्धी जानकारी नहीं मिल रही है। इसलिए कम्प्यूटर ऑपरेटर का पद स्वीकृत किया जावे।

2. प्रधानाचार्य राउमावि, चड़ी जिला बून्दी द्वारा बताया कि शाला सुविधा की राशि जुलाई माह में ही आवंटित की जावे ताकि उसका उपयोग समय पर किया जा सके। स्थानान्तरण बीच सत्र में नहीं किए जावें।

3. प्रधानाचार्य राउमावि, गोठड़ा जिला बून्दी द्वारा सुझाव दिया गया कि समय विभाग चक्र में प्रत्येक दिन खेल का कालांश अनिवार्य किया जावे। बच्चे खेलेंगे तो स्वस्थ रहेंगे।

4. प्रधानाचार्य राबाउमावि, लाखेरी जिला बून्दी द्वारा बताया गया कि विभाग द्वारा जो बजट आवंटित किया जाता है वह बिजली के बिलों में ही खर्च हो जाता है। इसलिए विद्यालयों में सोलर लाईट लगाई जावे।

5. प्रधानाचार्य राउमावि, मण्डाना जिला कोटा द्वारा बताया कि ज्ञान संकल्प पोर्टल का कार्य मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी स्तर पर किया जावे।

इसके अतिरिक्त प्रधानाचार्य राउमावि खजूरी आवां, लाखसनीजा जिला कोटा, राउमावि माणकपुर व चौमहला जिला झालावाड़ व राउमावि कलमण्डा व बिजौरा जिला बारां द्वारा संवाद किया गया।

इस पर माननीय शिक्षा मंत्री महोदय द्वारा निर्देशित किया गया कि जिन विद्यालयों में शारीरिक शिक्षक कार्यरत हैं उस विद्यालय के छात्र-छात्राएँ जिलास्तरीय खेल प्रतियोगिताओं में अनिवार्यतः भाग लेवें। NMMS स्कीम के अन्तर्गत संस्थाप्रधानों द्वारा 25 प्रतिशत ही फार्म भरवाए गए हैं शेष 75 प्रतिशत लक्ष्य पूर्ण करने हेतु फार्म भरवाए जाने के निर्देश भी दिए। **''प्रशिक्षण में शिक्षकों की माँगों के अनुरूप छूट सरकार द्वारा दे दी गई है तो अब किसी भी जिले में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कोई भी शिक्षक अनुपस्थित नहीं रहना चाहिए।''**

अन्त में मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कोटा श्री हजारी लाल शिवहरे ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। तत्पश्चात् राष्ट्रगान के साथ शैक्षणिक संवाद् कार्यक्रम का समापन किया गया।

संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा)
कोटा संभाग, कोटा
मो. 9799428325

गाँधी 150वीं जयन्ती विशेष

महात्मा गाँधी : युग पुरुष

❒ पवन भँवरिया

4 फरवरी 1916, स्थान बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, भारतीयों के लिए बड़ा दिन, क्योंकि भारतीय धन व भारतीय प्रयासों से बने एक राष्ट्रवादी विश्वविद्यालय की स्थापना हो रही थी। इस समारोह में देश के नामचीन लोग उपस्थित थे, चारों ओर भव्यता का वातावरण था और मंच पर एक कम चर्चित वक्ता उपस्थित था-मोहनदास करमचंद गाँधी।

पर जब इस वक्ता ने बोलना शुरू किया तो हर कोई असहज हो गया। (इतने असहज कि एनी बेसेंट तो उनके भाषण को रोकने हेतु खड़ी हो गई थी।) अपने भाषण में गाँधी ने इस भव्य समारोह से गायब उन करोड़ों गरीब भारतीयों का उल्लेख किया, जिनके बिना भारत की कल्पना नहीं की जा सकती थी, गाँधी के शब्दों में-'मैं शानदार रूप से अलंकृत अभिजात्यों की तुलना लाखों गरीबों से करता हूँ और मैं अपने को इन अभिजात्यों से कहते हुए पाता हूँ कि भारत का उद्धार तब तक सम्भव नहीं हैं, जब तक कि आप अपने गहनों को उतार न डालें और भारतवासियों की भलाई के लिए एक ट्रस्ट में न रख दें।''

गाँधी यही नहीं रूके, आगे उन्होंने कहा-''हमारे लिए स्वशासन का तब तक कोई अभिप्राय नहीं है, जब तक हम किसानों से उनके श्रम का लगभग सम्पूर्ण लाभ स्वयं अथवा अन्य लोगों को ले लेने की अनुमति देते रहेंगे। हमारी मुक्ति केवल किसानों के माध्यम से ही हो सकती है।''

गाँधीजी के इस भाषण ने उन्हें रातों-रात भारतीय जनमानस में न केवल प्रसिद्ध कर दिया, वरन् इसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की दशा व दिशा को भी हमेशा-हमेशा के लिए बदल लिया। शिक्षित भारतीयों द्वारा संचालित राष्ट्रीय आंदोलन को गाँधीजी जन-जन तक ले गए। पर केवल आमजन को राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्य धारा में लाने मात्र से गाँधीजी युग पुरुष नहीं बन गए थे, बल्कि हिंसा के विरुद्ध अहिंसा व सत्याग्रह नामक दो हथियारों की ईजाद ने उन्हें सामान्य मानव से महामानव बना दिया। घृणा

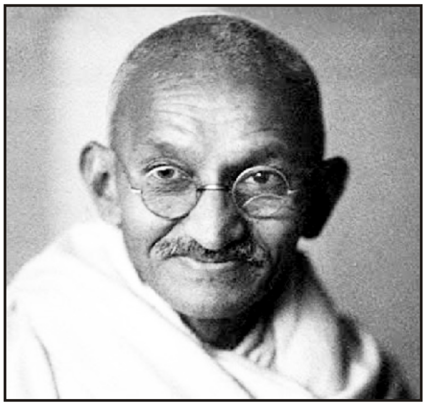

पाप से करो, पापी से नहीं और प्रत्येक पापी व्यक्ति के हृदय में भी करुणा का अंश होता है, ऐसे कालजयी विचार थे, जिनके दम पर उन्होंने तात्कालिक विश्व की सबसे ताकतवर सत्ता यानी अंग्रेजों को भी हार मानने पर मजबूर कर दिया था।

कथनी व करनी में अंतर, सबसे बड़ा कारण होता है, किसी भी व्यक्ति के विचारों को खोखला मानने का, पर गाँधी जी का सम्पूर्ण जीवन कथनी व करनी में समानता के लिए जाना जाता है। वंचितों के अधिकार की लड़ाई हो या स्वच्छता के प्रति आग्रह, कहीं भी हम उनकी कथनी व करनी में अंतर नहीं पाते। जब गाँधीजी आमजन को खादी पहनने हेतु प्रेरित कर रहे थे, तो एक व्यक्ति का प्रश्न था-खादी इतनी महँगी है, पहने कैसे। और गाँधीजी का जवाब कम-कपड़े पहनने पर यह नहीं कि केवल जवाब देकर रह गए, इस वाक्य को खुद के जीवन में भी उतारा और इसके बाद ताउम्र खादी की एक लंगोटी धारण की, क्या आज हम ऐसी दृढ़ता व कथनी-करनी में समानता पा सकते हैं?

2 अक्टूबर 1869 ई. को जन्मे गाँधी जी आखिर एक युग पुरुष बने कैसे? उनकी आत्मकथा जिसके लेखन में उन्होंने बहुत साहस के साथ अपने जीवन के हर पक्ष को लिखा है, के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि गाँधी कैसे प्रारम्भ में एक साधारण व्यक्ति थे। अध्ययन के लिए जब गाँधी इंग्लैण्ड गए तो वहाँ पर लच्छेदार बातें करना, डाँस व पियानो बजाना सीखना, स्टाइलिश वस्त्र पहनना अर्थात् वे तमाम कार्य करना जो एक साधारण विद्यार्थी करना चाहता है, किए।

पर गाँधीजी का जीवन बदला 1893 ई. में उनकी दक्षिण अफ्रीका की यात्रा से, 9 जून, 1893 ई. को जब गाँधी जी डरबन से प्रीटोरिया की यात्रा पहले दर्जे के डिब्बे में कर रहे थे, तो उन्हें केवल नस्लीय भेदभाव के कारण (कि एक काला आदमी गोरों के साथ पहले दर्जे में यात्रा कैसे कर सकता है?) मेरित्सबर्ग के रेल्वे स्टेशन पर रात्रि को ठंड में धक्का देकर नीचे उतार दिया गया, जबकि उनके पास पहले दर्जे का टिकट था। इस घटना ने गाँधीजी को बदल दिया, उनके खुद के शब्दों में-

''या तो मुझे अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहिए या लौट जाना चाहिए, मुझे जो कष्ट सहना पड़ा है, सो तो ऊपरी कष्ट है। यह तो गहराई तक पैठे हुए महारोग का लक्षण है। यह महारोग है-रंग भेद। यदि मुझमें इस गहरे रोग को मिटाने की शक्ति हो तो उस शक्ति का उपयोग मुझे करना चाहिए।''

अपने अपमान को सहने के बजाय उन्होंने अपमान के कारण को ही खत्म करने का निश्चय किया और इस रात ने गाँधी जी की जिदंगी को ही बदल दिया। यह दृढ़ निश्चय और इसे प्राप्त करने हेतु मन की शक्ति का प्रयोग वाला रास्ता ही गाँधीजी को एक युग पुरुष बना देता है।

आज अपनी मृत्यु के इतनों वर्षों बाद भी उनकी सम्पूर्ण दुनिया में लोकप्रियता, उनके दिखाए मार्ग से सफलता प्राप्त करने वाले नेल्सन मंडेला, मार्टिन लूथर किंग के कथन, हम सबकों यह बताते हैं कि दृढ़ निश्चयी, सत्य की राह का अथक राही, आमजन की भावनाओं का ज्ञाता महात्मा गाँधी आज भी दुनिया में भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व का सबसे सर्वमान्य चेहरा और युग पुरुष है।

सहायक आचार्य (इतिहास)
राजकीय महाविद्यालय, लक्ष्मणगढ़ (सीकर)
मो. 8890955279

शैक्षिक चिन्तन

औपचारिक शिक्षा की बुनियाद-गुणवत्तापूर्ण पूर्व प्राथमिक शिक्षा

❒ डॉ. डी.डी. गौतम

शिक्षा खुशहाली व सभ्यता का प्रतीक होती है। शिक्षा वह कुंजी है, जो व्यक्ति/मनुष्य को आदिम प्रवृत्तियों से मानवीय प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख करती है। देश की सभ्य संस्कृति नैतिकता, जीवन शैली, मानवीय मूल्य, परम्परा, राष्ट्रनिर्माण, आदर्श, गौरव एवं विकास इत्यादि शिक्षा की बुनियाद पर निर्भर है। अतः शिक्षा को मनुष्य का तीसरा नेत्र भी कहा जा सकता है। शिक्षा का मूल उद्देश्य शारीरिक, मानसिक, मानवीय मूल्यों एवं भावनात्मक पक्षों का विकास करना है। शिक्षा, सभ्य समाज के लिए पथ प्रदर्शक के रूप में होती है। इसे समाज का आईना भी कहा जा सकता है।

रविन्द्रनाथ ठाकुर के अनुसार –'अपने बच्चों को नीले आकाश के नीचे जी भरकर शाँति से उछलने कूदने दो, बच्चों के आनन्द में अकारण खलल न डालो, बच्चे अपने परिवार व समाज से ही सीखकर प्रारम्भिक विकास करते हैं।'

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के अनुसार– 'शिक्षा का लक्ष्य, विद्यार्थी को आदर्श नागरिक, देशभक्त और परिवार समाज तथा राष्ट्र के लिए समर्पित व्यक्ति बनाना है।'

शिक्षा दर्शन में सामान्यतः शिक्षा के दो स्वरूप निहित है जिनमें एक तो अनौपचारिक तथा दूसरा औपचारिक शिक्षा को सम्मिलित किया गया है। औपचारिक शिक्षा की बुनियाद/प्रथम सीढ़ी **'पूर्व प्राथमिक शिक्षा'** ही होती है जो की 0 से 5 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के लिए दी जाती है। इसमें 0-3 आयु वर्ग में बालक अपने परिवेश में अन्तःक्रिया करते हुए विकसित होता है जबकि 3-5 अथवा 3-6 आयुवर्ग में बालक परिवेश के साथ-साथ पूर्व प्राथमिक शैक्षिक संस्थाओं के माध्यम से बाल्यावस्था अनुरूप अधिगम करते हैं जिसे पूर्व प्राथमिक शिक्षा की संज्ञा दी जाती है। इसीलिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा को First step towards entering in the world of formal Education कहा गया है। अतः बुनियादी शिक्षा के रूप में 0 से 5 आयु वर्ग के बच्चों को औपचारिक शिक्षा का बोझ न देकर, उन्हें व्यवहारिक ज्ञान आधारित तालीम दी जाए। जिससे बच्चों में माँसपेशीय, भाषात्मक, सामाजिक, संवेगात्मक और रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास सुनिश्चित हो सके। इसे Early Child Development कहते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य :–

- सब पढ़े, सब बढ़े के भाव निहित हो।
- अज्ञान से ज्ञान की ओर हो।
- अंधेरे से प्रकाश की ओर हो।
- असत्य से सत्य की ओर हो।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के द्वारा बच्चे To make confident की ओर अग्रसर होते हैं। इसे बुनियादी शिक्षा अथवा School Raddinesh Programme भी कहा गया है। इससे बच्चों में सामाजिक, भावनात्मक एवं सांस्कृतिक कौशल का विकास होता है। इस आयु में बच्चों के मानसिक एवं शारीरिक विकास में सहज रूप से सन्तुलन स्थापित किया जा सकता है। इससे बालक की आधारभूत प्रवृत्तियों का विकास भली-भाँति हो सकेगा। शिक्षा का मूल उद्देश्य, भाषात्मक, शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक पक्षों का विकास करना है। जिससे बाल्यावस्था के संस्कार, सारथी बनकर भावी पीढ़ी का निर्माण कर सके। इस हेतु यदि शिक्षा को बुनियाद से ही सुदृढ़ किया जाए तो शिक्षा का ढाँचा और अधिक मजबूत हो सकता है। अतः वर्तमान समय में आवश्यकता इस बात की है कि माता-पिता, अभिभावक, समाज, शिक्षक वर्ग व शासन व्यवस्था के सामूहिक प्रयासों से ऐसा वातावरण का निर्माण करें, जिससे अंकुरण से पौधा एवं पौधे से फलदायी वृक्ष तैयार करने का सहज एवं सुदृढ़ मार्ग प्रशस्त हो सके।

बुनियाद शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बच्चों में नवीन सोच, मन में पवित्रता, राष्ट्र प्रेम, मस्तिष्क में प्रकाश, शरीर में स्फूर्ति तथा दूरदर्शिता की ओर बढ़े, तभी सुनहरे भविष्य की कल्पना की जा सकती है। बच्चों में संस्कारों से ही भावी जीवन की नींव स्थापित की जा सकती है। अतः औपचारिक शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए निम्नांकित उद्देश्य समाहित किए जा सकते हैं-

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य :–

- औपचारिक शिक्षा एवं विद्यालय गमन के वातावरण का पूर्वाभ्यास का विकास करना।
- पारिवारिक शिक्षा से औपचारिक शिक्षा में अक्षर ज्ञान एवं भाषाई ज्ञान का समन्वय बनाना।
- Learning by doing द्वारा रचनात्मक विकास के लिए सीखने के कौशल विकसित करना।
- बच्चों को रुचि अनुरूप सीखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध करवाते हुए ज्ञान, योग्यता एवं अन्तःशक्ति का निर्माण करना।
- सूक्ष्म व स्थूल माँसपेशियों के विकास के लिए खेल के अवसर उपलब्ध करवाना।
- बच्चों में विचारों को अभिव्यक्ति करने के साथ-साथ कल्पना, तार्किक एवं चिन्तन शक्ति का विकास करना।
- विशेष आवश्यकता वाले/दिव्यांग बच्चों को औपचारिक शिक्षा की मुख्य धारा में सम्मिलित करने के लिए तैयार करना।
- संस्कार, नैतिकता, परोपकार एवं व्यक्तित्व विकास और पारस्परिक सहभागिता के गुणों का विकास करना।
- बच्चों में असामान्य व्यवहार/कमजोरी की पहचान कर निदान के प्रयास करना।
- बच्चों में अनुशासन सदाशयता, शिष्टाचार, नैतिकता, उदारता, श्रम निष्ठा, सहिष्णुता और सम्मान भाव के गुणों का विकास करना।
- पर्यावरणीय स्वच्छता की आदतों का निर्माण करना।

जीवन में किताबी ज्ञान के द्वारा ही सीखना सुनिश्चित नहीं होता बल्कि अपने परिवेश में बड़ों/साथियों से विचार-विमर्श करते हुए प्रश्न पुछते हैं, कल्पना करते हैं, अनुमान लगाते हैं,

तार्किक चिन्तन करते हैं, नतीजे निकालते हैं और इस तरह स्वयं के अनुभवों से ज्ञान को गढ़ते हैं। इसी को **'Constrution of Knowledge'** कहते हैं। इस सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बच्चे सक्रिय सहभागी के रूप में भागीदारी निभाते हैं। अतः पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत बच्चों को इस प्रकार वातावरण/माहौल मिलना चाहिए, जिससे उन्हें स्वतंत्र रूप से अनुभवों के द्वारा सीखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध हो सकें। इस प्रक्रिया को **Learning by experience for excellence** कहते हैं। बच्चे अपने परिवेश, परिवार व समाज के अनुभवों तथा व्यावहारिक ज्ञान से स्वयं ही सीखते हैं साथ ही स्वतः ज्ञान का सृजन करते हैं। बुनियादी स्तर पर उपलब्ध भौतिक संसाधनों का स्वतंत्र रूप से उपयोग करने से बच्चों में स्वयं करके सीखने (Learing by doing) की प्रवृत्ति विकसित होती है। जिसे औपचारिक शिक्षा के लिए तैयारी अथवा **'Readness for schooling'** कहा जा सकता है।

वर्तमान में सामान्यतया परिवार, परिवेश एवं समाज की प्रतिस्पर्धा में माता-पिता अति उत्साही महत्त्वाकांक्षा के कारण अल्पायु में ही बच्चे पर औपचारिक शिक्षा का बोझ डाल देते हैं जो बच्चे की **Biological development** में बाधक सिद्ध हो सकती है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत बच्चों के ज्ञान व समझ को विकसित करने के उद्देश्य से विषयवस्तु को बच्चों के शारीरिक विकास, क्षमता, रुचि, रचनात्मकता के आधार पर विकसित किया जाए जिससे सीखना, सरल व सहज होने के साथ व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित हो। अतः औपचारिक शिक्षा का ढाँचा सुदृढ़ करने के लिए, गुणवत्तापूर्ण पूर्व प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्यों के सम्प्राप्ति के लिए संस्थागत संसाधनों के विकास को सर्वोपरि प्राथमिकता दी जाए। इस हेतु बच्चों के भाषात्मक, शारीरिक, मानसिक, व्यावहारिक, सामाजिक एवं भावनात्मक शिक्षा के मूल्यों के विकास के लिए वर्तमान समय में विभिन्न संस्थाएं सक्रिय रूप से संचालित हैं

- Nursery School
- Play School
- Kinder Garden
- Montessori
- Shishu Pathsala
- Aaganwadi

पूर्व प्राथमिक शिक्षा हेतु सामग्री निर्माण की प्राथमिकताएँ :-

बच्चों के सर्वांगीण विकास एवं बुनियाद मजबूत करने के उद्देश्य से संचालित संस्थाओं द्वारा इस प्रकार की सामग्री का विकास किया जाए, जो पाठ्यक्रम आधारित ना होकर बाल केन्द्रित के साथ-साथ 'करके सीखने' की गतिविधियों पर आधारित हो। जिसमें शैशवकालीन उद्दीपन के तत्व शामिल हो, जिससे बच्चे को प्रेरणादायक खेल का वातावरण मिल सके। सामग्री विकास में बच्चों की आयु अनुरूप क्षमताओं एवं समझ को प्राथमिकता दी जाए जिससे बच्चों में बौद्धिक, भाषायी, सामाजिक, संवेगात्मक तथा शारीरिक क्षमताओं का विकास हो सके। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए निरन्तर नवाचारों को समाहित करते हुए समग्र रूप से व्यक्तित्व विकास की अवधारणा के आधार पर गतिविधि संचालित की जानी चाहिए। अतः सामग्री विकास में आयु अनुरूप, विशेषताओं एवं आयामों पर आधारित विषय वस्तु का समावेश किया जाए, जिससे बच्चों को प्रार्थना, व्यायाम, रचनात्मक कार्य, कला एवं संगीत, खेलकूद के साथ-साथ ज्ञान का बोध करवाया जा सके।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लाभ :-

1. बच्चों को घर के माहौल से विद्यालयी वातावरण के लिए तैयार करना।
2. बच्चों के मन से विद्यालय का भय दूर करना।
3. विद्यालय से पलायन/Dropout की समस्या का समाधान।
4. CWSN की पहचान होने से उचित उपचार/शैक्षिक प्रबंधन करना आसान।
5. कुपोषण/रक्ताल्पता/अरुचि आदि की पहचान व उपचार संभव।
6. मानवीय मूल्यों का विकास बाल्यावस्था से ही हो सकेगा।
7. सर्वांगीण विकास की अवधारणा को मजबूत आधारशिला मिलेगी।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा संचालन में चुनौतियाँ:-

1. पूर्व प्राथमिक शिक्षण संस्थाओं की पर्याप्त संख्या का अभाव।
2. अभिभावकों द्वारा कम उम्र में बच्चों का औपचारिक शिक्षा में प्रवेश की प्रतिस्पर्धा।
3. कक्षा-1 में नामांकन बढ़ाने के लक्ष्य।
4. संस्थाओं में N.T.T. योग्यताधारी शिक्षकों की पर्याप्त उपलब्धता का अभाव।
5. औपचारिक शिक्षा हेतु ECE (Early Child Education) की सुदृढ़ कार्ययोजना के समुचित क्रियान्वयन का अभाव।
6. पूर्व प्राथमिक संस्थाओं में पर्याप्त मानवीय एवं भौतिक संसाधनों की उपलब्धता का अभाव।
7. समुदाय में सजगता एवं सकारात्मक/सक्रिय सहभागिता की चेतना का अभाव।
8. शासकीय विभागों में आपसी समन्वय द्वारा समेकित प्रयासों का अभाव इत्यादि।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा हेतु राज्य में संचालित शासकीय विभाग-

- स्कूल शिक्षा विभाग
- महिला एवं बाल विकास विभाग (ICDS)
- पंचायतीराज विभाग
- चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग

राज्य में संचालित परियोजना -

- प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा एवं देखरेख (ECCE)

मानव के मस्तिष्क का एक बहुत बड़ा भाग जन्म के बाद परिवेश के साथ अन्तःक्रिया करने के परिणामस्वरूप अपने आप आकार ले लेता है। बच्चे के विकास पर आनुवांशिकता के साथ-साथ परिवेशीय अनुभवों का बहुत प्रभाव पड़ता है। इसमें हम सभी (अभिभावक, अध्यापक, समाज और सरकार) की यह साझी जिम्मेदारी बनती है कि बच्चों के लिए उत्तम बचपन सुनिश्चित करें। यदि हम ऐसा करने में सफल हुए, तो औपचारिक शिक्षा की बुनियाद खुद-ब-खुद मजबूत होती चली जाएगी और देश अपने सुदृढ़, संस्कारी, सुशिक्षित नागरिकों के बल पर उन्नति की ओर अग्रसर होगा।

शिक्षा विद्यार्थी का गणवेश है!

शिक्षा उज्ज्वल भविष्य की दीक्षा है!

अति. जिला शिक्षा अधिकारी
कार्यालय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, भरतपुर संभाग, भरतपुर
मो: 9413671118

शिक्षा तकनीकी

प्रारंभिक शिक्षा में आई.सी.टी.

❒ हुकम चन्द चौधरी

वर्तमान समय तकनीक के नवीनतम आविष्कारों व प्रयोगों का है। जीवन का कोई भी पहलू तकनीक से अछुता नहीं रहा है, तकनीक का ही एक रूप आईसीटी है जो शिक्षा के क्षेत्र में भी शैक्षिक परिदृश्य को रोचक व सहज बनाने के लिए काम कर रहा है। शिक्षक व छात्र आईसीटी का प्रयोग कर नवाचारों को अपना भी रहें है और अपने शैक्षिक स्तर को उन्नत भी बना रहें है। आईसीटी का प्रयोग विषय की आवश्यकता के अनुरूप सभी विषयों व सभी स्तर के छात्रों के लिए किया जा रहा है। प्रारंभिक शिक्षा में शिक्षण अधिगम में आईसीटी का प्रयोग विषय की गंभीरता को दूर कर उसे रोचकता तो प्रदान करता ही है साथ ही बच्चों के पढ़ाई के प्रति मानसिक बोझ को कम करने का काम भी करता है। यहाँ आईसीटी से अभिप्राय उन सभी संसाधनों से है जो तकनीक के माध्यम से शिक्षण अधिगम को प्रभावशाली बनाने में सहायक है। जैसे कम्प्यूटर, टेबलेट, मोबाइल, प्रोजेक्टर, टीवी, रेडियों, डिजीटल लाईब्रेरी आदि। आईसीटी का प्रयोग विषय की कठिनाईयों को समझते हुए उनका प्रस्तुतीकरण छात्र के समक्ष सहज और सरल बना देता है। जो छात्रों के मानसिक व बौद्धिक स्तर की उन्नति के लिए अत्यावश्यक है।

Keyword : ICT, Innovation, Innovative, ICT in Education, Digital Classroom, E-Content

प्रस्तावना : एक शिक्षक द्वारा परम्परागत शिक्षण के साथ नवाचारों को अपनाना भी बेहद जरूरी है। शिक्षण में आईसीटी के प्रयोग ने अध्यापकों के शिक्षण कौशल व उनके विषय के ज्ञान को निखारा है। एक शिक्षक शिक्षण कराते समय हमेशा अपनी आगामी पीढ़ी को पढ़ा रहा होता है। समय के साथ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में तकनीकी समझ की जो दूरी उत्पन्न होती है, आईसीटी के प्रयोग ने उसकों कम करने का काम किया है। शिक्षण में आईसीटी का प्रयोग वर्तमान पीढ़ी को आगामी पीढ़ी के साथ तकनीकी

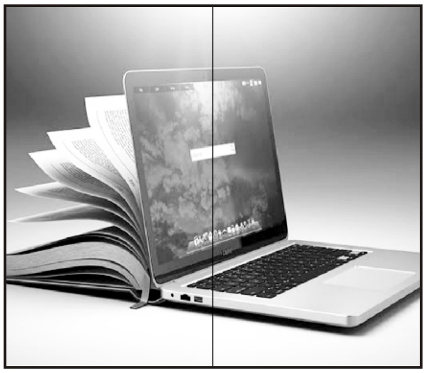

सामंजस्य स्थापित करने में सहायता करता है।

प्रारंभिक शिक्षा में किसी विषय वस्तु के ज्ञान को छात्रों तक आसानी के साथ पहुँचाने के लिए एक शिक्षक द्वारा आईसीटी का प्रयोग किया जाता है। विषय की रोचकता को बढ़ाने व अधिगम को प्रभावी बनाने के लिए आईसीटी के उपकरणों का प्रयोग कक्षा कक्ष में अधिगम को स्थाई बनाने में सहायक होता है। जब कोई शिक्षक किसी विषय को पढ़ा रहा होता है और किसी भी सरंचना या प्रयोग को ब्लैक बोर्ड पर समझाया जाता है, तो वह उतना प्रभावी नहीं होगा जितना की उसी सरंचना या प्रयोग को प्रोजेक्टर या कम्प्यूटर के माध्यम से 3 डी तकनीक के साथ समझाया जाए। आईसीटी ने शिक्षण कौशल के साथ-साथ शिक्षकों को भी नवीन तकनीक से पढ़ाने के अवसर प्रदान किए हैं और छात्रों में विषय के प्रति समझ को आसान बनाया है।

जब एक छात्र किसी भी विषय के प्रति अपने आप को असहज महसूस करता है तो आईसीटी के उपकरणों में सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाले प्लेटफार्म यू-ट्यूब को एक मागदर्शक के रूप में प्रयोग करता है। जहाँ पूरा विश्व एक क्लास रूम और पूरा विश्व ही शिक्षक व अधिगमकर्त्ता होता है।

आईसीटी व छात्र : एक शिक्षक द्वारा आईसीटी का प्रयोग शिक्षण में करना सर्वश्रेष्ठ है। यदि छात्र भी आईसीटी के प्रयोग को सहजता से अपनाते हैं तो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया बहुत अधिक प्रभावशाली हो जाती है। छात्र आईसीटी का प्रयोग अधिगम जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए कर सकते हैं। शिक्षण में आईसीटी का प्रयोग छात्रों की सृजनात्मकता व समस्या समाधान के कौशल का विकास करता है। छात्र स्वविवेक से सीखते हैं। छात्रों को विभिन्न आईसीटी उपकरणों द्वारा सीखने का मौका मिलता है।

आईसीटी के उपकरणों द्वारा ही शिक्षक व छात्र दोनों को नवीन ज्ञान की प्राप्ति आसानी से हो पाती है। आईसीटी का प्रयोग छात्रों को सीखने के दौरान अपनी समझ विकसित करने में सहायक होता है। छात्रों को किसी विषय से सम्बंधित सूचनाओं की उपलब्धता आसानी से हो जाती है।

आईसीटी के प्रयोग द्वारा छात्र शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान वास्तविक समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास करते हैं। जो उनके समस्या-समाधान कौशल को विकसित करता है।

आईसीटी युक्त क्लास रूम : आईसीटी के उपकरणों से युक्त क्लास रूम में उच्च ज्ञान की उपलब्धता होती है। यह क्लास रूम अधिगमकर्त्ता केन्द्रित होता है। जिसके कारण अधिगमकर्त्ता सक्रिय व व्यस्त रहता है। अधिगमकर्त्ता वास्तविक जीवन से जुड़ा रहता है और आईसीटी शिक्षण में किए जाने वाले विभिन्न प्रयोगों को अपने जीवन में भी करता रहता है। यह क्लास रूम एक आदर्श क्लास रूम का कार्य करते हैं। इसमें छात्र स्वयं सीखने का प्रयास करता है। किसी समय शिक्षक की अनुपलब्धता होने पर भी छात्र स्वविवेक से अपना अधिगम जारी रख सकते हैं। किसी कार्य को करते समय असफल होने पर आईसीटी युक्त क्लास रूम छात्रों को बार-बार सीखने का मौका प्रदान करता है। जो छात्रों के लिए उपयुक्त भी है और छात्रों का मनोबल भी बढ़ाता है।

परम्परागत और आईसीटी युक्त क्लास रूम : परम्परागत क्लास रूम जहाँ एक कमरे

तक ही सीमित रहते हैं, वहीं आईसीटी युक्त क्लास रूम बाउंड्री लेस, एनीवेयर, एनी टाइम व अनलिमिटेड होते हैं। परम्परागत क्लास रूम में विषय वस्तु की उपलब्धता टेक्स्ट बुक, क्लास लाईब्रेरी तक ही सीमित होती है। वहीं दूसरी ओर आईसीटी युक्त क्लास रूम में डिजीटल लाईब्रेरी, ऑनलाइन कंटेंट के रूप में उपलब्ध रहती है। परम्परागत क्लास रूम में सीखने का एक मात्र रास्ता होता है। जब कि आईसीटी युक्त क्लास रूम में छात्रों की आवश्यकता के अनुसार सीखने के अवसर उपलब्ध होते हैं।

शिक्षा में नवाचार के साथ आईसीटी : एजुकेशन सैटेलाइट आईसीटी के नवीनतम स्वरूपों में से एक है। एडुसेट कक्षाओं ने ज्ञान दर्शन व ज्ञान वाणी के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच को आसान बनाया है। एडूसेट शिक्षा के क्षेत्र में भारत का पहला शैक्षिक उपग्रह है। यह देशभर में शैक्षिक सामग्री के वितरण के लिए कक्षा-कक्षों में उपग्रह आधारित दो तरफा संचार उपलब्ध कराता है। इसके द्वारा भारतीय शिक्षा प्रणाली को आधुनिक बनाने के साथ-साथ दूरस्थ शिक्षा के कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इनके प्रयोग से विषय विशेषज्ञों के अनुभव का लाभ ग्रामीण व दूर दराज के क्षेत्रों के बच्चों को मिल रहा है। इसने ग्रामीण क्षेत्रों में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता को सुनिश्चित किया है।

ज्ञान दर्शन एक शैक्षिक टीवी चैनल है। जिसका प्रचार व प्रसार दूरदर्शन भारती द्वारा किया जाता है। इसके द्वारा शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण 24 घण्टे किया जाता है। यह एक ऐसा चैनल है जो शैक्षिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ प्रत्येक छात्र एवं छात्रा के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। ज्ञान दर्शन चैनल के माध्यम से शैक्षिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों का प्रसार किया जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप शैक्षिक एवं सामाजिक विकास की पूर्ण संभावना होती है।

ज्ञानवाणी एक शैक्षिणिक एफ एम रेडियों नेटवर्क है जो प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के साथ साथ विभिन्न पहलुओं और स्तरों से लैस कार्यक्रम प्रस्तुत करता है। रेडियों के माध्यम से समाज का शैक्षिक व सामाजिक विकास तथा समाज के उपेक्षित व शारीरिक रूप से कमजोर

वर्ग का सशक्तिकरण करना ही ज्ञानवाणी का मुख्य लक्ष्य है।

शिक्षक को आईसीटी से लाभ : पिछले कुछ दशकों में नई तकनीकों ने वास्तव में हमारी दुनिया के हर पहलू को बदल दिया है। स्कूलों में ब्लैक बोर्ड और चाक का स्थान आज डिजिटल क्लास रूम ले चुके हैं। स्लैट की जगह बच्चों के हाथ में आजकल टेबलेट है। किताबों का स्थान ई-कंटेंट ले रहें हैं। इन सब ने जहाँ शिक्षण अधिगम को आसान व सुगम बनाया है वहीं कुछ तकनीकी समस्याओं को भी जन्म दिया है।

आज प्रत्येक शिक्षक के लिए यह प्रश्न है कि-

''मुझे एक शिक्षक के रूप में कैसे पता होना चाहिए कि उपलब्ध आईसीटी के संसाधनों में से कौनसे उपकरण कक्षा में मेरी शिक्षण विधियों को बदलने में सक्षम हैं?''

कुछ आईसीटी उपकरण ऐसे हैं जिनका उपयोग कक्षा में शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु छात्रों के साथ किया जा सकता है। यदि हम उनका उपयोग उन छात्रों के साथ शुरू करते हैं जो आईसीटी से सम्बंधित क्रियाकलापों में रूचि रखते हैं और सामान्य रूप से अपनी कक्षा में अन्य बच्चों की तुलना में जल्द ही अपने कार्यो को पूरा करते हैं तो वे इस परिवर्तन को करते समय हमारे लिए एक अमूल्य स्रोत होंगे। एक बार जब छात्र आईसीटी उपकरणों का उपयोग करना सीख जाता है, तो अपनी कक्षा में अन्य बच्चों को सिखा सकता है और शिक्षक के रूप में हम उनसे भी सीख सकते हैं।

एक शिक्षक के लिए शिक्षण के समय आईसीटी का प्रयोग उसके शिक्षण कौशल को प्रभावशाली व उत्कृष्ट बनाता है। शिक्षक द्वारा अच्छी शिक्षण सामग्री के साथ प्रस्तुतीकरण छात्रों की शिक्षण के प्रति रुचि को बढ़ाता है। आईसीटी के उपयोग के प्रति जागरूक शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न स्रोतो जैसे NIOS, NCERT, UGC, NCTE, NAAC आदि से जानकारी प्राप्त कर अपने ज्ञान को बढ़ा सकता है। प्रारंभिक शिक्षा में शिक्षक के लिए आईसीटी का प्रयोग शिक्षक व छात्र के बीच दूरिया कम करने का काम भी करता है। व्यक्तिगत शिक्षा को सतत् करने के लिए शिक्षक व छात्र दोनों के लिए ही ऑनलाइन पुस्तकालय, जर्नल व विभिन्न अनुसंधान सहायक होते हैं। आईसीटी का प्रयोग दुनिया भर के शिक्षकों के साथ संसाधनों को सांझा करने के लिए उपयोगी होता है। ऑनलाइन कोर्स का छात्र व शिक्षकों के लाभ के लिए उपयोग किया जा सकता है। कक्षा-कक्ष में सबसे अच्छा सीखने के लिए विभिन्न एप्लिकेशन के साथ-साथ गेम्स का प्रयोग भी किया जा सकता है। विशेष जरूरत वाले बच्चों के लिए सहायक तकनीकों का प्रयोग अच्छा रहता है। शिक्षक के लिए आईसीटी का प्रयोग छात्र की प्रगति पर नजर रखनें में सहायक होता है। जिसके कारण वह प्रत्येक छात्र का अलग से रिकार्ड बनाकर उनकी प्रगति को मॉनिटर कर सकता है।

आईसीटी की भूमिका : शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में आईसीटी का उपयोग कर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को आसान बनाने के साथ-साथ रोचक व प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है। यह कहना कतई अनुचित नहीं होगा कि ''प्रौद्योगिकी शिक्षकों की जगह नही लेगी, लेकिन जो प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं वे सम्भावित रूप से उन शिक्षकों की जगह लेगें जो इसका उपयोग नहीं करते हैं।'' हमें एक शिक्षाविद् होने के नाते इस सत्य को स्वीकार करना होगा।

आईसीटी का प्रयोग शिक्षक को प्रत्येक छात्र को शिक्षण में साथ लेकर चलने में मदद करता है। जो छात्र पिछड़ रहे होते हैं। वे अपने अनुसार पुनः प्रयास द्वारा सीखने का प्रयास करते हैं। शिक्षक के लिए आवश्यक है कि उसकी अवधारणाओं की गहरी समझ हो। छात्र विषय की गहराई को अन्य तरीकों वेबसाइट व अन्य

ऑनलाइन ई-कंटेंट की सहायता से आसानी से समझ सकते हैं। जहाँ शिक्षक की उपलब्धता सीमित समय तक ही होती है, वहीं आईसीटी द्वारा अधिगम कहीं भी, कभी भी उपलब्ध रहता है। जब छात्र आवश्यकता महसुस करता है तो ऑनलाइन सीख सकता है। आईसीटी द्वारा सीखने में छात्र के समक्ष अन्नंत सम्भावनाएं उपलब्ध रहती हैं। जिसके द्वारा वह अपने ज्ञान को समय समय पर अपडेट रखता है। शिक्षण अधिगम में आईसीटी का प्रयोग छात्र को स्वतंत्र और रचनात्मक रूप से काम करने में सक्षम बनाता है। छात्र हर समय शिक्षक पर निर्भर नही रहते हैं।

शिक्षण-अधिगम में आईसीटी : शिक्षण अधिगम में आईसीटी का प्रयोग अधिगम को आसान बनाकर सीखने के वातावरण में वृद्धि करता है। छात्र सहज रूप से सीख पाते हैं। आईसीटी द्वारा शिक्षण में विभिन्न उपकरणों का प्रयोग अधिगम को प्रभावशाली बनाता है। शिक्षण में जहाँ आईसीटी का प्रयोग होता है, वह शिक्षण अधिगम उत्पादक और सार्थक होते हैं। आईसीटी का प्रयोग शिक्षक व छात्रों को अपडेट रखता है। आईसीटी के प्रयोग से किसी भी विषय मे जो भी बदलाव होते हैं उन्हें आसानी से ग्रहण किया जा सकता है।

ई-लर्निंग द्वारा छात्र कहीं पर भी सर्वश्रेष्ठ शिक्षक से पढ़ सकते हैं। जिसमें वेब बेस्ड लर्निंग व ऑडियो-वीडियो कॉन्फ्रेंस आदि हो सकते हैं। आईसीटी शिक्षकों को शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षण वातावरण बनाने में मदद करता है। कई शिक्षक पारम्परिक शिक्षा पद्धति के समर्थन के लिए आईसीटी का प्रयोग करते हैं। अगर शिक्षक पारम्परिक तरीकों से पढ़ाता है तो आईसीटी उसकी मदद करती है। जैसे नए आंकड़े प्रदान करने में, प्रजेंटेशन में, एसेसमेंट में। आईसीटी का उपयोग सार्थक परिवर्तन व सटीक शिक्षण प्रयासों के समर्थन करने के लिए किया जाता है। आईसीटी का प्रयोग छात्रों को कक्षा-कक्ष में व्यस्त रखता है। जिसके लिए शिक्षण अधिगम के समय कई एप्लिकेशन का उपयोग कर सकते हैं।

आईसीटी से लाभ : आईसीटी का शिक्षण अधिगम में सबसे बड़ा लाभ यही है कि इसके उपयोग से समय की बचत कर सकते हैं। विभिन्न विषयों से सम्बन्धित शिक्षण अधिगम

सामग्री ऑनलाइन उपलब्ध है। इसके कारण यह कम खर्चीली व सुलभ है। विभिन्न विषयों में प्रयोगों को भौतिक रूप से करने में अधिक खर्च व भौतिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। लेकिन आईसीटी के उपयोग से कम खर्च व भौतिक संसाधनों की सीमित उपलब्धता के साथ शिक्षण को प्रभावी बनाया जा सकता है। विभिन्न प्रयोगों व क्रियाकलापों को कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर के माध्यम किया जा सकता है

आईसीटी का प्रयोग इंटरएक्टिव सीखने का अनुभव प्रदान करता है। यह छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करता है। आईसीटी शिक्षण अधिगम की विभिन्न शैलियों का प्रयोग बताता है। जिससे कठिन अवधारणाओं को समझने में सहायता प्रदान करता है।

शिक्षण में आईसीटी : आईसीटी के प्रयोग द्वारा एक शिक्षक अपने शिक्षण की पाठ योजना को बहुत ही आकर्षक व प्रभावशाली बना सकता है। आईसीटी के प्रयोग से शिक्षण की गुणवत्तापूर्ण विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण कर पाना आसान होता है। जैसे विज्ञान विषय में विभिन्न प्रयोगों और सरंचनाओं को आईसीटी उपकरणों की सहायता से आसानी से समझाया जा सकता है। गतिविधि आधारित शिक्षण के लिए आईसीटी का प्रयोग विषय की समझ को बढ़ाता है। शिक्षक के द्वारा आईसीटी के प्रयोग से व्यक्तिगत कार्य पत्रक व उसका रिकार्ड रखना आसान होता है। छात्र उपस्थिति का रिकार्ड संधारण में भी आईसीटी उपकरण बहुत उपयोगी है। आईसीटी के उपयोग से शिक्षक स्वमूल्यांकन के साथ-साथ छात्रों का मूल्यांकन भी आसानी से कर सकता है।

आईसीटी युक्त कक्षा-कक्ष को अभ्यास में सक्षम बनाना : आईसीटी युक्त कक्षा-कक्ष में प्रारम्भ से ही आईसीटी उपकरण सीखने के उपयोग के नियम निर्धारित कर लेने चाहिए। इसके लिए शिक्षण के समय विभिन्न समूह बनाए और गतिविधियों का संचालन करें। शिक्षण अधिगम हेतु आडियो-वीडियो के साथ साथ इंटरएक्टिव वाइट बोर्ड व वीडियो गेम्स का प्रयोग कर सकते हैं।

स्वतंत्र रूप से सिखने में आईसीटी : शिक्षण अधिगम में आईसीटी का प्रयोग छात्रों को स्वतंत्र रूप से खोजने की अनुमति प्रदान करता है। यह छात्रों को अनुसंधान और जानकारी इकट्ठा करने में मार्गदर्शन करता है। नए ज्ञान को पुराने अनुभव के साथ शेयर करने में सहायता करता है। आईसीटी का प्रयोग छात्रों को समस्या समाधान के लिए प्रोत्साहित करता है तथा निष्कर्ष निकालने में मदद करता है।

निष्कर्ष : आईसीटी का प्रयोग शिक्षक को पढ़ाने के लिए असीमित अवसर प्रदान करता है। यह शिक्षक के शिक्षण कौशल के साथ-साथ अधिगम की गुणात्मकता को बढ़ाता है। परम्परागत शिक्षण की तकनीकी दूरियों को कम करता है। आईसीटी उपकरण सीखने की जरूरतों को पूरा करते हैं। यह कभी भी, कहीं भी सीखने की अवधारणा को साकार करता है। छात्र व शिक्षक के लिए नवीनतम ज्ञान के मार्ग सदैव खुले रहते हैं। जो उनके व्यक्तित्व को निखारता है।

पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा को तकनीक से जोड़ने के लिए जो भी प्रयास हुए हैं वह बहुत सराहनीय है। शैक्षिक क्षेत्र में जो शिक्षक तकनीक को अपनाएँगें वहीं मुख्यधारा के साथ चल पाएँगें। आगामी वर्षों के लिए यह परिकल्पना की जा सकती है कि आने वाला समय नए आविष्कारों व नवाचारों का होगा। अगर आज का शिक्षक वर्तमान में उपलब्ध तकनीकी उपकरणों और नवाचारों को नहीं अपना रहा है तो उसे अपने अस्तित्व के लिए भविष्य में संघर्ष करना ही होगा।

अध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय,
राजीव नगर, बीकानेर (राज.)
मो. 9928112829

आत्मविश्वास-आत्मशक्ति

जीवन की चुनौतियों का दृढ़ इरादों से सामना करें

❒ हीराराम चौधरी

भारत रत्न महान वैज्ञानिक, मिसाइल मैन और पूर्व राष्ट्रपति स्व. श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा था कि 'चुनौतियाँ जीवन के लिए बहुत जरूरी होती हैं, सफलता का आनंद इनके बिना उठाया ही नहीं जा सकता है।' उपर्युक्त उदाहरण को हर व्यक्ति को जीवन में आत्मसात करना चाहिए। जो व्यक्ति जीवन में चुनौतियों, कठिनाइयों और विपदाओं से डटकर मुकाबला करता है और किसी भी विषम परिस्थिति में भी निराश नहीं होता है, वह व्यक्ति सफलता के शिखर पर आरूढ़ हो जाता है। विद्यार्थी जीवन मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी आधारशिला होती है। आज के विद्यार्थियों को इस प्रतिस्पर्द्धा के युग में सफलता प्राप्ति के लिए हर दिन नई-नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सफलता की राह में नई-नई समस्याएँ आती है। जीवन में सफलता की राह में आने वाली हर समस्या का आत्मविश्वास से निराकरण कर आगे बढ़ते रहना चाहिए। जीवन में आने वाली हर विपत्ति से निराश होने की बजाय सकारात्मक चिंतन करें कि यह विपत्ति मेरे लिए वरदान होगी। मैं पूर्ण आत्मविश्वास एवं सहजता से ऐसी विपत्तियों का अभिनंदन करूँगा।

जीवन में आने वाली हर चुनौती के निराकरण हेतु किया गया संघर्ष जीवन में उत्कर्ष ही लाता है। संघर्ष में ही जीवन का परम आनंद और हर्ष है। बिना संघर्ष के मिलने वाली सफलता बेमजा एवं स्वादहीन होती है। चुनौतियों का सामना वही व्यक्ति कर सकता है जिसमें सामर्थ्य है, जो पुरुषार्थ करने योग्य है जिसमें कठिन मेहनत करने की क्षमता है जो आत्मविश्वास एवं आत्मबल से सरोबार है। व्यक्ति को आंतरिक रूप से बलशाली होना चाहिए, उसमें दृढ़ इच्छाशक्ति, असीम साहस एवं स्वयं पर अटूट विश्वास होना चाहिए। दृढ़ निश्चयी वही है जो परिस्थिति के आगे झुकता नहीं हैं, वह अपने जीवन में बड़ी से बड़ी विषम परिस्थितियों को भी अपना दास बना देता है और जीवन में अपने तय लक्ष्य को प्राप्त कर जाता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति अपने जीवन में आने वाली चुनौतियों से घबराकर, हारकर घर बैठने वाला हो वह व्यक्ति कदापि विजयी नहीं हो सकता। विजयी होने के लिए, व्यक्ति को संघर्षशील एवं निरंतर प्रयासरत रहना जरूरी है। जीवन एक चुनौती है, स्वीकार करो, असफलताएँ आएँगी, खुद को तैयार करो। अपनी पूरी सामर्थ्य, इच्छाशक्ति एवं मेहनत से संघर्ष करो, सफलता मिलेगी पूर्ण निष्ठा से जतन करो। जीवन में अपनी संकल्पशक्ति को इतना दृढ़ बना लो कि, 'मैं मेरे निहित लक्ष्य को पाने के लिए हर चुनौती से सामना करूँगा, लेकिन हार नहीं मानूँगा।' अपने मन में यह भाव रखो कि-

'हार न कभी स्वीकार करो,
आत्मविश्वास और धैर्य बनाकर,
जीत का सपना साकार करो।
मुश्किल चाहे कितनी बड़ी हो,
उनका तुम निरादर करो।
युद्ध भूमि में मरते दम तक,
डटकर के तुम वार करो,
पर हार कभी न स्वीकार करो।।'

अपने मन-मस्तिष्क को ऐसे भावों से पूरित रखो कि जीवन में आप सफलता की बुलंदियों पर पहुँचोगे जिससे जीवन सरस व आनंद से परिपूर्ण होगा। विद्यार्थी का जीवनकाल चुनौतियों से भरा होता है, उसे अपने आपको सफल बनाने के लिए कई तरह की चुनौतियों से जूझना पड़ता है। प्रतिस्पर्धा के युग में हर परीक्षा उसके लिए चुनौती बनकर आती है। जो विद्यार्थी इन चुनौतियों का सहजता से सामना कर लेता है, वह कामयाब बन जाता है। जो इन चुनौतियों का सामना न कर हताश-निराश होकर बैठ जाता है, वह जीवन में असफल हो जाता है। प्रत्येक विद्यार्थी को चाहिए कि वह जीवन में आने वाली हर चुनौती के लिए अपने आपको तैयार रखे और अपने जीवन को आनंद से परिपूर्ण बनाए। अपने पुरुषार्थ से अर्जित सफलता से अपने माता-पिता, गुरुजनों और शुभचिंतकों को गर्वित होने का अवसर प्रदान करे।

विद्यार्थियों में भी बालिकाओं को विशेष रूप से अपने आपको नई-नई चुनौतियों से सामना करने के लिए तैयार रखें, किसी भी स्थिति-परिस्थिति में मोह-छलावे में न आए। किसी के हाथों की कठपुतली बनकर अपने जीवन को बर्बाद न करें। आज के इस कलियुगी जीवन में जहाँ-तहाँ घूम रहे भेड़ियों से अपने आपको बचाए। आजकल बालिकाओं के लिए यह चुनौतियाँ ज्यादा ही आ रही हैं। अपने उच्च आदर्श मूल्यों एवं सदाचरण से अपनी इज्जत के साथ माता-पिता और गुरुजनों की भी इज्जत बढ़ाने के सद्कार्य करें। अपने आपको अपने सपने को साकार करने के लिए दृढ़ इरादों से पुरुषार्थ करें और सफलता की राह में आने वाली हर चुनौती का सहजता से सामना करें और अपने जीवन को मंगलकारी एवं यशस्वी बनाने का सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें।

अंत में एक संदेश उन सभी विद्यार्थियों एवं अपने सपने को साकार करने वाले व्यक्तियों के लिए जो सफलता की राह की चुनौतियों का सहजता से सामना करके आगे बढ़ते हैं।

'जिसे डूबने से डर लगता है
उसे तैरना कब आता है?
मोती उसे ही मिलते है
जो गहरे गोते लगाता है।
विश्वासों का हर गुलाब
काँटों में खिला करता है,
संघर्षों की धार को ही मंजिल
का पता मिला करता है।'

सारांशः यही है कि हम अपने आपको अपने जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना सहजता से करने के लिए तत्पर रहे, निराश न होकर दृढ़ इरादों और बुलंद होसलों से जीवन की काँटों भरी डगर में आने वाली हर चुनौती का सामना कर अपने जीवन को आनंद से परिपूर्ण बनाए।

अध्यापक,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
सोडावास, सोमेसर,
पाली (राज.)-306503

आदेश-परिपत्र : दिसम्बर, 2019

● **1.** बालिका उपहार योजना के अन्तर्गत आवेदन पत्र आमंत्रण सूचना। ● **2.** हितकारी निधि के अन्तर्गत माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा में कार्यरत कार्मिकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र आमंत्रणः अन्तिम तिथि 06.12.2019 ● **3.** हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान वर्ष 2019-20 की कटौती वेतन बिलों से करने बाबत। ● **4.** Add Group Dependent Deducation में कटौती शुरू करवाने के संबंध में। ● **5.** शिक्षा विभाग के कार्मिकों के वेतन में हितकारी निधि डिडक्शन जोड़ने के क्रम में। ● **6.** 2019-20 के लिए हितकारी निधि वार्षिक अंशदान बाबत। ● **7.** राज्य सरकार के अनुमोदन उपरान्त हितकारी निधि समिति द्वारा लिए गए निर्णयानुसार नवीन योजनाओं का शुभारम्भ एवं पूर्व में चल रही योजनाओं में सहायता राशि में बढोतरी। ● **8.** राज्य स्तरीय वरिष्ठता सूची में योग्यता अभिवृद्धि, विलोपन, नामांकन, जन्मतिथि में संशोधन व अन्य संशोधन के संबंध में पुनः निर्देश। ● **9.** राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संस्था प्रधानों को बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सार्थक कार्य योजना बनाकर क्रियान्विति सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित करने बाबत। ● **10.** राजस्थान स्वेच्छया ग्रामीण शिक्षा सेवा नियम-2010 के अन्तर्गत सामायोजित कार्मिकों को सेवानिवृत्ति पर देय अनुपयोजित उपार्जित अवकाश के नकद भुगतान के सम्बन्ध में। ● **11.** एकीकृत वित्तीय प्रबन्धन प्रणाली के अन्तर्गत राजकीय संव्यवहारों को ऑन-लाईन करने एवं संव्यवहारों/ भुगतानों में पूर्ण शुद्धता हेतु समस्त कार्मिकों के मास्टर डाटा की जाँच/सत्यापन के सम्बन्ध में। ● **12.** राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के बोर्ड परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक उन्नयन के साथ ही गुणात्मक उत्कृष्टता सुनिश्चित किए जाने बाबत। ● **13.** शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 47वीं राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता सत्र 2019-20 का आयोजन के संबंध में।

1. बालिका उपहार योजना के अन्तर्गत आवेदन पत्र आमंत्रण सूचना।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/हिनि/विवाह/28129/2018-19 दिनांक 04.11.19 ● समस्त संयुक्त निदेशक, समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) (माध्यमिक/ प्रारंभिक शिक्षा), समस्त प्राचार्य डाईट, समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षायें। ● विषय : बालिका उपहार योजना के अन्तर्गत आवेदन पत्र आमंत्रण सूचना।

हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा/प्रारंभिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर के अन्तर्गत शिक्षा विभाग के राजकीय सेवा में कार्यरत समस्त श्रेणी के अधिकारियों/कर्मचारियों के पुत्री विवाह के उपलक्ष्य में उपहार स्वरूप 11,000/- रुपये प्रत्येक प्रकरण में संलग्न प्रारूप-पत्र में आवेदन करने पर प्रदान किए जाने हैं। आवेदन पत्र भरते समय कार्मिक एवं अंग्रेषण अधिकारी निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रख कर ही अग्रेषित किए जावें :-

1. योजना का लाभ 2018-19 से हितकारी निधि के नियमित अंशदाता को ही देय होगा।
2. योजना का लाभ सेवाकाल में एक बार ही देय होगा।
3. निर्धारित प्रपत्र संलग्नानुसार सभी कॉलम की पूर्ति कर भिजवाया जाना है।
4. योजना का लाभ प्रत्येक वित्तीय वर्ष में 500 प्रकरणों में दिया जावेगा।
5. बालिका के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर द्वारा आयोजित कक्षा 10वीं के प्रमाण-पत्र की प्रति जिसमें आयु का उल्लेख हो, या अन्य आयु सम्बन्धी प्रमाण-पत्र की प्रति।
6. 18 वर्ष से कम आयु होने पर योजना का लाभ देय नहीं होगा।
7. विवाह की निर्धारित तिथि के दो माह के अन्तर्गत में आवेदन करना होगा।
8. आवेदन पत्र में उल्लेख अनुसार आवेदन पत्र अग्रेषित कराना होगा।
9. योजना राशि का वितरण कर्मचारी के खातों में ई.सी.एस. के जरिये की जावेगी।

● **उप निदेशक** (प्रशासन) एवं **सचिव** हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

हितकारी निधि

कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

हितकारी-निधि से शिक्षा विभागीय समस्त श्रेणी के कर्मचारियों (माध्यमिक/प्रारंभिक) के पुत्री विवाह पर उपहार योजना का प्रार्थना-पत्र

1. कर्मचारी का नाम..
2. कर्मचारी का पद एवं पदस्थापन स्थान............................
3. कर्मचारी का स्थाई पता...
4. टेलीफोन नम्बर/मोबाइल नम्बर................................
5. हितकारी निधि अंशदान 2018-19 से ई.सी.एस. एवं शिड्यूल की प्रति संलग्न करें।...
6. कर्मचारी की Employee ID संख्या.............................
7. पुत्री का नाम...
8. पुत्री की जन्म तिथि सैकण्डरी स्कूल की अंकतालिका/अन्य कोई आयु सम्बन्धी प्रमाण-पत्र ....
9. विवाह कि निर्धारित तिथि.......................................
10. विवाह हेतु मुद्रित आमंत्रण पत्र की प्रति..........................
11. कार्मिक का बैंक खाता विवरण
    पास बुक के प्रथम पृष्ठ की प्रति (प्रमाणित) या निरस्त चैक

मैं प्रमाणित करता हूँ/करती हूँ कि मेरी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण बिल्कुल सही है। इन बिन्दुओं में कोई असत्यता पाई जाती है तो हितकारी-निधि, शिक्षा-विभाग, बीकानेर मेरे विरुद्ध जो भी उचित समझे कार्यवाही कर सकेगा यह मुझे स्वीकार्य होगी।

कर्मचारी के हस्ताक्षर मय पद एवं कार्यरत स्थान

....

प्रार्थना पत्र जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)/सी.बी.ई.ओ. से अग्रेषित करवाया जाना है।

प्रमाणित किया जाता है कि प्रार्थी/प्रार्थिनी द्वारा प्रस्तुत विवरण सही है अतः प्रार्थना-पत्र अध्यक्ष हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर को बालिका विवाह उपहार योजना हेतु प्रार्थना-पत्र अनुशंषा सहित अग्रेषित किया जाता है।

स्थान ....

दिनांक.......................

हस्ताक्षर
जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)
/CBEO
(मोहर)

हस्ताक्षर
कार्यालयाध्यक्ष/संस्थाप्रधान
(मोहर)

2. हितकारी निधि के अन्तर्गत माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा में कार्यरत कार्मिकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र आमंत्रणः अन्तिम तिथि 06.12.2019

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/हिनि/28129/2018-19 दिनांक : 04.11.2019 ● समस्त संयुक्त निदेशक, समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा), समस्त प्राचार्य डाईट, समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षायें। ● विषय : हितकारी निधि के अन्तर्गत माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा में कार्यरत कार्मिकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र आमंत्रणः अन्तिम तिथि 06.12.2019

हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा/प्रारंभिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर के अन्तर्गत शिक्षा विभाग में राजकीय सेवा में कार्यरत समस्त वर्ग के शिक्षा अधिकारियों/व्याख्याता (स्कूल शिक्षा)/अध्यापकों/मंत्रालयिक/सहायक कर्मचारियों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनार्थ वित्तीय सहायता दिए जाने बाबत संलग्न प्रारूप-पत्र में प्रार्थना पत्र आमंत्रित किए जाते हैं। प्रार्थी द्वारा प्रार्थना-पत्र भरते समय एवं संबंधित अधिकारी द्वारा अग्रेषित करते समय निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रख कर अग्रेषित किए जावेंः-

1. यह योजना राजस्थान राज्य के शिक्षा विभाग माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा में कार्यरत समस्त वर्ग के कार्मिकों के बच्चों के लिए ही लागू होगी।
2. व्यावसायिक शिक्षा : इंजीनियरिंग, मेडिकल एवं मैनेजमेन्ट, बी.एड., सी.ए., एस.टी.सी., नर्सिंग फार्मेसी पाठ्यक्रम में अध्ययनरत को ही वित्तीय सहायता देय होगी। निर्धारित पाठ्यक्रमों का विवरण निम्नानुसार है :-

(अ) इंजीनियरिंग में स्नातक पाठ्यक्रम (चार वर्ष)-(आठ सेमेस्टर) : डिसिपलिन ऑफ सिविल, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रोनिक्स एवं टेली-कम्यूनीकेशन, कम्प्यूटर साईन्स एण्ड इंजीनियरिंग, ऑटोमोबाईल, आर्केटैक्चर, टैक्सटाईल, माईनिंग, रबर टैक्नोलोजी, केमिकल इंजीनियरिंग, इन्स्टुमेन्टेशन एण्ड कन्ट्रोल, प्रिन्टिंग, केमिकल टेक्नोलोजी, मेटेलर्जीकल इंजीनियरिंग, एरोनोटिकल इंजीनियरिंग, प्रोडेक्शन टेक्नोलोजी, शिप बिल्डिंग एण्ड फेब्रिकेशन टैक्नॉलोजी, नेवल आर्किटेक्चर, पैट्रोलियम इंजीनियरिंग।

(ब) मेडिकल (एलोपेथी), होम्योपेथी, आयुर्वेदिक फार्मस ऑफ मेडिसन्स एवं पशु आयुर्विज्ञान।

(स) उपर्युक्त पैरा (अ,ब) में उल्लेखित डिग्री (4 वर्ष), डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की अवधि तीन वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।

(द) डिप्लोमा पाठ्यक्रम, बी-फार्मा की अवधि दो वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।

(य) स्नातक पाठ्यक्रम के पश्चात मैनेजमेंट पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।

(र) बी.एड. तथा एस.टी.सी. पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष की मान्य है।

3. प्रार्थना पत्र की सभी प्रविष्टियाँ स्वयं कर्मचारी/संस्थाप्रधान द्वारा भरी जानी चाहिए।
4. भुगतान किया गया वास्तविक शुल्क प्रार्थना-पत्र के कॉलम संख्या 12 में स्पष्ट रूप से अंकित करें। प्रार्थना-पत्र के साथ शुल्क की मूल रसीदें संलग्न करें। फोटो स्टेट प्रतियाँ स्वीकार्य नहीं होगी। सम्पूर्ण भुगतान की रसीद यदि प्रस्तुत की जाती है तो उसका मदवार विवरण प्रस्तुत करने पर ही प्रार्थना-पत्र विचारणीय होगा।
5. सत्र 2019-20 में छात्र जिस महाविद्यालय में अध्ययनरत है, उस महाविद्यालय के प्रधानाचार्य का प्रमाण-पत्र संलग्न प्रारूप में संलग्न करें।
6. सहायता राशि मात्र ट्यूशन, पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला (लेबोरेटरी) शुल्क के भुगतान पर ही देय है। अतः अन्य मदों पर किए गए भुगतान एवं एक मुश्त में दर्शायी गई राशि पर सहायता देय नहीं होगी।
7. सहायता राशि एक शैक्षणिक सत्र तक ही सीमित है। राज्य कर्मचारी के बच्चों को वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र छात्र/छात्रा के शैक्षणिक सत्र 2019-20 में अध्ययनरत के लिए ही स्वीकार्य होंगे।
8. व्यावसायिक शिक्षा में सहायता हेतु परिवार के एक ही बच्चे के लिए प्रार्थना-पत्र स्वीकार्य होगा।
9. यह सहायता राशि वर्ष 2019-20 के लिए ही मान्य होगी, जिन्होंने इस सत्र में प्रवेश लिया हो उन्हें ही सहायता दी जाएगी।
10. प्रार्थना पत्रों के आधार पर पात्रता की जाँचोपरान्त एवं हितकारी निधि कोष में राशि उपलब्ध होने पर सहायता देय होगी। प्रार्थना-पत्र प्रेषित कर दिए जाने से यह तात्पर्य नहीं है कि आपको सहायता मिल जाएगी। अतः अनावश्यक पत्र व्यवहार नहीं किया जावे।
11. राज्य कर्मचारी, हितकारी निधि का नियमित अंशदाता वर्ष 2018-19 से होना चाहिए। यदि अंशदान जमा करवाया हुआ है तो कटौती शिड्यूल एवं ई.सी.एस. की प्रतिलिपि संलग्न करें।
12. सहायता राशि पाठ्यक्रम हेतु रुपये 10,000/- निर्धारित है।
13. प्रार्थना पत्र निर्धारित सीमा तक प्राप्त नहीं होने की सूरत में शेष प्रार्थना पत्रों पर विचार किया जा सकेगा।
14. अपूर्ण प्रार्थना-पत्र, शुल्क की मूल रसीदें नहीं होने एवं देरी से प्राप्त होने वाले प्रार्थना-पत्र पर कोई विचार नहीं किया जाएगा। अतः ऐसी स्थिति में एवं निरस्त हुए प्रार्थना-पत्रों के बारे में कोई सूचना भी नहीं दी जाएगी। सहायता राशि 200 कार्मिकों के प्रार्थना पत्रों पर दी जानी है जिसे वरीयता के आधार पर प्रदान की जाएगी।

कृपया उक्त विषयक सूचना अपने अधीनस्थ विद्यालयों/कार्यालयों में प्रसारित एवं प्रचारित करावें ताकि अधिकाधिक कर्मचारीगण इसका लाभ उठा सके। अतः निर्देशित किया जाता है कि अधीनस्थ संस्था

प्रधानों को पाबन्द कराए कि प्रार्थना पत्र सीधे नहीं भेजे, प्रार्थना पत्रों को अपनी अनुशंषा सहित दिनांक 06.12.2019 तक अधोहस्ताक्षरकर्त्ता को पद नाम से भिजवाने की व्यवस्था करें। तत्पश्चात प्राप्त होने वाले प्रार्थना-पत्रों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।

●संलग्न : निर्धारित प्रार्थना-पत्र

●**उप निदेशक** (प्रशासन) एवं **सचिव** हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

हितकारी निधि

कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

हितकारी निधि से राज्य कर्मचारियों, राजपत्रित शिक्षा अधिकारी/व्याख्याता (स्कूल शिक्षा)/शिक्षक/मंत्रालयिक/सहायक कर्मचारी एवं समस्त वर्ग के राज्य कर्मचारियों (माध्यमिक/प्रारम्भिक शिक्षा) के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र

1. कर्मचारी का नाम..
2. पद एवं पदस्थापन स्थान.......................................
3. कर्मचारी का स्थायी पता.......................................
4. टेलीफोन नम्बर/मोबाइल नम्बर.................................
5. कार्मिक का बैंक खाता विवरण.................................
   1. कार्मिक का बैंक खाता संख्या (पास बुक की प्रति) या निरस्त चैक..
6. अध्ययनरत छात्र/छात्रा का नाम...............................
7. छात्र/छात्रा से सम्बन्ध.......................................
8. छात्र/छात्रा के व्यावसायिक शिक्षा का नाम (✓करें) मेडिकल/इंजीनियरिंग/मैनेजमेंट/बी.एड./एस.टी.सी./नर्सिंग/सी.ए.).. ....
9. पाठ्यक्रम की अवधि..
10. महाविद्यालय में प्रवेश तिथि..................................
11. महाविद्यालय का नाम एवं पता जहाँ छात्र/छात्रा अध्ययनरत है .... (✓करें) (संस्था राजकीय/अराजकीय/निजी/मान्यता प्राप्त)
12. व्यावसायिक विषय के लिए भुगतान की गई राशि की मूल रसीदें संलग्न करें:-
    संलग्न कुल रसीद संख्या....................राशि...............
13. छात्र/छात्रा जिस महाविद्यालय में अध्ययनरत है उस संस्था से प्राप्त प्रमाण पत्र संलग्न है (हाँ/नहीं)
14. हितकारी निधि का कार्मिक आई.डी. संख्या (अंशदान कटौती का शेड्यूल/ई.सी.एस. प्रति संलग्न करें 2018-19 से नियमित अंशदाता होना चाहिए।)

मैं प्रमाणित करता हूँ/करती हूँ कि मेरी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण बिल्कुल सही है। इन बिन्दुओं में कोई असत्यता पाई जाती है तो हितकारी निधि, शिक्षा विभाग, बीकानेर मेरे विरुद्ध जो भी उचित समझे कार्यवाही कर सकेगा वह मुझे स्वीकार्य होगी।

कर्मचारी के हस्ताक्षर (पद एवं कार्यरत स्थान)

प्रार्थना पत्र जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय एवं संस्था प्रधान द्वारा अग्रेषित करवाया जाना आवश्यक है।

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती........................ पद एवं पदस्थापन स्थान.. जो मेरे अधीन कार्यरत है। इनके पुत्र/पुत्री...........................जो (महाविद्यालय) का नाम.. में अध्ययनरत है एवं मेडिकल/इंजीनियरिंग/मैनेजमेंट/बी.एड./एस.टी.सी./नर्सिंग सत्र.............में प्रवेश लिया है को सहायता हेतु इनका प्रार्थना-पत्र अध्यक्ष हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर को अनुशंषा सहित अग्रेषित किया जाता है।

जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)/ CBEO हस्ताक्षर मय सील

संस्थाप्रधान के हस्ताक्षर (मोहर)

अध्ययनरत महाविद्यालय का प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/सुश्री......................... पुत्र/पुत्री/श्रीमती... जो (महाविद्यालय का नाम)... में अध्ययनरत है। इनके पुत्र/पुत्री इस महाविद्यालय का नियमित छात्र/छात्रा है।

महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्रा विषयक विवरण निम्नानुसार हैः-

पाठ्यक्रम का नाम	पाठ्यक्रम की अवधि (सेमेस्टर सहित)	प्रवेश तिथि	वर्तमान में किस वर्ष में अध्ययनरत है।	उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण	विशेष विवरण

संस्थाप्रधान के हस्ताक्षर
मय मोहर

3. हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान वर्ष 2019-20 की कटौती वेतन बिलों से करने बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा./हि.नि./28203/2019-20 दिनांकः 30.10.2019 ● निदेशक, समग्र शिक्षा, स्कूल शिक्षा विभाग, शिक्षा संकुल, जयपुर; समस्त संयुक्त निदेशक, शिक्षा विभाग; समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी; समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) (माध्यमिक/प्रारम्भिक); समस्त डाईट प्राचार्य; समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी; समस्त विशिष्ट संस्थाएँ; उप-पंजीयक कार्यालय ● विषयः हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान वर्ष 2019-20 की कटौती वेतन बिलों से करने बाबत।

उपर्युक्त विषय में लेख है कि राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प. 21(7) शिक्षा-2/हितकारी निधि/2017 दिनांक 13.10.2017 एवं पत्रांक 15.06.2018 के द्वारा अनुमोदन उपरान्त हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान वर्ष 2018-19 में वेतन बिलों की आंतरिक राशि में से वेतन माह दिसम्बर देय जनवरी से प्रारम्भ किया गया, उसी प्रकार वित्तीय वर्ष 2019-20 में वेतन माह दिसम्बर, 2019 देय जनवरी, 2020 की कटौती पूर्व निर्धारित प्रक्रिया एवं दर से की जानी है।

हितकारी निधि वार्षिक अंशदान वेतन माह दिसम्बर, 2019 देय जनवरी 2020 के सम्बन्ध में गत वर्ष की भाँति एक निर्देशिका इस पत्र के साथ संलग्न कर प्रेषित की जा रही है, अतः इस सम्बन्ध में कोषाधिकारी/उप-कोषाधिकारी से सम्पर्क कर कटौती सुनिश्चित कराएँ एवं उक्त समस्त दस्तावेज अपने अधीनस्थों को प्रेषित कर आवश्यक मार्ग निर्देश प्रदान करें। इस सम्बन्ध में यदि आवश्यक हो तो निम्न मोबाइल नम्बर पर डायल कर अतिरिक्त जानकारी प्राप्त की जा सकती है। 9461244803, 9461479245

● **वित्तीय सलाहकार,** माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

कार्यालय, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

हितकारी निधि का अंशदान वेतन माह दिसम्बर, 2019 भुगतान जनवरी, 2020 सीधे ही वेतन बिलों की आंतरिक राशि में से कटौती करने हेतु मार्ग निर्देशः-

1. वेतन माह दिसम्बर 2019 देय जनवरी 2020 हितकारी निधि अंशदान कटौती हेतु निदेशालय के परिपत्र का पूर्ण अवलोकन करें।
2. वार्षिक अंशदान परिपत्र अनुसार निर्धारित दर से किया जाना है।
3. प्रत्येक आहरण एवं वितरण अधिकारी साथ संलग्न (क्र. सं. 1) के अनुसार एक पत्र अपने कोषाधिकारी/उप कोषाधिकारी को प्रस्तुत करेंगे। उक्त पत्र के साथ निम्न दस्तावेज संलग्न किए जाए।

(1.) वेतन बिल के साथ (क्र. सं. 2) अनुसार प्रत्येक आहरण एवं वितरण अधिकारी द्वारा हितकारी निधि का कटौती शिड्यूल संलग्न किया जावें, जिसके अंत में डीडीओ के हस्ताक्षर मय कार्यालय मोहर एवं डीडीओ कोड अंकित किया जाए।

(2.) पत्र के साथ निदेशक, कोष एवं लेखा, राजस्थान, जयपुर के पत्रांक 15.3.2018 एवं 19.12.2018 (क्र.सं. 3,4) संलग्न करें।

(3.) पत्र के साथ हितकारी निधि खाता संख्या 51020721611 की बैंक पास बुक के प्रथम पृष्ठ की प्रति संलग्न करें। (क्र. सं. 05)

4. बिन्दु संख्या 03 में अवगत कराए अनुसार पत्रादि तैयार कर संबंधित कोषालय/उप-कोषालय में पत्र प्रस्तुत कर कटौती सुनिश्चित करें।
5. पे-मैनेजर पर Add. Group Dependent Deducation के माध्यम पर Add करवाकर कटौती करवाएँ।
6. दिसम्बर 2019 के वेतन बिल से कटौती हो जाने के पश्चात आप को अपने स्तर से कटौती के Option को डिलिट करना होगा, ताकि अगले माह पुनः कटौती ना हो जावें, इसका विशेष ध्यान रखा जावें, क्योंकि यह कटौती वार्षिक है।
7. दिसम्बर 2019 के वेतन से यदि किसी कारणवश वेतन आहरित नहीं हुआ है, जो जब भी दिसम्बर का वेतन आहरित हो उक्त प्रक्रिया से ही कटौती की जावे।
8. वेतन विपत्र से कटौती दिसम्बर 2019 देय जनवरी, 2020 के वेतन से ही अनिवार्य रूप से की जानी है, यदि कटौती नहीं होती है तो हितकारी निधि की लाभकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त नहीं हो सकेगा।
9. वेतन विपत्र पारित होने के उपरान्त हितकारी निधि अंशदान कटौती के शिड्यूल एवं ई.सी.एस. कैश बुक की एक प्रति हस्ताक्षरित प्रति, अध्यक्ष हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर के नाम से प्रेषित करें, ताकि जमा राशि का मिलान किया जा सके।
10. पी.डी. खाते से जिनका वेतन आहरण किया जाता है, इस सम्बन्ध में वेतन आहरण अधिकारी ही शिड्यूल एवं ई.सी.एस. प्रति भिजवाने हेतु जिम्मेदार होंगे।

कोषाधिकारी/उप कोषाधिकारी ....

विषयः Add Group Dependent Deducation में कटौती शुरू करवाने बाबत।

महोदय,

1. उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि माह दिसम्बर 2019 का वेतन जो माह जनवरी, 2020 में देय होगा जिसमें समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों के वेतन से हितकारी निधि फण्ड के लिए वार्षिक अंशदान की कटौती की जानी है। उक्त कटौती पै-मेनेजर में Add Group Dependent Deducation से की जानी है।
2. इस प्रकार से काटी गई राशि हितकारी निधि में निम्नानुसार जमा की जानी है।

01	Bank Account No.	51020721611
02	Bank IFSC Code	SBIN0031347
03	Bank Branch	के.ई.एम. रोड, शाखा, बीकानेर

3. वर्तमान में Add Group Dependent Deducation में कटौती वर्ष 2018-19 से प्रारंभ की गई है, अतः पूर्वानुसार कृपया Add Group Dependent Deducation में कटौती शुरू करवाने का श्रम करावें। इस कार्यालय की ऑफिस आई.डी.............है।

क्र.सं.	ग्रुप का नाम जिसमें कटौती की जानी है।
01	हितकारी निधि

हस्ताक्षर :-......................

DDO:-..................................

Code No:-..............................

अध्यक्ष हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

Page No. 1

Office Name:- DDO Coade:-

Month:- Bill No. & Date:-

Sr. No.	Employee ID	Name of Employee	A/C No.	Designation	Deduction Amount
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		

			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
			51020721611		
Grand Total					

Rupees in Words:

4. Add Group Dependent Deducation में कटौती शुरू करवाने के संबंध में।

● राजस्थान सरकार ● निदेशालय कोष एवं लेखा राजस्थान, जयपुर ● क्रमांक : एफ.5 (थ-75) कोष/IFMS/Paymanager/21318 दिनांकः 15.03.2018 ● निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● विषयः Add Group Dependent Deducation में कटौती शुरू करवाने के संबंध में। ● संदर्भः आपका पत्र दिनांक 07.02.2018

महोदय,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत आपके संदर्भित पत्र द्वारा Add Group Dependent Deducation Pay Manager System में हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान आहरण एवं वितरण अधिकारियों के मार्फत वेतन बिलों की आंतरिक राशि में से कटौती कर एस.बी.आई. खाता संख्या 51020721611 में जमा करवाने का विकल्प उपलब्ध करवाने का अनुरोध किया गया है।

इस संबंध में लेख है कि उक्त सुविधा कोषाधिकारी लॉगिन में उपलब्ध है। अतः तदनुसार संबंधित कोषाधिकारी से सम्पर्क कर वांछित कार्यवाही करवाया जाना अपेक्षित हैं।

● **(मंजुला वर्मा)** निदेशक

5. शिक्षा विभाग के कार्मिकों के वेतन में हितकारी निधि डिडक्शन जोड़ने के क्रम में।

● राजस्थान सरकार ● निदेशालय कोष एवं लेखा राजस्थान, जयपुर ● क्रमांक : एफ.5 (थ-75) कोष/IFMS/पे-मैनेजर/9966-10006 दिनांकः 19.12.2018 ● कोषाधिकारी समस्त ● विषयः शिक्षा विभाग के कार्मिकों के वेतन में हितकारी निधि डिडक्शन जोड़ने के क्रम में।

महोदय,

विषयान्तर्गत लेख है कि शिक्षा विभाग के कार्मिकों के वेतन से हितकारी निधि की डिडक्शन (जो माह दिसम्बर देय माह जनवरी के वेतन से की जानी है) जोड़ने को को-ऑपरेटिव डिडक्शन के रूप में जोड़ने की सुविधा डीडीओ लॉगिन में उपलब्ध है, जिसका पाथ निम्नानुसार हैः-

DDO Login- Deducation Master - Co-Operative deducation

अतः संबंधित डीडीओ अपने स्तर से उक्त डिडक्शन को जोड़े जाने हेतु निर्देशित करें।

(अमिता शर्मा) अतिरिक्त निदेशक (IFMS)

6. 2019-20 के लिए हितकारी निधि वार्षिक अंशदान बाबत।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा./हि.नि./28203/2019-20 दिनांकः 04.11.2019 ● निदेशक, समग्र शिक्षा, स्कूल शिक्षा विभाग, शिक्षा संकुल, जयपुर; समस्त संयुक्त निदेशक, शिक्षा विभाग; समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी; समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) (माध्यमिक/प्रारंभिक); समस्त डाईट प्राचार्य; समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी; समस्त विशिष्ट संस्थाएँ; पंजीयक कार्यालय ● विषयः 2019-20 के लिए हितकारी निधि वार्षिक अंशदान बाबत।

राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.21(7) शिक्षा-2/हितकारी निधि/2017 दिनांक 15.06.2018 के द्वारा अनुमोदन उपरान्त हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान वर्ष 2019-20 का शिक्षा विभाग के समस्त राजपत्रित एवं अराजपत्रित संवर्ग के कार्मिकों के वेतन विपत्र माह दिसम्बर, 2019 देय जनवरी, 2020 पूर्व निर्धारित दर से कटौती कर भिजवाया जाना है, वेतन से कटौती बाबत दिशा निर्देश इस कार्यालय के पत्र दिनांक 30.10.2019 द्वारा जरिए मेल प्रेषित किए जा चुके हैं, अतः समस्त आहरण वितरण अधिकारी अपने अधीनस्थ समस्त कार्मिकों के वेतन से कटौती की जानी सुनिश्चित करें।

राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित वार्षिक अंशदान की दरेंः-

1. समस्त राजपत्रित अधिकारी (स्कूल व्याख्याता सहित)-रुपये 500/- प्रतिवर्ष
2. समस्त अराजपत्रित कार्मिक (अध्यापक एवं सहायक कर्मचारी सहित)-रुपये 250/- प्रतिवर्ष

हितकारी निधि कल्याणकारी योजनाएँः-

इस कल्याणकारी योजनान्तर्गत प्राप्त अंशदान राशि में से 2018-19 से नियमित अंशदाता को ही लाभ प्राप्त हो सकेगा।

1. सेवा में रहते कार्मिक के निधन पर उसके आश्रितों द्वारा आवेदन करने पर आर्थिक सहायता-1,50,000/-
2. शिक्षा विभाग के कार्मिकों के 200 बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर सहायता-10,000/-
3. शिक्षा विभागीय कार्मिक एवं उसके आश्रित के असाध्य रोग से पीड़ित होने पर अधिकतम सहायता-20,000/-
4. एक मुश्त छात्रवृत्ति योजनान्तर्गत शिक्षा कर्मियों के पुत्र/पुत्री के राजकीय विद्यालय में अध्ययन करते हुए 70 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त करने पर छात्रवृत्ति। (राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा आयोजित कक्षा 10 के 950 एवं 50 वरिष्ठ उपाध्याय, संस्कृत के छात्र/छात्राओं को)-11,000/-
5. बालिका उपहार योजान्तर्गत (सेवाकाल में एक बार) पुत्री के विवाह पर प्रतिवर्ष 500 प्रकरणों में- 11,000/-
6. मंत्रालयिक एवं च.श्रे.कर्म. को भारत भ्रमण सुविधा के तहत राज्य/राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित होने पर अधिकतम सहायता-12,000/-
7. (01) खेलकूद प्रतियोगिताओं में शिक्षाकर्मी के पुत्र/पुत्री के राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर-10,000/-
   (02) खेलकूद प्रतियोगिताओं में शिक्षाकर्मी के पुत्र/पुत्री के राज्य स्तर पर प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर-5,000/-
8. बालिका शिक्षा हेतु ऋण-50,000/-

हितकारी निधि की सफलता के लिए आपके अधीनस्थ कार्यालयों/विद्यालयों में इस पत्र की प्रतिलिपि मय आपके निर्देशों के भिजवाएं, ताकि सफल परिणाम प्राप्त हो सकें। अंशदान की कटौती होने के पश्चात निर्देशानुसार ECS Cash Book एवं कटौती शिड्यूल की प्रति अध्यक्ष, हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम से भिजवायी जानी है, कटौती शिड्यूल में कार्मिक के I.D. संख्या का आवश्यक रूप से उल्लेख करें, क्योंकि यही I.D. कार्मिक का खाता संख्या है, तदनुसार खातों में प्रविष्टियाँ की जाएगी।

अतः समस्त आहरण वितरण अधिकारी, हितकारी निधि अंशदान माह दिसम्बर, 2019 देय वेतन जनवरी, 2020 का निर्देशानुसार वेतन से कटौती कर भिजवाया जाना सुनिश्चित करें।

● **(नथमल डिडेल)** IAS निदेशक माध्यमिक शिक्षा एवं अध्यक्ष हितकारी निधि राजस्थान, बीकानेर

7. राज्य सरकार के अनुमोदन उपरान्त हितकारी निधि समिति द्वारा लिए गए निर्णयानुसार नवीन योजनाओं का शुभारंभ एवं पूर्व में चल रही योजनाओं में सहायता राशि में बढ़ोतरी।

● कार्यालय, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः- शिविरा/मा./हि.नि./28519/2019 दिनांक 04.11.2019 ● कार्यालय आदेश ● राज्य सरकार के अनुमोदन उपरान्त हितकारी निधि समिति द्वारा लिए गए निर्णयानुसार नवीन योजनाओं का शुभारंभ एवं पूर्व में चल रही योजनाओं में सहायता राशि में बढ़ोतरी।

राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.21(7) शिक्षा-2/हितकारी निधि/2017 दिनांक 22.10.2019 के द्वारा अनुमोदन उपरान्त हितकारी निधि समिति द्वारा लिए गए निर्णयानुसार नवीन योजनाओं का शुभारम्भ एवं पूर्व में चल रही योजनाओं में सहायता राशि में बढ़ोतरी के आदेश निम्नानुसार प्रसारित किए जाते हैं :-

बालिका उपहार योजना:- हितकारी निधि नियम 13 (घ)(1) अनुसार शिक्षा विभाग में कार्यरत समस्त श्रेणी के कर्मचारियों को पुत्री के विवाह पर 11,000/- रुपये (सेवाकाल में एक बार) प्रत्येक वित्तीय वर्ष में 500 प्रकरणों में यह लाभ प्रदान किया जा सकेगा। योजना विज्ञप्ति जारी होने के दिनांक से लागू होगी।

एक मुश्त छात्रवृत्ति योजनाः- हितकारी निधि नियम 13 (ड़) अनुसार इस योजनान्तर्गत सभी श्रेणी के शिक्षाकर्मियों के पुत्र या पुत्री जिन्होंने राजकीय विद्यालय में अध्ययन करते हुए, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा आयोजित कक्षा 10 की परीक्षा में 70 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त किए हैं, उन्हें 11,000/- रुपये एकमुश्त छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान किए जाएँगें। यह लाभ 950 सैकेण्डरी के छात्र/छात्राएँ एवं 50 छात्र/छात्राएँ वरिष्ठ उपाध्याय (संस्कृत शिक्षा) को देय होगा, यह योजना सत्र 2019-20 के परीक्षा परिणाम पर देय होगी।

व्यावसायिक शिक्षा :- हितकारी निधि नियम 13 (ग) के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा में पूर्व से लागू 5000 एवं 10,000 दो दरों के स्थान पर अब समान रूप से एक दर 10,000/- रुपये की सहायता राशि देय होगी।

चिकित्सा व्यय :- हितकारी निधि नियम 03 (घ) के अनुसार वर्तमान में गंभीर प्रकृति की बीमारियों/असाध्य रोग, लम्बे समय तक चिकित्सालय में भर्ती रहने वाले शिक्षा विभाग के कार्मिक या उनके आश्रित को राज्य सरकार के नियमों के अनुसार पुनर्भरण के पश्चात् शेष रही राशि देय होगी जिसकी अधिकतम सीमा 20,000/- रुपये होगी।

मंत्रालयिक एवं च.श्रे.कर्म. वर्ग को भारत भ्रमण सुविधाः- हितकारी निधि नियम 03 (छ) के अनुसार शिक्षा विभाग के मंत्रालयिक कर्मचारी/च.श्रे.कर्म. एवं अन्य कार्मिकों पति-पत्नी सहित (अध्यापक वर्ग को छोड़कर, उन्हें यह सुविधा राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान से पूर्व से ही दी जा रही है।) जो राज्य स्तर/राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित हो, उन्हें 14 दिवस का स्वयं का अवकाश स्वीकृति उपरान्त भारत भ्रमण हेतु अधिकतम 12,000/- रुपये सहायता राशि प्रदान की जा सकेगी, जिसमें यात्रा एवं भोजन व्यय शामिल होगा। यह योजना सत्र 2019-20 से लागू होगी।

खेलकूद प्रतियोगिता पुरस्कारः- हितकारी निधि नियम 3 (छ) अनुसार शिक्षा विभाग के कार्मिकों के बच्चे जिन्हें राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ हो, उन्हें 5,000/- रुपये एवं राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त होने पर 11,000/- रुपये की राशि प्रदान की जाएगी। यह योजना सत्र 2019-20 से लागू होगी।

उपर्युक्त समस्त योजनाओं के लिए अलग-अलग आवेदन पत्र/विज्ञप्ति विभाग की वेब-साईट एवं जिला शिक्षा अधिकरियों को भेजे जाएँगें, तदनुसार निश्चित प्रक्रिया उपरान्त सहायता राशि प्रदान की जा सकेगी।

उपर्युक्त समस्त योजनाओं का लाभ 2018-19 से जो हितकारी निधि के नियमित अंशदाता है, उन्हें प्रदान किया जाएगा।

● **(नथमल डिडेल) IAS** निदेशक माध्यमिक शिक्षा एवं अध्यक्ष हितकारी निधि राजस्थान, बीकानेर।

8. राज्य स्तरीय वरिष्ठता सूची में योग्यता अभिवृद्धि, विलोपन, नामांकन, जन्मतिथि में संशोधन व अन्य संशोधन के संबंध में पुनः निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/संस्था/वरि./के-2/11968/मानदण्ड/18-19 दिनांक : 04.11.2019 ● परिपत्र ● राज्य स्तरीय वरिष्ठता सूची में योग्यता अभिवृद्धि, विलोपन, नामांकन, जन्मतिथि में संशोधन व अन्य संशोधन के संबंध में पुनः निर्देश।

विभाग द्वारा जारी पूर्व वर्षो की राज्यस्तरीय वरिष्ठता सूचियों में संशोधन के प्रस्ताव निरन्तर प्राप्त हो रह हैं जिनके कारण नियमित वरिष्ठता सूचियों के निर्माण का कार्य बाधित हो रहा है। साथ ही कार्मिकों के योग्यता अर्जित करने के काफी सालों बाद उनकी योग्यता अभिवृद्धि के प्रस्ताव विलम्ब से प्रेषित किये जाने के कारण रिव्यू डीपीसी के प्रकरणों की संख्या में अनावश्यक वृद्धि हो रही है। अतः इस संबंध में पुनः निर्देश जारी किए जाते हैं :-

योग्यता अभिवृद्धि :- स्थाई वरिष्ठता सूची जारी होने के पश्चात यदि कोई कार्मिक शैक्षिक/प्रशैक्षिक योग्यताओं में नियमानुसार (मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से) अभिवृद्धि करता है तो निर्धारित प्रपत्र में प्रकरण सक्षम अधिकारी को उचित माध्यम से प्रार्थना-पत्र योग्यता धारण करने के छः माह के भीतर प्रस्तुत कर देवें। सक्षम अधिकारी ऐसे प्रकरणों की जाँच पश्चात तीन माह में आदेश जारी कर द्वितीय श्रेणी अध्यापक/समकक्ष पद

की योग्यता अभिवृद्धि संभाग स्तरीय वरिष्ठता सूची में दर्ज कर तदनुसार आदेश निदेशालय को भेजेंगे तथा व्याख्याता (स्कूल शिक्षा) एवं समकक्ष पदों से लेकर प्रधानाचार्य उमावि एवं समकक्ष पदों के कार्मिकों के प्रकरण संबंधित संभाग कार्यालय निदेशालय के संस्थापन एबी एवं संस्थापन सी अनुभाग को प्रेषित करेंगे। इन अनुभागों द्वारा परीक्षणोपरान्त प्रकरण अभिशंषा सहित वरिष्ठता अनुभाग को प्रेषित किए जाएंगे। वरिष्ठ अध्यापक एवं समकक्ष पदों पर सीधी भर्ती के समय कार्मिक द्वारा अपने आवेदन-पत्र में जो योग्यता अंकित की है उसका उल्लेख मण्डल स्तर की वरिष्ठता सूची में अवश्य किया जाए।

इस सम्बन्ध में निर्देश दिए जाते हैं कि निदेशालय द्वारा तृतीय वेतन शृंखला अध्यापकों की नियुक्ति हेतु मण्डल आवंटन के समय जो संबंधित अभ्यर्थियों के मूल आवेदन पत्र संभाग कार्यालय को भिजवाये जाते हैं, उन आवेदन पत्रों के आधार पर संभाग कार्यालय की संस्थापन शाखा ऐसा अभिलेख संधारित करें जिसमें आवेदन पत्र में अंकित सम्पूर्ण विवरण यथा- अभ्यर्थी का नाम, पिता/पति का नाम, जन्मतिथि, वर्ग (अजा/अजजा/अन्य पिछड़ा वर्ग/अति पिछड़ा वर्ग आदि), श्रेणी (विधवा/परित्यक्ता/विकलांग/भूपू सैनिक आदि), शैक्षिक एवं प्रशैक्षिक योग्यताएँ (शैक्षिक एवं प्रशैक्षिक योग्यता का नाम, उत्तीर्ण वर्ष, ऐच्छिक विषय, सम्बद्ध बोर्ड/विश्वविद्यालय का नाम आदि) आदि अन्य विवरण जो संस्थापन सूचना हेतु आवश्यक हो एक रजिस्टर में संधारित किया जाए। जब संबंधित वर्ष की वरिष्ठता सूची तैयार की जानी हो तो संभाग कार्यालय की संस्थापन शाखा संधारित रजिस्टर के अनुसार इस कार्यालय की वरिष्ठता शाखा को वरिष्ठता से संबंधित सम्पूर्ण विवरण उपलब्ध करावें ताकि नियुक्ति पर कार्यग्रहण करने वाला कोई अभ्यर्थी वरिष्ठता सूची में सम्मिलित होने से वंचित नहीं रहे।

जो अभ्यर्थी नियुक्ति के उपरान्त कोई शैक्षिक/प्रशैक्षिक योग्यता अर्जित करते हैं तो उन अभ्यार्थियों का यह दायित्व है कि तत्काल अर्जित योग्यता को वरिष्ठता सूची में दर्ज करने हेतु संबंधित संस्था प्रधान के माध्यम से संभाग कार्यालय को निर्धारित प्रपत्र में आवेदन प्रस्तुत करें। संभाग कार्यालय तत्काल इन योग्यताओं को वरिष्ठता सूची में दर्ज करने संबंधी कार्यवाही करें। ऐसे कई प्रकरण ध्यान में आए हैं कि वरिष्ठता सूची जारी होने की तिथि से पूर्व एवं नियुक्ति प्राप्त करने के पश्चात अर्जित की गई योग्यताओं का अंकन अब वरिष्ठता सूचियों में किया जा रहा है, यह स्थिति कतई उचित नहीं मानी जा सकती क्योंकि विभाग स्तर पर पहले स्तर की अस्थाई वरिष्ठता सूची जारी कर आपत्ति प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया जाता है एवं फिर राज्य स्तरीय अस्थाई वरिष्ठता सूची जारी कर आपत्ति प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया जाता है। यदि अभ्यर्थी द्वारा उस समय कोई आपत्ति प्रस्तुत नहीं की जाती एवं काफी समय बाद ऐसी योग्यता अंकन का प्रकरण प्रस्तुत किया जाता है तो ऐसी स्थिति में योग्यता अंकन विलम्ब से करने हेतु विभाग उत्तरदायी नहीं माना जाएगा, वरन संबंधित अभ्यर्थी ही उत्तरदायी माना जाएगा। इस प्रकार के प्रकरणों में यह शर्त अवश्य अंकित की जावे कि योग्यता का लाभ वरिष्ठता सूची में योग्यता अंकन करने सम्बन्धी प्रसारित किए जाने वाले आदेश की तिथि से देय होगा।

संभाग कार्यालय अधीनस्थ विद्यालयों के संस्था प्रधानों को इस आशय का परिपत्र जारी कर प्रचार-प्रसार करें की वर्ष 2014-15 से पूर्व की वरिष्ठता सूची में अंकित कार्मिक के द्वारा समस्त योग्यताओं का इन्द्राज वरिष्ठता सूची में है यदि अर्जित योग्यता का इन्द्राज वरिष्ठता सूची में नहीं है तो अविलम्ब योग्यता का अंकन करवावें। वरिष्ठ अध्यापक पद की वर्ष 2014-15 से पूर्व की वरिष्ठता सूचियों में योग्यता अभिवृद्धि जोड़ने हेतु अन्तिम दिनांक 20.12.19 निर्धारित की जाती है। इस तिथि के पश्चात् किसी भी वरिष्ठ अध्यापक की योग्यता अभिवृद्धि के सम्भाग स्तर से आदेश जारी किए जाते हैं तो इसकी समस्त जिम्मेदारी संभाग कार्यालय/अभ्यर्थी की होगी।

विलोपन :- अध्यापक/वरिष्ठ अध्यापक एवं समकक्ष पदों पर किसी भी कार्मिक की वरिष्ठता विलोपन होने के निम्न कारण हो सकते हैं यथा मण्डल से स्थानान्तरण होना, कार्मिक द्वारा स्वैच्छिक सेवानिवृति लेना, वर्तमान सेवा छोड़ देना, किसी अन्य विभाग में नियुक्त होना, कार्मिक की मृत्यु होना एवं अन्य कारण जिससे वरिष्ठता विलोपित होती है।

प्रायः यह देखने में आया है कि उपर्युक्त कारणों से कार्मिक की वरिष्ठता विलोपित होती है, लेकिन संभाग कार्यालयों द्वारा समय पर यह कार्यवाही नहीं की जाती है। वर्षवार डीपीसी की बैठक आयोजित करने के समय वरिष्ठता विलोपित नहीं किए जाने के फलस्वरूप इनका प्रथमतः डीपीसी में चयन कर लिया जाता है, इस प्रकार के चयन से वरिष्ठतम कार्मिक चयनित नहीं हो पाते उनके द्वारा परिवेदना प्रस्तुत करने पर ऐसे प्रकरण ज्ञात होने पर रिव्यू डीपीसी में इनके चयन को निरस्त करना पड़ता है इस प्रकार विभाग को दोहरी कार्यवाही करनी पड़ती है। अतः संभाग कार्यालय के अधीन कार्यरत वरिष्ठ अध्यापक एवं समकक्ष पदों पर कार्यरत यदि किसी कारण से कार्मिक की वरिष्ठता विलोपित होती है तो समय पर परीक्षण कर संभागीय कार्यालय की वरिष्ठता सूची में विलोपित की कार्यवाही की जावे एवं इसके प्रस्ताव प्रपत्र में निदेशालय को भिजवाना सुनिश्चित करावें। व्याख्याता (स्कूल शिक्षा), प्रधानाध्यापक (मावि) एवं प्रधानाचार्य उमावि पदों की वरिष्ठता सूचियों में विलोपन हेतु निदेशालय स्तर पर जारी आदेशों में कार्मिक की वरिष्ठता क्रमांक एवं जन्मतिथि का अंकन आवश्यक रूप से किया जाए।

नामांकन :- किसी वर्ष की स्थाई वरिष्ठता सूची प्रकाशित होने के उपरान्त निदेशालय को संभाग कार्यालय से पूर्व वर्षों के अनेक नामांकन के प्रकरण प्राप्त होते हैं जो कदापि उचित नहीं है। किसी कार्मिक के नवीन नामांकन के कारण यथा रिव्यू डीपीसी से पूर्व वर्ष में चयन होना, अन्तर मंडल स्थानान्तरण के कारण नवीन मंडल में कार्यग्रहण करना हो सकते हैं। यदि रिव्यू डीपीसी से चयन एवं अन्तर मण्डल स्थानान्तरण नहीं होने के उपरान्त भी नवीन नामांकन हेतु निदेशालय को प्रस्ताव प्राप्त होते हैं तो यह स्पष्ट है कि संभाग कार्यालय द्वारा संभागीय वरिष्ठता सूची जारी करते समय कोताही अथवा उदासीनता बरती गई है जिसके कारण किसी कार्मिक का पूर्व वर्षों की वरिष्ठता सूची में नामांकन नहीं हुआ हैं अतः इस संबंध में संभाग कार्यालयों को निर्देशित किया जाता है कि वे ऐसे प्रकरणों को चिह्नित कर उनके नामांकन की कार्यवाही दिनांक 20.12.2019 तक आवश्यक रूप से कर निदेशालय को प्रस्ताव भिजवा देवें। इस तिथि के पश्चात वर्ष 2014-15 से पूर्व की वरिष्ठता सूची में नामांकन का प्रकरण स्वीकार्य नहीं होगा।

संभाग कार्यालय एक संभाग से दूसरे संभाग में स्थानान्तरण प्रकरणों में नवीन नामांकन से पूर्व यह सुनिश्चित करेंगे कि कार्मिक की पूर्व संभाग की वरिष्ठता के विलोपन की कार्यवाही हो चुकी है जो संभाग वरिष्ठता विलोपन की कार्यवाही करता है उसका यह दायित्व होगा कि वह संबंधित संभाग को वरिष्ठता विलोपन आदेश सहित प्रपत्र-6 तत्काल उपलब्ध कराए ताकि नये संभाग में संबंधित के नामांकन की कार्यवाही प्रपत्र-6 प्राप्त होने के उपरान्त एक सप्ताह में आवश्यक रूप से सम्पन्न की जा सकें। इस प्रकार के प्रकरणों में एक संभाग कार्यालय दूसरे संभाग कार्यालय को उक्तानुसार कार्यवाही किये जाने हेतु वांछित आदेशों की प्रतियाँ आवश्यक रूप से एक दूसरे को प्रेषित कर नामांकन/विलोपन की कार्यवाही तत्परता के साथ तत्काल हो, ऐसी व्यवस्था सुनिश्चित करें।

जन्मतिथि में संशोधन :- वरिष्ठ अध्यापक/समकक्ष पदों की वरिष्ठता सूची बनाते समय मंडल अधिकारी सीधी भर्ती के प्रकरणों में आवेदन पत्र/प्रथम नियुक्ति आदेश में अंकित तिथि का ही अंकन वरिष्ठता सूची में कार्मिक के आगे अंकित की जावे तथा डी.पी.सी. के प्रकरणों में तृतीय वेतन शृंखला में जो जन्मतिथि अंकित है वही वरिष्ठ अध्यापक की मंडल स्तरीय वरिष्ठता सूची में अंकित की जावें किसी अपरिहार्य कारण/त्रुटि से जन्मतिथि में हुई गलती से संशोधन हेतु मंडल अधिकारी वरिष्ठ अध्यापक समकक्ष पदों की जन्मतिथि संशोधन मंडल स्तरीय वरिष्ठता सूची में संशोधन करने से पूर्व कार्मिक का प्रथम नियुक्ति आदेश एवं सैकण्डरी का मूल सर्टिफिकेट एवं प्रथम नियुक्ति के समय प्रस्तुत प्रमाण पत्र अवश्य देखे एवं मंडल स्तरीय वरिष्ठता सूची में जांच के बाद संशोधन कर निदेशालय को प्रस्ताव भेजे उसमें यदि त्रुटिवश भूल हुई हो तो इसका उल्लेख करें कहाँ किस स्तर पर गलती हुई, कौन जिम्मेदार है, दोषी के विरूद्ध कार्यवाही कर/प्रस्तावित कर प्रकरण भिजवावें एवं उसमें स्पष्ट लिखें कि कार्मिक के मूल अभिलेख एवं प्रथम नियुक्ति आदेश देख कर ही जन्मतिथि संशोधन का प्रस्ताव भिजवाया जा रहा है।

अन्य संशोधन :- स्थाई वरिष्ठता सूची में नाम, उपनाम, वरिष्ठता क्रमांक आदि के संशोधन जिला/मंडल स्तरीय वरिष्ठता सूची में करने से पूर्व सक्षम अधिकारी मूल अभिलेखों से मिलान कर प्रकरण की पूर्ण रूप से जांच कर संशोधन करें एवं निदेशालय को प्रस्ताव भेजते समय अग्रेषित पत्र में स्पष्ट रूप से यह अंकित किया जाए कि संशोधन करने का क्या औचित्य है ? अब तक संशोधन करने हेतु विलम्ब किस स्तर पर हुआ (कार्मिक स्तर पर/सक्षम अधिकारी स्तर पर) तथा दोषी कौन है ? दोषी के विरूद्ध क्या कार्यवाही की गई ? पूर्ण विवरण सहित संशोधन कर राज्य स्तरीय वरिष्ठता सूची में संशोधन करने के प्रस्ताव भिजवावे।

न्यायालय निर्णय/अंतर जिला/मंडल स्थानांतरण के प्रकरण में कार्यवाही निर्णय रूप से जारी रखी जावे एवं शेष प्रकरणों में स्थाई वरिष्ठता सूचियों में योग्यता अभिवृद्धि/नामांकन/विलोपन/जन्मतिथि संशोधन नाम, उपनाम, संशोधन/अनुसूचित जाति/जनजाति अंकन/वरिष्ठता क्रमांक में संशोधन सक्षम अधिकारी उक्त निर्देशों की पालना करते हुए मंडल स्तरीय वरिष्ठता सूची में अंकन कर प्रस्ताव 20.12.19 तक निदेशालय को भिजवा दें उसके बाद भी कोई प्रकरण रह जाता है तो उसके लिए संबंधित कार्मिक/अधिकारी दोषी होगा। समस्त संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा/जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) उक्त निर्देशों को अपने अधीनस्थ कार्यालयों को, संस्थाओं को जारी कर पालना करवाऐं।

उक्त क्रम से विभाग के सभी कार्मिकों को भी निर्देशित किया जाता है कि वे अपने संबंधित वर्ष की वरिष्ठता सूची में अपने नामांकन की पुष्टि करें तथा किसी प्रकार का संशोधन/विलोपन/योग्यता अभिवृद्धि की स्थिति उत्पन्न हो तो संस्था प्रधान के माध्यम से संबंधित कार्यालय को अपना आवेदन प्रस्तुत करें ताकि निर्धारित तिथि तक संभाग कार्यालय द्वारा प्रस्ताव निदेशालय को प्रेषित कराये जा सकें।

● **(नथमल डिडेल)** IAS, **निदेशक** माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

9. राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संस्था प्रधानों को बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सार्थक कार्य योजना बनाकर क्रियान्विति सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित करने बाबत।

● कार्यालय, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः- शिविरा-मा/माध्य/निप्र/नवाचार/2017-19/145 दिनांकः 13.11.2019 ● 1. समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा। 2. समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा अभियान। 3. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक। 4. समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं ब्लॉक संदर्भ केन्द्र प्रभारी, समग्र शिक्षा अभियान। ● विषयः राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संस्था प्रधानों को बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सार्थक कार्य योजना बनाकर क्रियान्विति सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित करने बाबत। ● प्रसंगः पूर्व प्रेषित निर्देश पत्र क्रमांकः शिविरा/मा/माध्य/मोनिटरिंग/बोर्ड परीक्षा/2019/25 दिनांकः 24.09.2019।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत इस कार्यालय के पूर्व प्रेषित प्रासंगिक पत्र द्वारा बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन के लिए गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने हेतु माह वार पाठ्यक्रम विभाजन, गृह कार्य जाँच एवं मासिक परख (Monthly Test) आयोजित करने बाबत निर्देश प्रदान किए गए थे। जैसा कि आपको विदित है कि शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु लागू की गई विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं एवं उठाए गए सकारात्मक कदमों के प्रतिफल में विगत वर्षों में बोर्ड परीक्षा परिणाम में मात्रात्मक एवं गुणात्मक रूप से उत्तरोत्तर सुधार परिलक्षित हुआ है, बावजूद इसके राज्य के बहुत से विद्यालयों में पृथक-पृथक कारणों से विगत वर्ष कक्षा-10 एवं 12 का बोर्ड परीक्षा परिणाम विभाग द्वारा निर्धारित मानदण्डों से भी न्यून रहा है, जिनके परीक्षा परिणाम में सुधार हेतु विशिष्ट प्रयास अपेक्षित है।

1. निर्धारित मानदण्डों से न्यून परीक्षा परिणाम वाले विद्यालयों हेतु विशिष्ट कार्य योजनाः- वर्ष 2019 की उच्च माध्यमिक परीक्षा में सम्पूर्ण राज्य में 459 विद्यालयों (कला वर्ग-370, वाणिज्य वर्ग-44, विज्ञान वर्ग-45) का परीक्षा परिणाम प्रतिशत निर्धारित मानदण्डों से न्यून रहा है, वहीं माध्यमिक परीक्षा में ऐसे विद्यालयों की कुल संख्या 1240 है। एतदर्थ प्रदेश में 1699 (459+1240) राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक गुणवत्ता का स्तर न्यूनतम निर्धारित मानदण्डों से भी न्यून स्तर पर है, अतः सम्बन्धित पर्यवेक्षण अधिकारियों द्वारा उक्त समस्त विद्यालयों हेतु बकाया समयावधि में बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन की विशिष्ट कार्य योजना निर्मित

करवाई जाएगी, जिसकी सतत क्रियान्विति/प्रगति समीक्षा मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय द्वारा एवं जि.शि.अ. (मुख्यालय)–माध्यमिक कार्यालय के शैक्षिक प्रकोष्ठ द्वारा सहायक के रूप में बोर्ड परीक्षा प्रारम्भ होने तक की जानी सुनिश्चित की जाएगी। निर्धारित मानदण्डों से न्यून बोर्ड परीक्षा परिणाम वाले विद्यालयों का जिलेवार विवरण अग्रांकित सारणी के अनुसार न्यून बोर्ड परीक्षा हैः

बोर्ड परीक्षा–2019 में निर्धारित मानदण्डों से न्यून परीक्षा परिणाम वाले राजकीय विद्यालयों का जिलेवार संख्यात्मक विवरण

क्र.सं.	जिला कोड	जिला	माध्यमिक परीक्षा में न्यून परिणाम वाले विद्यालयों की संख्या	उच्च माध्यमिक परीक्षा में न्यून परिणाम वाले विद्यालयों की संख्या				कुल विद्यालय
				कला वर्ग	वाणिज्य वर्ग	विज्ञान वर्ग	कुल	
1	01	अजमेर	33	5	2	2	9	42
2	02	अलवर	70	21	1	5	27	97
3	03	बाँसवाड़ा	50	27	1	0	28	78
4	29	बाँरा	23	11	0	1	12	35
5	04	बाड़मेर	55	16	0	3	19	74
6	05	भरतपुर	53	25	3	6	34	87
7	06	भीलवाड़ा	49	5	2	0	7	56
8	07	बीकानेर	33	7	0	2	9	42
9	08	बूँदी	16	0	0	0	0	16
10	09	चित्तौड़गढ़	45	5	3	2	10	55
11	10	चूरू	24	4	1	0	5	29
12	28	दौसा	18	15	1	2	18	36
13	27	धौलपुर	33	15	1	0	16	49
14	11	डूँगरपुर	29	24	1	2	27	56
15	31	हनुमानगढ़	18	7	1	1	9	27
16	12	जयपुर	59	15	7	3	25	84
17	13	जैसलमेर	19	8	0	0	8	27
18	14	जालौर	39	5	1	2	8	47
19	16	झालावाड़	23	8	1	0	9	32
20	15	झुंझुनूं	8	14	0	2	16	24
21	17	जोधपुर	46	6	2	1	9	55
22	32	करौली	42	8	1	1	10	52
23	18	कोटा	30	12	1	0	13	43
24	19	नागौर	45	12	4	5	21	66
25	20	पाली	47	8	1	0	9	56
26	33	प्रतापगढ़	40	18	1	1	20	60
27	30	राजसमंद	22	9	0	1	10	32
28	21	सवाई माधोपुर	36	5	4	1	10	46
29	22	सीकर	14	10	2	2	14	28
30	23	सिरोही	37	3	0	0	3	40
31	24	श्रीगंगानगर	23	5	0	0	5	28
32	25	टोंक	30	11	0	0	11	41
33	26	उदयपुर	131	26	2	0	28	159
		महायोग	**1240**	**370**	**44**	**45**	**459**	**1699**

2. सम्बन्धित मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय द्वारा अपने जिले में उपर्युक्त सारणी में प्रदर्शित न्यून परीक्षा परिणाम वाले विद्यालयों को तत्काल चिह्नित करते हुए आगामी बोर्ड परीक्षा में उक्त विद्यालयों के परीक्षा परिणाम उन्नयन की सुनिश्चितता हेतु निम्नांकित निर्देशों की पालना करते हुए ठोस कार्य योजना निर्मित कर क्रियान्विति सुनिश्चित की जाएगीः-

i. न्यून परीक्षा परिणाम वाले समस्त विद्यालयों को ब्लॉकवार चिह्नित कर सर्वप्रथम मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारियों की बैठक आयोजित की जाकर उक्त समस्त विद्यालयों को समान रूप से विभाजित कर परीक्षा परिणाम सुधार हेतु ब्लॉक कार्यालय में कार्यरत ACBEO तथा उनके अधीनस्थ कार्यरत RP को गोद दिया जाएगा। जिन जिलों में ऐसे विद्यालयों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है, वहाँ DEO(HQ)-SEC तथा SmSA के जिला कार्यालय में पदस्थापित ADEO / APC & PO तथा संभाग मुख्यालय के जिले से सम्बन्धित विद्यालयों हेतु RANGE JD. SCHOOL EDUCATION कार्यालय में पदस्थापित ADEO / Dy. DEO को भी आवश्यकतानुसार उक्त कार्य योजना में शामिल कर उन्हें परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना के तहत प्रभारी अधिकारी नामित किया जाकर विद्यालय आवंटित किए जा सकते हैं।

ii. सम्बन्धित विद्यालय हेतु नामित प्रभारी अधिकारी द्वारा आवंटित विद्यालयों को बोर्ड परीक्षा प्रारम्भ होने तक विद्यालय परिवीक्षण/अवलोकन/सम्बलन योजना में प्राथमिकता से शामिल किया जाएगा तथा उक्त विद्यालयों के संस्थाप्रधान एवं स्टाफ की तत्काल बैठक आयोजित कर परीक्षा परिणाम उन्नयन की वृहद कार्य योजना तैयार की जाएगी। प्रभारी अधिकारी द्वारा न्यून परीक्षा परिणाम से सम्बन्धित कारणों का निदान किया जाकर उपलब्ध स्टाफ को आवश्यकतानुसार सम्बलन प्रदान करते हुए इस वर्ष परीक्षा परिणाम की गुणवत्ता सुधार हेतु ठोस कार्यवाही सम्पादित की जाएगी। उक्त प्रभारी अधिकारियों (OICs) द्वारा प्रभारित विद्यालयों का प्रति सप्ताह निरीक्षण/ अवलोकन किया जाकर वांछित सम्बलन प्रदान किया जाएगा तथा उक्त विद्यालयों की कार्ययोजना के आधार पर प्रतिदिन प्रगति समीक्षा की जाकर रिपोर्ट सम्बन्धित CBEO को प्रस्तुत की जाएगी। उक्तानुरूप प्रभारी अधिकारी द्वारा परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु उक्त विद्यालयों का अग्रिम रूप से निर्मित कार्य योजनानुरूप सतत् पर्यवेक्षण एवं समुचित प्रबोधन किया जाएगा।

iii. मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में कार्यरत सहायक निदेशक उक्त योजना के प्रभारी अधिकारी होंगे तथा उनके द्वारा उपर्युक्त समस्त विद्यालयों की परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना बाबत पत्रावली संधारित की जाएगी, जिसका अवलोकन एवं प्रगति समीक्षा स्वयं मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा सतत रूप से की जाएगी।

iv. संभागीय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा द्वारा संभाग क्षेत्राधिकार के उपर्युक्त चिह्नित विद्यालयों का फील्ड पर्यवेक्षण के दौरान प्राथमिकता से निरीक्षण किया जाएगा तथा परीक्षा परिणाम उन्नयन के संबंध में जिला कार्यालय द्वारा सम्पादित कार्यवाही एवं प्रयासों की साप्ताहिक आधार पर समीक्षा की जाएगी। संभागीय संयुक्त निदेशक द्वारा आगामी वर्ष आयोजित बोर्ड परीक्षा के परिणाम घोषणा उपरान्त क्षेत्राधिकार के समस्त जिला कार्यालयों के अधीन उपर्युक्त चिह्नित समस्त विद्यालयों के परीक्षा परिणाम की समीक्षा एवं तुलना गत वर्ष से करते हुए परिणाम परिणाम उन्नयन हेतु सम्पादित सार्थक कार्यवाही /किए गए प्रयासों के परिप्रेक्ष्य में विद्यालय स्टाफ एवं संस्थाप्रधान के साथ ही नामित प्रभारी अधिकारी/सम्बन्धित CBEO & CDEO मय ब्लॉक/जिला कार्यालय के भारसाधक अधिकारियों का भी उत्तरदायित्व निर्धारित किया जाएगा।

3. पाठ्यक्रम की पूर्णताः- जैसा कि आप सबको भली प्रकार विदित है कि इस सत्र में बोर्ड परीक्षाएँ माह फरवरी-2020 (उच्च माध्यमिक परीक्षा-20 फरवरी तथा माध्यमिक परीक्षा-27 फरवरी से) में आयोजित होने जा रही है। अतः उपलब्ध सीमित शैक्षणिक दिवसों के मद्देनजर अर्द्धवार्षिक परीक्षा से पूर्व बोर्ड कक्षाओं में समस्त विषयों का पाठ्यक्रम आवश्यक रूप से पूर्ण करवाया जाना है। पाठ्यक्रम अपूर्णता की स्थिति में सम्बन्धित विषयाध्यापकों द्वारा विद्यालय समय के उपरान्त अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन सुनिश्चित करवाएँ। रिक्त पदों के कारण पाठ्यक्रम अपूर्णता की स्थिति होने पर प्रभारी अधिकारी द्वारा सम्बन्धित PEEO / CBEO से समुचित समन्वय स्थापित कर समीपवर्ती विद्यालयों में कार्यरत योग्यताधारी शिक्षकों को 15-15 दिन शिक्षण व्यवस्थार्थ लगवाया जाना सुनिश्चित किया जाएगा। इस सम्बन्ध में इस कार्यालय के पत्रांक : शिविरा/माध्य/सतर्कता/तालाबंदी दिनांक : 28.08.2019 द्वारा समस्त CBEO & CDEO को समुचित निर्देश प्रदान किए जा चुके हैं।

4. अधिगम स्तर के अनुरूप कठिनाई निवारणः- विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की सुनिश्चितता हेतु प्रत्येक कक्षा में अपेक्षाकृत कठिन विषयों में विद्यार्थियों का अधिगम स्तर के अनुरूप चिह्नीकरण कर अतिरिक्त कक्षाओं के माध्यम से उपचारात्मक शिक्षण की सार्थक व्यवस्था कराई जानी सुनिश्चित की जाए, जिससे कि विद्यार्थियों की अवबोधन (Understanding) क्षमता का विकास कर उनके अधिगम स्तर (Learning Level) में सुधार लाया जा सके। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी द्वारा किसी विशिष्ट विषय में न्यून अधिगम लब्धि दर्शाए जाने पर अतिरिक्त कक्षा का आयोजन अथवा सुपरवाइज्ड स्टडी (सम्बन्धित विषयाध्यापक द्वारा विद्यार्थी को सम्मुख बैठाकर व्यक्तिगत अध्यापन) द्वारा न्यूनतम अधिगम स्तर प्राप्त करवाने की सुनिश्चितता की जाए। इस सम्बन्ध में आगामी 04 जनवरी-20 को PTM आयोजन एवं 14 नवम्बर-19 एवं 12 जनवरी-20 को वृहद् बाल सभा आयोजन के दौरान बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों से उनके बच्चे की शैक्षिक स्थिति/लब्धि बाबत विस्तृत विमर्श उपरान्त परीक्षा अवधि में सकारात्मक वातावरण/अभिप्रेरण हेतु संस्थाप्रधान/कक्षाध्यापक/विषयाध्यापक द्वारा अभिभावकों को समुचित मार्गदर्शन प्रदान किया जाना अपेक्षित है। उक्तानुरूप अतिरिक्त कक्षाओं के

आयोजन तथा उपचारात्मक शिक्षण की प्रभावी व्यवस्था से विद्यालय के बोर्ड परीक्षा परिणाम में निश्चय ही आशातीत गुणात्मक सुधार परिलक्षित होगा।

5. प्री-बोर्ड परीक्षा का आयोजनः- बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों को बोर्ड पैटर्न के अनुरूप प्रश्न पत्रों के अभ्यास से उनके शैक्षिक लब्धि में सुधार के उद्देश्य से प्रासंगिक निर्देश पत्रानुसार माह-जनवरी, 2020 में तीन प्री-बोर्ड परीक्षाओं का आयोजन किया जाना है। उक्तानुरूप तीनों प्री-बोर्ड परीक्षाओं में से प्रथम दो परीक्षाओं का आयोजन यथासम्भव क्रमशः 01 से 10 जनवरी-2020 व 11 से 20 जनवरी-2020 की समयावधि में तथा तीसरी प्री-बोर्ड परीक्षा संयोजक, जिला समान परीक्षा योजना द्वारा बोर्ड पैटर्न के अनुरूप उपलब्ध करवाए जाने वाले प्रश्न पत्रों के माध्यम से करवाया जाना है। ध्यान रहे, विद्यार्थियों हेतु पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति तथा आवश्यकतानुसार अतिरिक्त कक्षाओं के आयोजन के मद्देनजर उक्त प्री-बोर्ड परीक्षा अधिकतम चार दिवस की समयावधि में आयोजित की जानी सुनिश्चित करें।

6. संस्थाप्रधान व विषयाध्यापक की भूमिकाः- परीक्षा परिणाम की गुणात्मकता में पाठ्यक्रम-अध्यापन के प्रभावी एवं सुग्राह्य होने तथा सम्बन्धित विषयाध्यापक की रुचि एवं लगन के साथ-साथ संस्थाप्रधान के प्रभावी पर्यवेक्षण की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक सुधार की सुनिश्चितता उपरान्त अगला लक्ष्य गुणात्मक सुधार है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रत्येक विषय में अधिकाधिक अंक (More and More Marks) एवं उत्तम श्रेणी की प्राप्ति हेतु प्रोत्साहित करना है। उक्तानुसार तृतीय श्रेणी में संभावित छात्र द्वितीय श्रेणी, द्वितीय श्रेणी वाला प्रथम श्रेणी, प्रथम श्रेणी वाला विशेष योग्यता, विशेष योग्यता वाला 90 प्रतिशत तथा विशिष्ट प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थियों का मेरिट की दिशा में कदम (Steps Towards Merit) उठ सके, इस उद्देश्य से वर्ष 2020 की बोर्ड परीक्षाओं में राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के प्रदर्शन में उत्तरोत्तर सुधार हेतु यह 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2020' निर्देशित की गई है। यदि विषयाध्यापक तथा संस्थाप्रधान द्वारा विद्यार्थियों की पहचान प्रभावी तरीके से की जाकर अतिरिक्त कक्षाओं/रेमेडियल क्लासेज के माध्यम से प्रभावी कार्यवाही की जाए, तो निश्चित रूप से परीक्षा परिणाम में सुधार के साथ-साथ विद्यार्थियों का विद्यालय के प्रति लगाव भी बढ़ेगा। इस सम्बन्ध में समस्त संस्थाप्रधानों एवं शिक्षकों से यह अपेक्षा है कि वे प्रभावी पर्यवेक्षण के साथ-साथ स्वयं आगे बढ़कर प्रेरणादायक नेतृत्व का परिचय देते हुए विद्यार्थियों के प्रति मार्गदर्शक की भूमिका का उचित रीति से निर्वहन करेंगे।

7. निदेशालय स्तर पर पर्यवेक्षण एवं प्रबोधनः- उपर्युक्त निर्देशित समस्त कार्यवाही के समुचित पर्यवेक्षण एवं प्रबोधन हेतु राज्य स्तर पर उपनिदेशक (माध्यमिक), कार्यालय हाजा राज्यस्तरीय नॉडल अधिकारी के रूप में कार्य करेंगे। उक्त क्रम में विद्यालयस्तर से संभागीय संयुक्त निदेशक कार्यालय तक सौंपे गए दायित्वों की मॉनिटरिंग हेतु प्रतिमाह अग्रांकित विवरणानुसार अधीनस्थ अधिकारियों की निदेशालय में बैठक आयोजित कर प्रगति समीक्षा करेंगे।

क्र.सं.	बैठक दिवस	संभागियों का विवरण	विशेष विवरण
1	प्रत्येक माह का प्रथम सोमवार	उदयपुर, कोटा, भरतपुर संभाग के संयुक्त निदेशक तथा मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालयों के भारसाधक अधिकारी	बैठक दिवस को राजकीय अवकाश की स्थिति में आगामी गुरुवार/शुक्रवार को सम्बन्धित संभाग से सम्बन्धित बैठक का आयोजन किया जाएगा।
2	प्रत्येक माह का प्रथम मंगलवार	जोधपुर, जयपुर, पाली संभाग के संयुक्त निदेशक तथा मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालयों के भारसाधक अधिकारी	
3	प्रत्येक माह का प्रथम बुधवार	बीकानेर, चूरू, अजमेर संभाग के संयुक्त निदेशक तथा मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालयों के भारसाधक अधिकारी	

आगामी माह दिसम्बर-2019 में उक्त सम्बन्ध में आयोज्य प्रथम बैठक में सम्बन्धित संभाग/जिले से भाग लेने वाले समस्त भारसाधक (प्रभारी) अधिकारी अपने संभाग/जिले 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजनाः 2020' से सम्बन्धित वांछित सूचना अग्रांकित प्रारूप में लेकर उपस्थित होंगे।

बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना : 2020 के तहत प्रगति समीक्षा हेतु सूचना-प्रारूप :

संभाग/जिले का नाम...................... माह.......................

प्रपत्र-01 (शैक्षिक उन्नयन हेतु सम्पादित कार्यवाही)

क्र. सं.	क्षेत्राधिकार में विद्यालयों की कुल संख्या		ऐसे विद्यालयों की संख्या, जिनमें बोर्ड कक्षाओं में पाठ्यक्रम पूर्ण करवाया जा चुका है।		ऐसे विद्यालयों की संख्या, जिनमें बोर्ड कक्षाओं में पाठ्यक्रम अपूर्ण है।		पाठ्यक्रम अपूर्ण रहने का कारण (संक्षिप्त में)	रिक्त पदों की स्थिति में की गई शिक्षण व्यवस्था की संख्या
	उच्च माध्यमिक	माध्यमिक	उच्च माध्यमिक	माध्यमिक	उच्च माध्यमिक	माध्यमिक		
1	2	3	4	5	6	7	8	9

नोटः बिन्दु संख्या 08 व 09 से सम्बन्धित सूचना का विस्तृत विवरण आवश्यकतानुसार पृथक से अवलोकन करावें।

प्रपत्र-02 (प्रभारी अधिकारियों द्वारा विद्यालय परिवीक्षण)

क्र. सं.	न्यून परिणाम वाले विद्यालयों की संख्या		शैक्षिक उन्नयन हेतु नामित प्रभारी अधिकारियों की संख्या	नामित प्रभारियों द्वारा गत माह तक अवलोकित विद्यालयों की संख्या	गत माह में अवलोकन से वंचित विद्यालयों की संख्या	वि. वि.
	उच्च माध्यमिक	माध्यमिक				
1	2	3	4	5	6	7

प्रपत्र-03 (मासिक परख (Monthly Test) की प्रगति)

क्र. सं.	क्षेत्राधिकार में विद्यालयों की कुल संख्या		ऐसे विद्यालयों की संख्या, जहाँ मासिक परख का नियमित आयोजन किया जा रहा है।		ऐसे विद्यालयों की संख्या, जहाँ मासिक परख के उपरान्त विद्यार्थियों की शैक्षिक लब्धि से उन्हें अवगत करवाया जा रहा है।		मासिक परख आयोजित नहीं किए जाने के कारण (संक्षिप्त में)
	उच्च माध्यमिक	माध्यमिक	उच्च माध्यमिक	माध्यमिक	उच्च माध्यमिक	माध्यमिक	
1	2	3	4	5	6	7	8

समस्त सम्बन्धितों द्वारा सम्पूर्ण क्षेत्राधिकार में उपर्युक्त निर्देशों की पालना सर्वोच्च प्राथमिकता से करवाई जानी सुनिश्चित की जाए।

● **(नथमल डिडेल) IAS** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

10. राजस्थान स्वेच्छया ग्रामीण शिक्षा सेवा नियम-2010 के अन्तर्गत सामायोजित कार्मिकों को सेवानिवृत्ति पर देय अनुपयोजित उपार्जित अवकाश के नकद भुगतान के सम्बन्ध में।

● कार्यालय, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/अनुदान/2018-19 दिनांक 13.11.2019 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक शिक्षा-मुख्यालय) राजस्थान। ● विषय : राजस्थान स्वेच्छया ग्रामीण शिक्षा सेवा नियम-2010 के अन्तर्गत सामायोजित कार्मिकों को सेवानिवृत्ति पर देय अनुपयोजित उपार्जित अवकाश के नकद भुगतान के सम्बन्ध में।

राज्य सरकार द्वारा राजस्थान स्वेच्छया ग्रामीण शिक्षा सेवा नियम-2010 के अन्तर्गत दिनांक 01.07.2011 से अनुदानित संस्थाओं में कार्यरत कार्मिकों का समायोजन किया गया था। उक्त नियमों के अन्तर्गत समायोजित कार्मिकों को दिनांक 30.06.2011 तक के उपार्जित अवकाश के शेष (अधिकतम 300 दिन) का भुगतान संस्था द्वारा किया जाना है, तथा न्यायालय निर्णयानुसार नियमानुसार राज्य सरकार द्वारा अनुदान स्वीकृत किया जा रहा है। ऐसा ध्यान में आया है कि समायोजित कर्मचारियों द्वारा समायोजन से पूर्व व समायोजन के पश्चात की अवधि को मिलाकर 300 दिन की सीमा से अधिक का नकद भुगतान (सेवानिवृत्ति + समायोजन पूर्व) लिया जा रहा है, जो नियमानुसार गलत है तथा वसूली योग्य है अतः राजस्थान ग्रामीण स्वेच्छया शिक्षा सेवा नियम-2010 के अन्तर्गत समायोजित कार्मिकों को दिनांक 30.06.2011 को तथा समायोजन पश्चात देय अनुपयोजित उपार्जित अवकाश के नकद भुगतान के सम्बन्ध में सभी जिला शिक्षा अधिकारियों (माध्यमिक मुख्यालय) को निम्नानुसार निर्देश किए जाते हैं जिनकी पालना सुनिश्चित करें तथा अपने अधीनस्थ समस्त कार्यालय अध्यक्षों एवं आहरण वितरण अधिकारियों से निर्देशों की पालना सुनिश्चित करें तथा अगर किसी सेवानिवृत्त कर्मचारी को अधिक भुगतान हुआ है तो वसूली कर राजकोष में जमा करावें।

1. अनुदानित कार्मिकों को जो दिनांक 01.07.2011 से समायोजित हुए हैं उनके उपार्जित अवकाश को शेष राजस्थान स्वेच्छया ग्रामीण शिक्षा सेवा नियम-2010 के नियम 5 (viii) के अनुसार अग्रनीत करने को अनुज्ञात नहीं किया जाएगा।
2. राजस्थान स्वेच्छया ग्रामीण शिक्षा सेवा नियम-2010 के अन्तर्गत समायोजित पश्चात अर्जित उपार्जित अवकाश के अनुपयोजित शेष का सेवानिवृत्ति पर नगद भुगतान देय है किन्तु राजस्थान सेवा नियम खण्ड प्रथम के नियम के अनुसार 300 दिन की सीमा में ही देय है अतः समायोजन पूर्व अनुपयोजित अवकाश एवं सेवानिवत्ति पर अनुपयोजित अवकाश शेष मिलाकर 300 दिन की सीमा में ही भुगतान किया जाना है। उदाहरणार्थ कि समायोजित कार्मिक का दिनांक 30.06.2011 को 300 दिन के अनुपयोजित उपार्जित अवकाश का भुगतान प्राप्त कर लिया है अथवा बकाया है तो उस कार्मिक को समायोजन पश्चात सेवानिवृत्ति पर अनुपयोजित उपार्जित अवकाश का नगद भुगतान देय नहीं किन्तु किसी कार्मिक का समायोजन पूर्व 250 दिन का शेष है तो समायोजन पश्चात 50 दिन की सीमा में उपार्जित अवकाश के शेष का नगद भुगतान किया जा सकता है।
3. अनुदानित कार्मिकों को न्यायालय निर्णयानुसार किए जाने वाले भुगतान की प्रविष्टी कर्मचारी की मूल सेवा पुस्तिका में आवश्यक रूप से कर उपार्जित अवकाश का शेष शुन्य करना सुनिश्चित करें।
4. समायोजन से पूर्व एवं समायोजन पश्चात सेवानिवृत्ति पर शेष अनुपयोजित उपार्जित अवकाश अगर 300 दिन से ज्यादा है तो 300 दिन से अधिक अवकाश की वूसली समायोजन पश्चात दिए गए वेतन भत्तों के अनुसार होगी।
5. पूर्व में अगर इस तरह का अधिक भुगतान हुआ है तो वसूली करना सुनिश्चित करें यानि समायोजित कार्मिकों को यदि भुगतान हो चुका है तो ऐसे प्रकरणों की जाँच करवाकर वसूली करवाना सुनिश्चित करें।

● **वित्तीय सलाहकार** माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर

11. एकीकृत वित्तीय प्रबन्धन प्रणाली के अन्तर्गत राजकीय संव्यवहारों को ऑन-लाईन करने एवं संव्यवहारों/भुगतानों में पूर्ण शुद्धता हेतु समस्त कार्मिकों के मास्टर डाटा की जाँच/सत्यापन के सम्बन्ध में।

● कार्यालय, निदेशक माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः-शिविरा/मा./बजट/ई-कुबेर/2019-20/बी-4/25577 दिनांक 18.11.2019 ● समस्त आहरण एवं वितरण अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा ● विषय : एकीकृत वित्तीय प्रबन्धन प्रणाली के अन्तर्गत राजकीय संव्यवहारों को ऑन-लाईन करने एवं संव्यवहारों/भुगतानों में पूर्ण शुद्धता हेतु समस्त कार्मिकों के मास्टर डाटा

की जाँच/सत्यापन के सम्बन्ध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है एकीकृत वित्तीय प्रबन्धन प्रणाली के अन्तर्गत राजकीय संव्यवहारों हेतु ऑनलाइन भुगतानों को भारतीय रिर्जव बैंक के ई-कुबेर पोर्टल के माध्यम से किए जाने तथा इससे सम्बन्धित निम्नाकिंत परिपत्र को पूर्व में इस कार्यालय के समसंख्यक पत्रांक दिनांक 27-08-2019 से संलग्न कर समुचित निर्देश प्रदान किए गए थे-

क्र.सं.	परिपत्र का विषय	परिपत्र क्रमांक	दिनांक
1.	ई-कुबेर	F.5(TH-75)DTA/IFMS/ e-kuber/21475-874	21.03.18
2.	एकीकृत वित्तीय प्रबन्धन प्रणाली के अन्तर्गत राजकीय संव्यवहारों को ई-कुबेर पोर्टल के माध्यम से किए जाने के सम्बन्ध में दिशा-निदेश	F.5(TH-75)DTA/IFMS/ e-kuber-VII/8094-493	26.09.18
3.	महालेखाकार कार्यालय को ई-लेखा प्रस्तुत करने के सम्बन्ध में विस्तृत दिशा-निर्देश	F.5(TH-75)DTA/IFMS/ e-accounts/279-579	16.04.19
4.	बजट नियत्रंण अधिकारियों द्वारा महालेखाकार कार्यालय के साथ आय एवं व्यय के आंकड़ों को एकीकृत वित्तीय प्रबन्धन प्रणाली से ऑनलाइन अंक मिलान	F.5(TH-75)DTA/IFMS/ reconciliation/2018 1956-2205	09.07.19

इस सम्बन्ध में वित्त (आर्थिक मामलात) विभाग के परिपत्र एफ 5(थ-75) डीटीए/आईएफएमएस/3666-4165 दिनांक 13-09-2019 से राजकीय संव्यवहारों/भुगतानों की प्रक्रिया में पूर्ण शुद्धता एवं उत्तरदायित्त्व सुनिश्चित करने हेतु विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं।

उपर्युक्त समस्त परिपत्र वित्त विभाग की वेबसाईट (http://finance.rajasthan.gov.in) पर भी उपलब्ध है।

समस्त आहरण एवं वितरण अधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि उपर्युक्त समस्त परिपत्रों की पूर्ण पालना सुनिश्चित की जावे।

इस सम्बन्ध में निम्नाकिंत महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं की भी पूर्ण पालना करने हेतु निर्देशित किया जाता है-

1. विभाग के अधीनस्थ समस्त कार्यालयों में स्वीकृत पदों को आईएफएमएस पर आवंटित करने की कार्यवाही विभाग स्तर पर की जा रही है। इस कार्यवाही पश्चात पे-मेनेजर पर आपके कार्यालय में स्वीकृत पद एवं उसकी संख्या दर्शित होगी तथा इसी के आधार पर ही माह जनवरी देय फरवरी 2020 के बिल आहररित हो पाएँगे।
2. वर्तमान में काफी संख्या में कार्मिकों के मास्टर डाटा मिसमेच चल रहे है। अतः परिपत्र दिनांक 13-09-2019 के बिन्दु संख्या 10 के अनुसार ''इस अवधि में एक कार्मिक/अधिकारी का मास्टर डाटा सर्विस बुक से जाँच कर विभागीय डिजिटल लॉगिन से एकबारीय एडिट भी किया जा सकेगा। परन्तु उसके पश्चात यह फ्रीज हो जाएगा।'' अतः इस सम्बन्ध में समस्त आहरण एवं वितरण अधिकारियों को यहाँ पुनः स्पष्ट किया जाता है कि आपके अधीनस्थ समस्त कार्मिकों को अपने स्तर पर निर्देशित करावें कि वे अपने मास्टर डाटा की जाँच पे-मेनेजर की एम्पलाई लॉगिन आईडी से कर लेवें तथा कतिपय प्रविष्टियों में किसी प्रकार के संशोधन की आवश्यकता हो तो उसमें समुचित अभिलेख के साथ अपने-अपने आहरण एवं वितरण अधिकारी से उसका अपडेशन दिनांक 10.12.2019 तक आवश्यक रूप से करवा लेवें। मास्टर डाटा फ्रीज होने के पश्चात उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन आहरण एवं वितरण अधिकारी स्तर पर नहीं हो सकेगा तथा मास्टर डाटा में मिसमेच के कारण यदि किसी कार्मिक का वेतन आहरण में किसी प्रकार की विलम्बता होती है तो उसके लिए सम्बंद्ध कार्मिक एवं सम्बंद्ध आहरण एवं वितरण अधिकारी उत्तरदायी होगा।
3. यदि किसी कार्मिक के पे-मेनेजर के मास्टर डाटा एवं विभागीय पोर्टल शाला दर्पण के डाटा में किसी प्रकार का मिसमेच है तो उसको भी निर्धारित अवधि में ही अपडेशन आवश्यक रूप से करवा लेवें।

इस विषय में राज्य सरकार स्तर पर किए जाने वाले प्रक्रियात्मक अद्यतन के लिए वित्त विभाग की वेबसाईट को नियमित रूप से विजिट करें तथा उपर्युक्त के सम्बन्ध में किसी प्रकार की समस्या आने पर इन परिपत्रों में दिए गए दूरभाष नम्बर/मोबाइल नम्बर/ई-मेल पर सम्पर्क किया जा सकता है।

●**मुख्य लेखाधिकारी,** प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
●**वित्तीय सलाहकार,** माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

12. राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के बोर्ड परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक उन्नयन के साथ ही गुणात्मक उत्कृष्टता सुनिश्चित किए जाने बाबत।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ●क्रमांक : शिविरा-मा/माध्य/निप्र/नवाचार/2017-19/184 दिनांक 26.11.2019 ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा अभियान। ● विषय : राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के बोर्ड परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक उन्नयन के साथ ही गुणात्मक उत्कृष्टता सुनिश्चित किए जाने बाबत। ●प्रसंग : पूर्व प्रेषित निर्देश पत्र दिनांक : 13.11.2019।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक निर्देश पत्र द्वारा समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ''बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2020'' में प्रदत्त निर्देशानुरूप कार्यवाही सम्पादन के निर्देश प्रदान किए जा चुके हैं। उक्त क्रम में आपके द्वारा जिला क्षेत्राधिकार में वर्ष : 2019 की बोर्ड परीक्षा में न्यून परीक्षा परिणाम वाले विद्यालयों का चिह्नीकरण किया जाकर उक्त विद्यालयों में शैक्षिक उन्नयन हेतु प्रभारी अधिकारी नामित किए जाने की कार्यवाही सम्पादित की जाकर वांछित सम्बलन के लिए विशिष्ट कार्य योजना का संचालन प्रारम्भ किया जा चुका होगा।

उपर्युक्तानुसार उल्लेखित निर्देशों के अनुवर्तन में आपको

क्षेत्राधिकार के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के वर्ष : 2019 के बोर्ड परीक्षा परिणाम के आधार पर अग्रांकित विवरणानुसार विद्यालयों की सूचना जरिए मेल इस पत्र के संलग्न एक्सल फॉर्मेट में सॉफ्ट कॉपी के रूप में प्रेषित की जा रही है :-

1. **माध्यमिक परीक्षा – 2019**

- जिले में संख्यात्मक रूप से न्यूनतम परीक्षा परिणाम वाले 20 विद्यालयों की सूची।
- जिले के उन विद्यालयों की सूची, जिनका संख्यात्मक परीक्षा परिणाम मानदण्डानुरूप है, परन्तु गुणात्मक परीक्षा परिणाम (प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण विद्यार्थियों की प्रतिशत संख्या के लिहाज से) तुलनात्मक रूप से न्यून है।
- ब्लॉकवार संख्यात्मक रूप से न्यूनतम परीक्षा परिणाम वाले विद्यालयों की सूची।
- ब्लॉकवार उन विद्यालयों की सूची, जिनका संख्यात्मक परीक्षा परिणाम मानदण्डानुरूप है परन्तु गुणात्मक परीक्षा परिणाम (प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण विद्यार्थियों की प्रतिशत संख्या के लिहाज से) तुलनात्मक रूप से न्यून है।

2. **उच्च माध्यमिक परीक्षा–2019**

- जिले में संख्यात्मक रूप से न्यूनतम परीक्षा परिणाम वाले 20 विद्यालयों की सूची।
- जिले के उन विद्यालयों की सूची, जिनका संख्यात्मक परीक्षा परिणाम मानदण्डानुरूप है, परन्तु गुणात्मक परीक्षा परिणाम (प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण विद्यार्थियों की प्रतिशत संख्या के लिहाज से) तुलनात्मक रूप से न्यून है।
- ब्लॉकवार संख्यात्मक रूप से न्यूनतम परीक्षा परिणाम वाले विद्यालयों की सूची।
- ब्लॉकवार उन विद्यालयों की सूची जिनका संख्यात्मक परीक्षा परिणाम मानदण्डानुरूप है, परन्तु गुणात्मक परीक्षा परिणाम (प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण विद्यार्थियों की प्रतिशत संख्या के लिहाज से) तुलनात्मक रूप से न्यून है।

3. **विशेष ध्यातव्य :**

उपर्युक्त सूचना के विश्लेषण से जिले एवं ब्लॉक में ऐसे विद्यालयों का सरलता से चिह्नीकरण संभव होगा, जहाँ बोर्ड परीक्षा परिणाम के संख्यात्मक अथवा गुणात्मक सुधार हेतु विशिष्ट प्रयास अपेक्षित है। उक्त सूचना में चिह्नित विद्यालयों में विद्यार्थियों के समस्त विषयों में उत्तीर्ण प्रतिशत से विषय विशेष का संख्यात्मक परीक्षा परिणाम तथा प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण प्रतिशत से उक्त विषय का गुणात्मक परीक्षा परिणाम स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो सकेगा। उक्तानुरूप चिह्नित विद्यालयों में विषय विशेष में विद्यार्थियों के काठिन्य बिन्दुओं का निदान (Diagnose) किया जाकर उपचारात्मक शिक्षा (Remedial Teaching) का प्रबन्धन अपेक्षित है। यहां आपका ध्यान इस तथ्य की ओर विशेष रूप से आकृष्ट किया जाता है कि उक्त ''बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना'' का क्रियान्वयन एवं प्रदत्त निर्देशों की पालना समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में आवश्यक रूप से की जानी है, जिससे कि समस्त राजकीय विद्यालयों के बोर्ड परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक एवं गुणात्मक, दोनों मानदण्डों में समान रूप से उत्कृष्टता का लक्ष्य अर्जित किया जा सके। चिह्नित विद्यालयों में प्रभारी अधिकारियों द्वारा प्रबोधन एवं पर्यवेक्षण का उद्देश्य उक्त विद्यालयों के विगत वर्ष अपेक्षाकृत न्यून परीक्षा परिणाम की पृष्ठभूमि में अतिरिक्त एवं विशिष्ट प्रयास तथा सम्बलन प्रदान करना है।

4. **करणीय कार्यवाही :-**

उपर्युक्तानुसार चिह्नित को समुचित सम्बलन एवं प्रभारी प्रबोधन के लिए उक्त विद्यालयों हेतु पूर्व में नामित प्रभारी अधिकारी अथवा गुणात्मक उन्नयन हेतु नवीन सम्मिलित विद्यालयों हेतु आवश्यकता होने पर अतिरिक्त प्रभारी अधिकारी नामित किए जाकर परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु उक्त समस्त विद्यालयों को वांछित सम्बलन प्रदान करते हुए नियमित पर्यवेक्षण एवं सतत् प्रबोधन की व्यवस्था सुनिश्चित करावें। उक्त क्रम में विद्यालयों में निरीक्षण/ अवलोकन/परिवीक्षण के दौरान समस्त अधिकारीगण बोर्ड परीक्षा तैयारी एवं परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु विद्यालय स्तर पर किए जा रहे प्रयासों का पर्यवेक्षण करेंगे तथा संलग्न प्रबोधन प्रपत्र (Monitoring Form) में विद्यालय वार फीडबैक सम्बन्धित संभागीय संयुक्त निदेशक कार्यालय में प्रेषित करेंगे। जहाँ सम्बन्धित भार साधक अधिकारी द्वारा उक्त समस्त फीडबैक प्रपत्रों के विश्लेषणोपरान्त वांछनीय विशिष्ट योजना तैयार की जाकर आवश्यक कार्यवाही सम्पादित की जाएगी। उक्तानुरूप ब्लॉक/जिलास्तर पर आवश्यकतानुसार समस्त भार साधक एवं प्रभारी अधिकारियों की इस माह के अन्त में बैठक आयोजित कर ''परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना'' की पालना/क्रियान्विति की अद्यतन सूचना तथा प्रगति रिपोर्ट प्राप्त कर आगामी माह में पूर्वप्रदत्त निर्देशानुसार निर्धारित तीनों प्रपत्रों में जिले की वांछित समेकित सूचना तैयार कर अग्रांकित विवरणानुसार निदेशालय में आयोज्य समीक्षा बैठक में उक्त कार्य योजना के भारसाधक अधिकारी को पूर्ण तैयारी एवं वांछित सूचनाओं के साथ भिजवाया जाना सुनिश्चित करें:-

क्र.सं.	बैठक आयोजन की तिथि	बैठक में उपस्थित होने वाले संभागी गण
1.	02.12.2019 (सोमवार)	**उदयपुर, कोटा, भरतपुर संभाग** के संयुक्त निदेशक तथा मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालयों के भारसाधक अधिकारी एवं सम्बन्धित जिलों के जिला प्रभारी गण।
2.	03.12.2019 (मंगलवार)	**जोधपुर, जयपुर पाली संभाग** के संयुक्त निदेशक तथा मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालयों के भारसाधक अधिकारी एवं सम्बन्धित जिलों के जिला प्रभारी गण।
3.	04.12.2019	**बीकानेर चूरू, अजमेर संभाग** के संयुक्त निदेशक तथा मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालयों के भारसाधक अधिकारी एवं सम्बन्धित जिलों के जिला प्रभारी गण।

ध्यातव्य : बैठक का समय : प्रातः 11.00 बजे बैठक स्थल : निदेशालय स्थित मुख्य प्रशासनिक भवन के द्वितीय तल पर स्थित सभागार (कक्ष क्रमांक – 206)

● संलग्न : उपर्युक्त वर्णितानुसार जिले/ब्लॉकवार चिंहित विद्यालयों की एक्सल वर्कबुक में सूचियां (कुल-04 (कक्षा-10 एवं 12 हेतु पृथक-पृथक) एवं प्रबोधन प्रपत्र (Monitoring Form)

● **(नथमल डिडेल)** IAS निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

Monitoring From

Officer Name:.................. **School Name :...........................**

School Code:.................... **Principal's Name :...................**

Does School have knowledge about their past year result with respect to pass percentage and first Division? Yes | No

Has School seen the report card's uploaded on the Shala Darpan Page? Yes | No

Has school discussed the result (both from pass Percentage and First Division Percentage) during Bal Sabha?

Has the syllabus been completed for each board subject across Class X and XII?

Class X	
Subject	Yes/No
English	
Hindi	
math	
Science	
Social Science	
Third Language	

Class XII-Please Specify subjects for each stream							
Arts		Science		Commerce		Agriculture	
Suject	Yes/No	Subject	Yes/No	Subject	Yes/No	Subject	Yes/No

Has school downloaded the subject wise question banks available on the Shala Darpan? Yes | No
How are they being used?

Monthly tests conducted? Yes | No
Student's appeared:
Average marks :
Corrected copies returned? Yes | No

Plan for Non-Centralised Pre-board :
Time for paper Creation :
Content/Model papers/Question banks to be used for paper Creation:
Time for paper Conduction :
Have you read the guidelines for Logistics of paper conduction:
Paper Correction (timelines) :
Revision plan :

13. शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 47वीं राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता सत्र 2019-20 के आयोजन के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/खेलकूद-1/35107/2019-20 दिनांक : 26.11.2019 ● कार्यालय आदेश ● विषय : शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 47वीं राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता सत्र 2019-20 के आयोजन के संबंध में।

शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 47वीं राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता सत्र 2019-20 का आयोजन शिविरा पंचाग में दी गई तिथियों के अनुसार निम्न स्तरों पर उनके नाम के सम्मुख अंकित अवधि में होगीः-

जिला स्तर पर चयन-दिनांक 05.12.2019 से 06.12.2019 तक
मण्डल स्तर पर चयन-दिनांक 12.12.2019 से 13.12.2019 तक
मण्डल स्तर पर प्रशिक्षण-दिनांक 17.12.2019 से 22.12.2019 तक
राज्य स्तरीय प्रतियोगिता-दिनांक 27.12.2019 से 30.12.2019 तक

निदेशालय इकाई का चयन दिनांकः 12.12.2019 से 13.12.2019 तक एवं प्रशिक्षण 17.12.2019 से 22.12.2019 तक होगा।

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के आयोजन का दायित्व संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा) शिक्षा विभाग, जयपुर का है जिसका आयोजन प्रधानाचार्य, राजकीय यशवन्त उच्च माध्यमिक विद्यालय, अलवर के तत्वाधान में दिनांक 27.12.2019 से 30.12.2019 तक होगा। इस प्रतियोगिता की समस्त कार्यवाही पूर्व में निदेशालय द्वारा प्रसारित शिक्षा विभागीय कर्मचारी क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता नियमावली एवं मार्गदर्शिका तथा समय-समय पर हुए संशोधनानुसार सम्पादित होगी। उक्त प्रतियोगिता में बैडमिन्टन एवं टेबल टेनिस खेल हेतु चार-चार महिला खिलाड़ी सहित कुल 134 खिलाड़ियों से अधिक का चयन कर अलवर नहीं ले जावें। जिला एवं मण्डल स्तर उक्तानुसार सम्भागी संख्या रहेगा। खेलानुसार एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत सम्भागियों की संख्या राज्य स्तरीय प्रतियोगिता हेतु निम्नानुसार होगी :-

खेल का नाम	खिलाडियों की संख्या	एथलेटिक्स में सम्भागी कुल खिलाड़ी			सांस्कृतिक कार्यक्रम	कुल खिलाड़ी
			40 वर्ष से अधिक	40 वर्ष से अधिक		
बास्केटबॉल	10	100 मीटर दौड़	02	02	सुगम संगीत	02
वॉलीबॉल	10	200 मीटर दौड़	02	02	एकाभिनय	02
टेबलटेनिस	04 (पुरुष) 04 (महिला)	400 मीटर दौड़	02	02	एकलनृत्य	02
कैरम	04	800 मीटर दौड़	02	02	विचित्र वेशभूषा	02
शतरंज	02	4 गुणा 100 मीटर दौड़	04	04	हारमोनियम वादन	01
बैडमिन्टन	04(पुरुष) 04(महिला)	4 गुणा 400 मीटर दौड़	04	04	तबला वादन	01
कबड्डी	10	ऊँची कूद	02	02	ढोलक वादन	01
फुटबॉल	14	लम्बी कूद	02	02	झांझ वादन	01
		त्रिकूद	02	02		
		तश्तरी फेंक	02	02		
		भाला फेंक	02	02		
		गोला फेंक	02	02		

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता की सम्पूर्ण व्यवस्थाएं यथा खेल मैदान, उपकरणों, निर्णायक गण, आवास व्यवस्था, चिकित्सा एवं सुरक्षा व्यवस्था, बिजली, पानी आदि की सुनिश्चितता प्रतियोगिता आयोजन के एक सप्ताह पूर्व आवश्यक रूप से की जावें, साथ ही प्रतियोगिता आयोजक विद्यालय द्वारा सम्भागी दलों को प्रधानाचार्य, राजकीय यशवन्त उच्च माध्यमिक विद्यालय, अलवर पहुँचने हेतु रेल/बस मार्गों की सूचना जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (मुख्यालय) अलवर एवं प्रधानाचार्य, राजकीय यशवन्त उच्च माध्यमिक विद्यालय, अलवर द्वारा प्रसारित कर समस्त सम्भागी दलों हेतु मण्डल अधिकारियों एवं निदेशालय को प्रेषित की जावें।

● **(नथमल डिडेल)** IAS, निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

माह : दिसम्बर, 2019

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 12.40 से 1.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
02-12-2019	सोमवार	जयपुर	9	विज्ञान	8	सजीवों की प्रमुख क्रियाएँ
03-12-2019	मंगलवार	उदयपुर	5	हिन्दी	13	किताबें (कविता)
04-12-2019	बुधवार	जोधपुर	8	सामाजिक विज्ञान	13	हमारे भौतिक अधिकार एवं कर्त्तव्य
05-12-2019	गुरुवार	बीकानेर	8	विज्ञान	17	पर्यावरण
06-12-2019	शुक्रवार	जयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	7	वृक्षों की महिमा
07-12-2019	शनिवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम	मानव अधिकार दिवस (10 दिसम्बर को)		
10-12-2019	मंगलवार	मानव अधिकार दिवस (उत्सव)				
10-12-2019 से 23-12-2019 तक अर्द्ध वार्षिक परीक्षा						
24-12-2019	मंगलवार	जोधपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	14	खाने से पचने तक

● **निदेशक शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर**

शिविरा पञ्चाङ्ग

दिसम्बर-2019

रवि	1	8	15	22	29
सोम	2	9	16	23	30
मंगल	3	10	17	24	31
बुध	4	11	18	25	
गुरु	5	12	19	26	
शुक्र	6	13	20	27	
शनि	7	14	21	28	

दिसम्बर 2019 ● कार्य दिवस-18, रविवार-05, अवकाश-08, उत्सव-02 ● 01 दिसम्बर-विश्व एकता दिवस (उत्सव), विश्व एड्स दिवस (RSCERT)। **05-06 दिसम्बर**-मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता हेतु जिला स्तर पर चयन। **06-07 दिसम्बर, 2019 राज्य स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन (शिक्षकों के लिए अवकाश) 10 दिसम्बर**-मानव अधिकार दिवस (उत्सव)। **10-23 दिसम्बर**-अर्द्ध वार्षिक परीक्षा का आयोजन। **12 से 13 दिसम्बर**-मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर चयन व दल गठन। **17-22 दिसम्बर**-मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन। **24 दिसम्बर**-सामुदायिक बाल सभा का आयोजन -सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर आयोज्य। **25 दिसम्बर**-क्रिसमस डे (अवकाश)। **25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर**-शीतकालीन अवकाश (विभाग के समस्त आहरण-वितरण अधिकारियों द्वारा राज्य कर्मचारियों के हितकारी निधि के वार्षिक अंशदान हेतु माह दिसम्बर के वेतन से निर्धारित दर पर कटौती की कार्यवाही सुनिश्चित करना)। **26 से 28 दिसम्बर**-राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता हेतु प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन। **27 से 30 दिसम्बर**-मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता का राज्य स्तर पर आयोजन। **29 से 31 दिसम्बर**-राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता। **● नोट**-जिन विद्यालयों में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई संचालित है, उन विद्यालयों में सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन शीतकालीन अवकाश के दौरान ही किया जाए। 1. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व उन्नयन एवं कौशल शिविर का आयोजन। 2. प्रत्येक सोमवार-WIFS नीली गोली (कक्षा 6-12), WIFS पिंक गोली (कक्षा 1-5)।

सूचना

● 'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा- नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ। ● कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है। ● कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय-समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBI बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग-अलग संलग्न करें। -वरिष्ठ संपादक

पर्यावरण संरक्षण

सिंगल यूज प्लास्टिक : हानिकारक

❐ शबनम भारतीय

सिंगल यूज प्लास्टिक वह प्लास्टिक होता है जिसे हम एक बार काम में ले कर फैंक देते हैं इसे डिस्पोजल प्लास्टिक भी कहते हैं। एक तरह से यह यूज एंड थ्रो प्लास्टिक भी कहा जा सकता है। 50 माइक्रोन से कम की थैलियाँ, फॉम वाले प्याले, प्लास्टिक के कप, गिलास, पैकिंग फिल्म, प्लास्टिक स्टिक, चम्मच, इयरबड्स, प्लास्टिक इस्ट्रा, झंडे, गुब्बारे, कैंडी, प्लास्टिक के पैकेट्स (दो सौ एम एल से कम) सौ माइक्रोन से कम के बैनर, दो सौ एम एल की प्लास्टिक बॉटल, इत्यादि बहुत सी चीजें हैं जिन्हें हम एक बार ही काम में लेते हैं, ऐसी ही श्रेणी में आते हैं।

आज प्लास्टिक हमारे दैनिक जीवन में इस प्रकार रच बस गया है कि हम प्रातः उठने से लेकर देर रात बिस्तर पर जाने तक प्लास्टिक सामग्री पर निर्भर हो गए हैं। प्लास्टिक का अति प्रयोग बढ़ने का कारण यह है कि प्लास्टिक की चीजें सस्ती होती हैं और आसानी से मिल जाती हैं। दूसरा कारण यह है कि आज का इंसान आराम परस्त हो गया है और उसने अपने पारंपरिक साधनों व वस्तुओं का प्रयोग करना छोड़ दिया है। प्रारंभ में ऐसी चीजों का इस्तेमाल शौकिया, फैशन के तौर पर शुरू हुआ लेकिन आज यह हमारी आवश्यकता, मजबूरी और मुसीबत बन चुका है।

गाँधीजी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर संकल्प के साथ 2022 तक भारत को पूर्णतया सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्त करने का इरादा, लक्ष्य बनाया है। प्लास्टिक अधिकतर पेट्रोलियम उत्पाद से बनते हैं और इनमें ऐसा केमिकल पाया जाता है जो पर्यावरण के साथ स्वास्थ्य के लिए भी घातक होता है।

प्लास्टिक नॉन बायोडिग्रेडेबल होता है यह नॉन बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक बैक्टीरिया द्वारा ऐसी अवस्था में नहीं पहुँच पाते हैं जिनसे पर्यावरण को नुकसान ना हो यही कारण है कि प्लास्टिक की एक छोटी सी थैली भी सैंकड़ों साल मिट्टी पानी में पड़े रहने के बाद भी गलती नहीं है और पानी के साथ नदियों और समुद्रों में पहुँच जाती हैं जहाँ यह जलीय जीवों के लिए हानिकारक बन जाती हैं यही कारण है कि 90 फीसदी जलीय जीव पक्षियों और मछलियों के पेट में प्लास्टिक फंस जाता है। परिणाम स्वरूप 700 समुद्री जलीय जीव प्रजातियां विलुप्ति के कगार पर हैं हर साल अनेक जनों की मौत प्लास्टिक से हो रही है सड़क और रास्ता नालियों में पड़ा ऐसा प्लास्टिक हानिकारक रासायनिक गैस छोड़ कर स्वास्थ्य और पर्यावरण को तो नुकसान पहुँचाता ही है साथ ही सीवरेज को जाम कर देता है और तो और जमीन को भी बंजर बना देता है।

कचरे में पड़ा प्लास्टिक कई बार जानवरों के द्वारा खा लिया जाता है और पेट में फंसकर मूक आवारा जानवरों की मौत का कारण बन जाता है यहाँ तक सिर्फ जानवर ही नहीं इंसान भी हर वर्ष औसतन 70000 माइक्रो प्लास्टिक का सेवन कर जाता है जो कि वायु, जल, खाद्य पदार्थों और कई पदार्थों के माध्यम से शरीर में पहुँच जाता है और असाध्य रोगों का कारण बनता है। सबसे ज्यादा प्लास्टिक कचरा सिंगल यूज बोतल और थैलियों का होता है प्लास्टिक के थैले, बोतल अनेक प्रकार के हानिकारक रंग, रंजक और अकार्बनिक रसायनों से मिलाकर बनाए जाते हैं ऐसी वस्तुओं में खाद्य एवं पेय पदार्थों का सेवन करने पर यह कैंसर जैसे अनेक रोगों का कारण बनते हैं।

देश में 26000 टन प्लास्टिक का कचरा पैदा हो रहा है और इस दृष्टि से देखें तो हर भारतीय औसतन सालाना 11 किलो प्लास्टिक का इस्तेमाल कर रहा है। भारत में सबसे ज्यादा सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग ई–कॉमर्स कंपनियाँ कर रही हैं। करीब 40 प्रतिशत ऐसे प्लास्टिक की खबर के सेक्टर में होते हैं। वैश्विक दृष्टि से देखें तो हालात और भी भयावह नजर आते हैं सम्पूर्ण विश्व में प्लास्टिक का उपयोग इतना अधिक बढ़ गया है कि प्रतिवर्ष इतना कचरा फेंका जा रहा है कि उससे पूरी पृथ्वी के चार बार घेरे लग सकते हैं, इसमें एक बड़ा हिस्सा यानी 50 प्रतिशत हिस्सा सिंगल यूज प्लास्टिक का ही होता है।

स्थिति यह है कि आज अगर किसी मौहल्ले में कोई घरेलू उत्सव या शादी विवाह होने पर उस मुहल्ले की गलियां और नालियाँ महीनों तक ऐसे प्लास्टिक से अटी पड़ी रहती हैं इनसे निकलने वाली गैस, दुर्गंध स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव डालती हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि ऐसे प्लास्टिक के रीसाइकिल, रीयूज और प्रबंधन पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

यह भी कटु सत्य है कि ऐसे प्लास्टिक का सिर्फ 9 प्रतिशत कचरा ही रीसाइकिल हो पाता है बाकी बचा हुआ कचरा हजारों वर्षो तक पर्यावरण को क्षति पहुँचाता रहता है। समस्या के बढ़ने का एक कारण उचित प्रबंधन का अभाव भी है प्रबंधन और रीसाइक्लिंग के पश्चात भी इनसे उत्सर्जित होने वाले हानिकारक प्रभावों से बचना असंभव प्रतीत होता है ऐसी स्थिति में रास्ता यही बचता है कि हम सिंगल यूज प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करें उपयोग करने से बचे और उसके विकल्प की तलाश करें।

कुछ विकल्प इस प्रकार हो सकते हैं–

- प्लास्टिक की थैली की जगह पर कपड़े जूट या कागज की थैली का प्रयोग किया जा सकता है।
- प्लास्टिक की थैली को संभाल कर रखे और उसका पुनः इस्तेमाल को करें।
- प्लास्टिक की बोतल की जगह शीशा या धातु की बोतल का इस्तेमाल किया जा सकता है।
- यात्रा पर जाते समय पानी घर से लेकर जाएँ।
- मिट्टी और पारंपरिक बर्तनों, पात्रों के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- उच्च पीटीईटी प्लास्टिक का सामान ही खरीदा जाए क्योंकि आसानी से रीसाइकिल हो जाता है।
- स्वयं प्लास्टिक को नष्ट करने की जलाने

की कोशिश ना करें।

- प्लास्टिक वेस्ट को सर्दी में लकड़ी जलाने, पानी गर्म करने में इस्तेमाल ना करें।
- प्लास्टिक स्ट्रा की जगह पेपर स्ट्रा का प्रयोग किया जा सकता है।
- प्लास्टिक कप की जगह सामान्य कप या पेपर कप का इस्तेमाल किया जा सकता है।
- प्लास्टिक चम्मच की जगह स्टील चम्मच का प्रयोग किया जा सकता है।
- फॉम वाली कटोरी और थैली की जगह दोनों और पतलों का इस्तेमाल फिर से शुरू किया जा सकता है।
- जन्मदिन पर गुब्बारों के स्थान पर इको फ्रेंडली सज्जा की जा सकती है।
- प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट एक बड़ी समस्या बनकर उभरी है। आवश्यकता है कि उचित प्रबन्धन पर ध्यान दिया जाए।
- ज्यादा से ज्यादा री यूज और रीसाइकिल पर जोर दिया जाए।
- जनता में जागरूकता लाई जाए, उन्हें अपने स्वास्थ्य और पर्यावरण के प्रति जागरूक और संवेदनशील बनाया जाए।

तमाम बातों से यही निष्कर्ष निकलता है कि हम सिंगल यूज प्लास्टिक के इस्तेमाल से होने वाले नुकसान के प्रति जागरूक बने, सचेत बने क्योंकि जागरूकता ही हमारी सुरक्षा है। सरकार के द्वारा किसी भी चीज पर बैन लगा देने भर से परिणाम तब तक सार्थक, सकारात्मक नहीं आ सकते जब तक कि उसमें जनता की भागीदारी ना हो, जागरूकता न हो जबकि यह समस्या और उसके दुष्परिणाम तो सीधे-सीधे हम से, जनता से जुड़े हैं, अतः अपने स्वास्थ्य और पर्यावरण जिसमें हम रहते हैं की रक्षा करने के लिए, बचाने के लिए, हमें सिंगल यूज प्लास्टिक के इस्तेमाल से बचना ही होगा, तभी हमारे द्वारा धरती को धरती माता कहने की सार्थकता होगी और हम उसकी सच्ची-सच्ची संतान कहलाने के अधिकारी होंगे।

अध्यापिका
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय,
मंडेला छोटा, फतेहपुर शेखावाटी, सीकर
मो. 9887483059

शैक्षिक चिन्तन

संस्कार, नैतिक मूल्य एवं कौशल विकास

❒ गिरीराज छंगाणी

शिक्षा का जीवन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। शिक्षित व्यक्ति समाज के लिए वरदान सिद्ध होता है। उसमें ज्ञान, विवेक, अनुशासन आचरण तथा परहित चिंतन जैसी क्षमताएँ उत्पन्न हो जाती हैं। शिक्षित व्यक्ति ही नेतृत्व शक्ति प्राप्त कर लेता है। शिक्षा से सर्वांगीण विकास होता है यानि मानसिक एवं शारीरिक विकास। मनुष्य को स्वालम्बन हेतु शिक्षा ग्रहण करनी परमावश्यक है।

आधुनिक समय में शिक्षा के विभिन्न संकाय खुले हुए हैं। विद्यालय, महाविद्यालय स्तर और विश्वविद्यालय स्तर तक शिक्षण व्यवस्था, अध्ययन-अध्यापन की सुविधा उपलब्ध हैं। कहा भी गया है कि ''ज्ञान मनुष्य नेत्रम् तृतीयम'' अर्थात् ज्ञान ही मनुष्य का तीसरा नेत्र है। अतः शिक्षा मानव समाज के लिए अनिवार्य महसूस की जाती है। एतदर्थ निरक्षर को साक्षर बनाने के लिए प्रौढ़ शिक्षा एवं साक्षरता अभियान देश भर में संचालित हुए तथा ढाणी-ढाणी तक शिक्षा की मसाल जलाई जा रही है।

विज्ञान, स्वास्थ्य, कृषि तथा तकनीकी शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के प्रयास निरंतर जारी हैं। चरित्र निर्माण की शिक्षा, नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक शिक्षा से सम्बन्धित पाठ्यक्रम भी लागू हैं।

शिक्षित वर्ग अपने पुश्तैनी पेशों को कुशलतापूर्वक चला सकते हैं परन्तु उनमें श्रम निष्ठा का अभाव महसूस होता है। शारीरिक श्रम से वे दूर भागते हैं, परम्परागत धंधों के प्रति वे बेपरवाह हो जाते हैं यही कारण है कि बेरोजगारी बढ़ती जाती है। दूसरी ओर धनाभाव के कारण वे स्वतंत्र उद्यम भी नहीं कर पाते।

देश के शिक्षाविद्, चिंतक, विचारक और शिक्षा जगत से जुड़े शिक्षकों की सहमति से व्यवहारिक शिक्षा के अभिनव क्षितिज खुलने चाहिए। शिक्षा को व्यवसाय न बनाकर देश की भावी पीढ़ी में नैतिक आदर्श, उच्च चरित्र की भावना और कौशल विकास के प्रति ध्यान आकर्षित किया जाना परमावश्यक है। शिक्षा के द्वार सभी के लिए खुले रहने चाहिए। गरीब, आवश्यकतामंद किन्तु प्रतिभावान छात्रों की हरसम्भव मदद करने की भावना प्रमुखता से होनी चाहिए। शिक्षा मानव का सर्वांगीण विकास करने वाली हो। सत्य, अहिंसा, समता, भाईचारा तथा मानव-मानव में सहृदय का भाव बढ़ाने वाली शिक्षा देश में सकारात्मक सोच को उत्पन्न कर सकती है।

बेरोजगारी के कारण का निवारण करने के लिए कुटीर उद्योगों को पुनः विकसित किए जाने की परम आवश्यकता है। गृह उद्योग मानव के जीविकोपार्जन को समर्थ बनाते हैं। अत्यधिक मशीनीकरण भी बेरोजगारी को बढ़ावा देती है।

शिक्षा का मूल उद्देश्य नागरिक को आत्मनिर्भर करना होता है। आत्मनिर्भरता तभी सम्भव है जब शिक्षित लोग लघु एवं कुटीर उद्योगों की तरफ आकर्षित हो तथा अपने ही क्षेत्रों को प्रारंभ करें तथा सरकारी इमदाद भी हासिल करें। भारतीय समाज की युवा पीढ़ी में सुसंस्कार, नैतिक चरित्र का उत्थान तथा राष्ट्रप्रेम की भावना सुदृढ़ किए जाने की आवश्यकता है।

देश में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, सर्वपल्ली राधाकृष्णन, लाल बहादुर शास्त्री, सरदार वल्लभ भाई पटेल, महिलाओं में सरोजिनी नायडू, सुभद्रा कुमारी चौहान, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, डॉ. रामधारी सिंह दिनकर, हरिवंश राय बच्चन जैसे महापुरुषों ने शिक्षित होकर राष्ट्र की सेवा में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। शिक्षा जगत में अभी भी नूतन क्षितिज खोलने की परमावश्यकता है। इस पर देश हित में खूब विचार मंथन करते हुए शिक्षा में कौशल विकास को भी प्राथमिकता दी जानी परमावश्यक है।

वरिष्ठ सहायक
कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा,
राजस्थान, बीकानेर
मो. 9413769285

प्रेरक-संस्मरण

हौंसला

❒ भोगीलाल पाटीदार

तीन वर्ष बाद तबादला हुआ था। उत्साह से नए स्थान पर सेवाएँ देने विद्यालय पहुँचा। बच्चों की छुट्टी हो गई थी। कुछ अध्यापक जा चुके थे। कुछ जाने की तैयारी में थे। जाते ही समझ गए थे तो सबने आकर अभिवादन किया। वरिष्ठ अध्यापक ने सब का परिचय कराया। उस समय अन्यमनस्क भाव से दिखावटी मुस्कान के साथ सिर हिलाता रहा।

विद्यालय के आसपास तीन घर थे। दूसरे दूर पहाड़ों पर आधा किलोमीटर की परिधि में दिखाई देते थे। सारा पहाड़ी क्षेत्र। जनजाति बाहुल्य होने से आबादी सारी छितराई हुई। विद्यालय के पास ही थोड़ी समतल भूमि दिखती थी। विद्यालय भवन बहुत पहले गाँव के लोगों के श्रमदान से बना था। मिट्टी की दीवारें और छत लकड़ी के डांडों के ऊपर केवलू। परिसर में उसी प्रकार के छोटे कमरे अध्यापकों के रहने के बने हुए थे। रखरखाव के अभाव में ज्यादातर खण्डहर बन गए थे।

आवागमन के नाम पर एक प्राइवेट बस थी जो दिन में दो बार जिला मुख्यालय से आना जाना करती थी। विद्यालय से दो किमी की दूरी पर राष्ट्रीय राजमार्ग नम्बर आठ अवश्य था पर घर से दूरी 105 कि.मी. थी जो तीन बसों को बदलना पड़ता था। सड़क भी उबड़-खाबड़ होने से दुपहिया वाहन से प्रतिदिन आना जाना संभव नहीं था। थक हार कर अध्यापकों के रहने के कमरे में ही पड़ाव डालना पड़ा। आत्मसंतोष इस बात का था कि दो अध्यापक वहाँ रहते थे।

विद्यार्थी विनम्र और आज्ञाकारी थे परन्तु कुछ चावल में कंकड़ की तरह भी थे। देरी से आना और जल्दी चले जाना, गणवेश में न आना आदि। उद्दण्डता बालकों का स्वभाव है। उसी ऊर्जा को सुमार्ग की ओर मोड़ने का काम गुरु का है। महीने भर बाद अभिभावकों की बैठक बुलाई और विद्यार्थियों के नियमितता व अन्य संदर्भों पर चर्चा की। जिससे छात्र और अध्यापक सभी नियमित हो गए।

बरामदे में चपरासी को सफाई सम्बन्धित बात कर रहा था तभी शारीरिक शिक्षक एक बालिका के साथ आकर कहने लगे 'सर! ये लड़की प्रतिदिन देर से आती है। इसको कई बार कहा है कि समय पर आओ लेकिन कानों पर लेती ही नहीं है। गूंगी होकर खड़ी रहती है। प्रार्थना सभा में भी उपस्थित नहीं रहती। इसके कारण विद्यालय व्यवस्था बनाए रखने में दिक्कत आती है। पहले ऐसी नहीं थी। उसके पिताजी को लाने को कहा है लेकिन लाती नहीं है।'

पहाड़ों की कंदराओं के जल स्रोतों का पान करने से सभी बालक-बालिकाएँ कद काठी में लम्बे और हष्ट पुष्ट थे। यह बालिका भी आयु से ज्यादा बड़ी दिखाई दे रही थी। गोरा वर्ण, बालों की लम्बी दो चोटियाँ, बड़ी आँखें, गोल मुँह और भरा चेहरा। बालिका मुँह नीचे किए खड़ी थी। सभी अच्छी तरह से जानते थे कि विद्यार्थियों को किसी भी तरह का दण्ड देने का प्रावधान विद्यालय में नहीं है। फिर भी मनोवैज्ञानिक तरीके से उन्हें समझाना पड़ता है। यह सोच कर कहा 'क्यों देर से आती हो? तुम्हारी तरह दूसरे बच्चे करेंगे तो विद्यालय समय पर कैसे चलेगा?'

'सर देरी हो गई।' बालिका ने आँखे झुकाकर कहा।'

'तुम्हारा क्या नाम है?'

'जी सुनीता'

'सुनीता अब समय पर आना। तेरी ऐसी हरकत की बात दुबारा मेरे पास नहीं आनी चाहिए। जाओ कक्षा में बैठो और अच्छी पढ़ाई करो।' बालिका चली गई फिर अध्यापकजी को कहा 'बालिकाओं को समझाकर छोड़ दो। ऐसी छोटी बात के लिए संस्थाप्रधान के पास बच्चों को लाना उचित नहीं है। उन्हें एक दो बार टोकने से अपनी आदत में सुधार ले आएँगे। साथ ही यह भी पता करो कि बालिका घर से ही देरी से आती है या रास्ते में कहीं देरी करती है। इसकी जानकारी उसके घर के आसपास रहने वाले बालकों को पूछने पर उसकी कोई सहेली से मालूम हो जाएगा। जिससे हम उसके अभिभावक को बता सकें।

एक सप्ताह बाद उसी बालिका को कक्षाध्यापक लेकर आए और नाराजगी भरे चेहरे से बालिका की ओर संकेत करते हुए बोले। सर! ये सुनीता गृहकार्य कभी भी पूरा करके नहीं लाती है। मेरे अकेले की बात नहीं है। सभी विषयों में ऐसा ही करती है। सभी अध्यापकों का दुखड़ा है। इसको कई बार पिताजी को लाने को कहा है लेकिन नहीं लाती। इसकी उपस्थिति भी कम है। यदि नियमित नहीं आएगी तो परीक्षा में नहीं बैठ सकेगी। वैसे पढ़ाई में ठीक है। यदि नियमित आए तो परिणाम भी अच्छा देगी। स्वभाव से भी ठीक है। अध्यापकजी ने एक ही श्वास में उगल दिया मानो कई दिनों से वेदना के भार से व्यथित हो।

सारी बात सुनने के बाद थोड़ा आश्वत हुआ कि बालिका गलत राह पर नहीं है। फिर भी देरी से स्कूल आना संदेह उत्पन्न करता है। इस उम्र में बच्चे कुसंगति में पड़ जाए तो भटक जाते हैं। आजकल बच्चों में सहिष्णुता नहीं है। कुछ कह दिया तो गलत कदम उठा लेते हैं। हाथ से क्यों मुसीबत मोल लेवें? फिर भी कुछ तो कहना है। इस कारण उसके घर के बारे में पूछा 'तू अपने पिताजी को क्यों नहीं लाती है?'

'सर वो घर पर नहीं है।'

'कहाँ गए हैं?'

'ठेकेदार के साथ गुजरात।'

'तेरी माँ को बुला ला।'

माँ का नाम लेते ही सुनीता की आँखे नम हो गई। मुँह में चुनड़ी दबाकर सिसकिया लेकर रोने लगी। कुछ समझ में नहीं आया कि हुआ क्या? केवल दो वाक्य ही तो पूछे हैं। वह भी माता-पिता को लाने के, फिर क्यों रोने लगी। बालिका को कोई माँ का दुःख होना चाहिए। ढाढ़स बँधाते हुए पानी मंगवाकर उसे पिलाया। फिर कहा 'तू रो क्यों रही है।'

'कुछ नहीं सर! रोना आ गया।'

'क्या तेरी माँ डाँटती है?'

सुनीता का मुँह फिर रूआंसा हो गया। रोते हुए कहा 'माँ नहीं है सर।'

माँ की बात सुनकर दुःख हुआ। धीरज बँधाते हुए चुप रखा। बात बदलकर कहा 'तुम कितने भाई बहन हो?'

'एक भाई है। मैं बड़ी हूँ। वह प्राइमरी स्कूल में पढ़ता है।'

'घर पर किसके साथ रहती हो?'

'चाचा-चाची।'

'चाचा क्या करते हैं?'

'वह बीमार हैं। टी.बी. हो गई है। चाची खेती संभालती है।'

'क्या चाची घर पर पढ़ने नहीं देती है? पूरी

बात बता।'

नहीं। सुबह और रात को सबका खाना बनाना, सुबह हेण्डपम्प से पानी लाना, घर की सफाई और गायों का गोबर साफ करती हूँ। समय ही नहीं मिलता। इतना काम करने पर भी डाँट पड़ती है। चाचा बीमार होने से चाची ने इस साल स्कूल आने के लिए मना कर दिया है। पिताजी ने चुपके से फीस भरी है और कहा है कि घर का काम करके सिलाई के बहाने स्कूल जाना। मैं पिछली गर्मियों की छुट्टियों से सिलाई सीखने आती हूँ। घर पर चाची पढ़ने नहीं देती। छोटे भाई और चाची के लड़के को पढ़ाने के बहाने थोड़ा सा गृहकार्य कर लेती हूँ। चाची अनपढ़ है। इस कारण मैं पढ़ती हूँ, वह नहीं जानती। कहते हुए इधर-उधर देखने लगी।

'यहाँ कोई सुनने वाला नहीं है। आराम से बता।'

सुनीता पूर्णरूप से आश्वस्त तो हो गई फिर भी हिरणी की तरह भयभीत होती हुई बोली 'सर! मेरा भाई और चाची के लड़के को स्कूल में रखने के लिए आती हूँ तो भाई के बस्ते में किताब रखकर लाती हूँ। चाची तो यही समझती है कि मैं मेरे भाई और उनके लड़के को स्कूल रखने और लाने का काम करती हूँ। बीच के समय में सिलाई का काम सीखती हूँ। इसलिए कभी-कभी सिलाई सीखने जाती हूँ। किसी दिन तो घर के काम में अधिक व्यस्त रहने से स्कूल का समय हो जाने से खाने का समय ही नहीं मिलता। सारे दिन भूखा रहना पड़ता है। घर पर काम के लिए चाची की डाँट, स्कूल में भी देरी से आने की और काम नहीं करने की डाँट खानी पड़ती है। कई बार मन में आया कि अब पढ़ाई छोड़ दूँ। मन में सोचती हूँ कि पिताजी ने कहा है कि बचपन का कष्ट जीवन भर सुख देगा। इसलिए पिताजी की डाँट और मार के डर से स्कूल आ रही हूँ।'

बालिका की बात सुनकर दुख हुआ। अनेक झंझावातों से जूझती हुई स्कूल पढ़ने आती है। बालिका में विद्या के प्रति पिपासा है। भरे मन से सांत्वना देते हुए कहा 'देरी हो जाए तो कोई बात नहीं है। सभी गुरुजनों को कह दूँगा। अब तुझे कोई नहीं डाँटेगा। स्कूल में आए तब मन लगाकर पढ़ाई करना। तू मेहनत करेगी तो पास हो जाएगी। तेरा भविष्य उज्ज्वल बन जाएगा। एक बात याद रखना स्कूल आने के बाद सर से छुट्टी लेकर स्कूल से बाहर जाना। इस वर्ष दसवीं में है। अच्छी मेहनत करेगी तो पास हो जाएगी। तेरी नौकरी कहीं लग जाएगी।' सुनीता ने स्वीकारात्मक सिर हिलाया और कक्षा में चली गई।

सुनीता की पढ़ाई के प्रति ललक और समय के अभाव की बात सभी विषयाध्यापकों को कह दी। सभी उसके प्रति सहानुभूति रख कर अधिक ध्यान देने लगे। गर्मी की छुट्टियों में मेरा स्थानान्तरण दूसरी जगह हो गया था फिर भी सुनीता के परीक्षा परिणाम का पता लगाया। उसके प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होने पर आत्मसंतोष हुआ।

समय अपनी गति से चल रहा था। एक दिन पास के गाँव के अस्पताल में बीमार व्यक्ति को मिलने गया। आउट डोर के पास आवाज सुनी सर! सर!! पीछे मुड़कर देखा लेकिन कोई परिचित नहीं था। कदम आगे बढ़ाया तो फिर आवाज आई। सर! प्रिंसिपल साहब। मुड़कर देखा तो एक नर्स ने नमस्ते करके चरण छूते हुए कहा 'मैं बुला रही हूँ।'

'मैंने आपको पहचाना नहीं।'

'सर! मैं सुनीता। देर से आने वाली। मेहनत किसी की बपौती नहीं। यह हौंसला आपने ही कहकर बढ़ाया था। आपके स्नेह और दुलार से मैं दसवीं अच्छे अंकों से पास हो गई। जिससे मुझे नर्सिंग में दाखला मिल गया और नर्स की नौकरी भी मिल गई। दो महिने से इसी अस्पताल में हूँ।' हर्षातिरेक के आवेग से अवरुद्ध कंठ से बधाई दी। मन में हुआ कि शिक्षक की यही दौलत है। घर आने का कहकर घर का पता बताया। यह पल अविस्मरणीय था।

प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
किसनपुरा रोड, सीमलवाड़ा, डूँगरपुर, (राज.)-314403
मो: 9783371267

बोध कथा

ज्ञान को प्रयोग में लेने पर ही प्रभाव दिखता है

❒ संगीता भाटी

भगवान बुद्ध ने देश भ्रमण करते हुए एक बार किसी नदी के तट पर डेरा डाला वहाँ, बुद्ध जीवन के विभिन्न आयामों पर प्रतिदिन व्याख्यान देने लगे, बोध कथा सुनाने लगे, जिन्हें सुनने दूर-दूर के गाँवों के लोग आने लगे। बुद्ध के प्रवचनों में एक तरह का प्रवाह था, तत्व ज्ञान था तथा उन प्रवचनों में जीवन का सार छिपा हुआ था। कहा जाता है कि उनकी वाणी से श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो जाया करते थे।

वहीं, भक्तों में समीप के एक गाँव का निवासी भी आया हुआ था। वो व्यक्ति बिना नागा किए हुए उनके व्याख्यान सुनता था। यह क्रम महीनों तक यूहीं चलता रहा पर इतने समय बीत जाने पर भी उसने अपने अंदर कोई बदलाव नहीं पाया। वो इससे बहुत परेशान हो गया। एक दिन प्रवचन के बाद जब सब लोग चले गए तो वह व्यक्ति बुद्ध के पास जाकर बोला कि भगवान, मैं लम्बे समय से लोभ इत्यादि छोड़कर एक अच्छा इंसान बनने के आपके प्रवचनों को सुनता आया हूँ. उन्हें सुनकर मैं उत्साह से ओत-प्रोत हो जाता हूँ. परंतु इन बातों से मुझमें किसी तरह का बदलाव नहीं महसूस हो रहा।

उसकी ये बातें सुनकर बुद्ध मुस्कुराए। उन्होंने स्नेह से उस व्यक्ति के सिर पर हाथ फेरा और बोले कि वत्स, तुम कौन से गाँव से आए हो? उस व्यक्ति ने जवाब दिया कि मैं पीपली गाँव से आया है। फिर बुद्ध ने पूछा कि उसका गाँव इस स्थान से कितना दूर है? उसने जवाब दिया कि करीब दस कोस। बुद्ध ने पुन: प्रश्न किया कि तुम यहाँ से अपने गाँव कैसे जाते हो? इसपर वो व्यक्ति बोला कि गुरुदेव, मैं पैदल ही जाता हूँ, परंतु आप भला मुझसे ऐसा क्यों पूछ रहें हैं? बुद्ध ने उसकी इस बात को अनसुना कर फिर पूछा कि क्या ऐसा संभव है कि तुम यहाँ बैठे-बैठे अपने गाँव पहुँच जाओ? उस व्यक्ति ने झुंझलाकर उत्तर दिया कि ऐसा तो बिलकुल भी संभव नहीं। मुझे वहाँ तक पहुँचने के लिए पैदल चलकर जाना ही होगा तभी मैं वहाँ पहुँच पाऊँगा।

बुद्ध ने कहा कि अब तुम्हें तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मिल गया है यदि तुम्हें अपने गाँव का रास्ता पता है। उसकी जानकारी भी है परंतु इस जानकारी को व्यवहार में लाए बिना, प्रयत्न किए बिना, पैदल चले बिना तुम वहाँ कैसे पहुँच पाओगे? उसी प्रकार यदि तुम्हारे पास ज्ञान है और तुम इसको अपने जीवन में अमल में नहीं लाते हो तो तुम अपने आप को एक बेहतर इंसान नहीं बना सकते। ज्ञान को अपने व्यवहार में लाना आवश्यक है। इसके लिए तुम्हें स्वयं दृढ़ निश्चय के साथ निरंतर प्रयास करने होंगे तथा सीखी गई बातों को जीवन की विभिन्न स्थितियों में निरंतरता के साथ प्रयोग में लाना होगा।

देखा जाए तो वास्तव में हम अपने जीवन में तभी एक तरह का परिवर्तन महसूस कर पाते हैं जब हम अपने गुरुओं या अच्छी किताबों से सीखी गई पद्धतियों को अपने व्यवहार में, अपने जीवन में शामिल करते हैं। बिना प्रयास के केवल सुन भर लेने से भला कैसे किसी में बदलाव आ सकता है।

संगणक, शिविरा प्रकाशन अनुभाग
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

पुस्तक समीक्षा

सुधियों की देहरी पर

कवयित्री : तारकेश्वरी तरु 'सुधि', **प्रकाशन वर्ष**: 2019, **प्रकाशक**: अयन प्रकाशन, नई दिल्ली-110030, **पृष्ठ संख्या**: 96, **मूल्य** : ₹ 200

सृजन की चाह व्यक्ति की आदिम चाह है। प्रकृति की भाँति व्यक्ति भी स्वयं को विविध माध्यमों एवं कला रूपों से रचता, अभिव्यक्त करता आया है। प्रत्येक देश और प्रत्येक भाषा में मानवीय सृजन, चिन्तन, शिल्पगत कौशल और जीवन-जगत के विविध रूपों की उत्कर्षपूर्ण रचनाओं का शानदार इतिहास आज भी सुरक्षित हैं। उन्हें देखकर तथा उनका अनुशीलन करके आने वाली पीढ़ियाँ सृजन के नए प्रतिमान रचती आई है। कविता कर्म की भाववाचक संज्ञा है। अन्तर्मन में उठने वाले भावान्दोलन प्रवाह है जो शब्दों की सिकता पर अनगिन शंख-सीपियों के आलेख छोड़ जाता है। कविता मात्र शब्द नहीं, हृदय-वृन्त पर खिला ऐसा शब्द प्रसून है, जिसमें अन्तःस्वरों की गंध बसी रहती है। यह गन्ध ही उसका स्वत्व है, उसकी नैसर्गिक पहचान है। यह सही है कि काव्य शक्ति है, किन्तु विध्वंसक शक्ति नहीं। इसलिए उसका उद्देश्य अरमणीय को रमणीय, असुन्दर को भी सुन्दर बना कर प्रस्तुत करना है। ऐसा ही प्रयास 'तारकेश्वरी तरु 'सुधि' का है जिन्होंने अपनी नवीन व प्रथम काव्य कृति 'सुधियों की देहरी पर' में बखूबी किया है। 'सुधि' ने अपने मन के भावों को प्रकट करने के लिए काव्य विधा में 'दोहा' विधा को चुना है। इनके दोहे मर्मस्पर्शी व उत्कृष्ट काव्य की प्रस्तुति है। 96 पृष्ठों की यह कृति बहुत ही सुन्दर व आकर्षक है।

'सुधियों की देहरी पर' कृति में तारकेश्वरी ने अपने रचित दोहों के माध्यम से विभिन्न विषयों पर सकारात्मक सन्देश देने का प्रयास किया है। इन दोहों की सार्थकता वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में बहुत महत्त्वपूर्ण है। कवयित्री तारकेश्वरी ने बहुत ही सूझबूझ से इन दोहों के माध्यम से समाज के अनछुए पहलुओं पर अपनी सटीक बात कहने में कामयाब हुई है। कवयित्री ने इस कृति की शुरूआत भगवान गणेश से कर माँ शारदा का आशीर्वाद प्राप्त किया है। हिन्दी भारत की राजभाषा के रूप में पहचानी जाती है। हरेक भारतीय के दिल में हिन्दी का स्थान है। हिन्दी की उपेक्षा करना उचित नहीं है। अंग्रेजी जैसी दूसरी भाषाओं को भी जानना, पढ़ना आवश्यक तो है, परन्तु हिन्दी की कीमत पर नहीं। इस दोहे में देखिए-

आज जिसे देखो, करे इंग्लिश का गुणगान।
आओ मिलकर दें, सभी हिन्दी को सम्मान।।

कवयित्री सामाजिक और पारिवारिक परिवेश पर अपनी स्पष्ट सोच रखती है। सभी प्रकार के आपसी सम्बन्ध सहानुभूति व स्नेह पर ही स्थिर रहते हैं और आपसी सौहार्द्र में वृद्धि होती है। परिवार भी टूट के शिकार नहीं होते हैं। एक साथ रहते हुए कई बार अनबन हो जाए तो मनाने में भी झिझक नहीं होनी चाहिए, इससे सम्मान बढ़ता है। इस दोहे में एक बानगी देखिए-

अपना यदि रूठे कभी, उसे मनाओ आप।
बैर-भाव को दूर कर, दिल पर छोड़ो छाप।।

गलती करना ना समझ लोगों का काम होता है। परन्तु विद्वान लोग उन्हें क्षमा करने में गौरवान्वित महसूस करते हैं। ऐसे ही कुछ दोहे इस कृति की शान बढ़ाते हैं। इसी प्रकार दीपावली पर्व को लेकर लिखे गए दोहे वर्तमान सन्दर्भ में ठीक ठुकते हैं। त्योहारों के अवसर पर बाजार की रौनक देखने लायक होती है। इस गहमागहमी में व्यवसाय करने वालों की चाँदी हो जाती है। इस सन्दर्भ में रचित यह दोहा-

आवाजाही से बढ़ी, रौनक-ए-बाजार।
जब आई दीपावली, और बढ़ा व्यापार।।

राजस्थान की आन-बान पर लिखे दोहे, राजस्थान के वीरों की गाथा का बखान करते हैं। परन्तु जब अपने ही शत्रु पक्ष के हो जाएँ तो लंका ढहने में देर नहीं लगती। कितना सटीक है यह दोहा-

आन-बान खातिर उठी, सदा यहाँ तलवार।
पाई राजस्थान ने, बस अपनों से हार।।

हमारे देश की महान संस्कृति और चरित्रवान लोगों द्वारा पूरे विश्व में जो परचम फहराया गया है, वह काबिले तारीफ है। एक समय था जब भारत को विश्वगुरु की उपाधि प्राप्त थी, पूरे विश्व को सन्देश देने वाले उस अजय भारत की महिमा इस दोहे से प्रमाणित होती है-

उन्नत, भाषा, संस्कृति, मूल्य, सोच परिवेश।
इनसे ही है विश्वगुरु, अपना भारत देश।।

जनसंख्या वृद्धि एक विकट समस्या के रूप में उभरी है। इसी के साथ कन्या भ्रूण हत्या व्यापक रूप से समाज के सामने है। बेटे की चाहत में निर्दोष बालिकाओं को इस संसार में आने से पहले ही मार दिया जाता है जो सभ्य कहलाने वाले समाज के माथे पर कलंक है। घटता बालिका लिंगानुपात एक चिन्ता का विषय है। कवयित्री 'सुधि' ने समाज का ध्यान इस दोहे के माध्यम से आकर्षित किया है-

करो न हत्या गर्भ में, बेटी तेरा अंश।
रखना है अस्तित्व में, उसे किसी का वंश।।

नारी की वीरता की गाथाएँ भारत व राजस्थान के इतिहास में गौरवपूर्ण अध्याय के रूप में वर्णित है, वे चाहे बच्छेन्द्रीपाल, रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती हो या राजस्थान की वीरांगनाएँ। इस दोहे से स्पष्ट है-

कर्णावती, पद्मावती, राजस्थान की शान।
जग कैसे भूले भला, पन्ना का बलिदान।।

जल संरक्षण या जल संचयन पर पूरे देश में आन्दोलन चल रहा है। जल इस धरा पर सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है। हमने अभी भी जल संरक्षण पर ध्यान नहीं दिया या सचेत नहीं हुए तो भविष्य में गंभीर जल संकट उत्पन्न हो जाएगा। कवयित्री ने जल संरक्षण से सम्बन्धित यह दोहा पाठकों के सामने रखा है।

कुआं खोद या बावड़ी, करो इकट्ठा नीर।
व्यर्थ किया इसको अगर, तुम भुगतोगे पीर।।

विश्व पर्यावरण में हो रहे बदलाव में मनुष्य स्वयं दोषी है। बढ़ते प्रदूषण के कारण शुद्ध वायु मिलना कठिन हो गया है। कल-कारखानों के धुँए व महानगरों में निकलने वाला गंदा पानी जब हमारी पवित्र नदियों में मिलता है तो स्थिति और भी दयनीय हो जाती है। दूसरी ओर बढ़ती

जनसंख्या के कारण महानगर व नई कॉलोनियाँ बसाई जा रही है और जंगलों को काटा जा रहा है, जो निसंदेह भविष्य के लिए चिन्ताजनक है। कट रहे पेड़ों व वातावरण परिवर्तन पर यह दोहा कितने सटीक है।

गरमी से बेबस हुए, धरती के हालात।
पेड़ काट खुद पर किया, मानव ने आघात।।

कवयित्री तारकेश्वरी ने सामाजिक परिवेश से सम्बन्धित प्रत्येक विषय को अपने दोहों में जगह दी है। चाहे ये दोहे प्रेम प्रसंग, आपसी मनमुटाव, विद्यालयों की स्थिति, बादल, वर्षा, धार्मिक स्थानों, बेटियों को सम्मान देने, बालिका शिक्षा व प्रकृति के मनोरम दृश्यों, वियोग का दृष्टांकन, पेड़-पौधों को लेकर लिखे गए हों या पशु-पक्षी, वर्तमान सन्दर्भ में सामाजिक विद्रूपताओं व आर्थिक पक्ष को लेकर लिखे गए दोहे सारगर्भित व सीखप्रद हैं।

कवयित्री ने शब्द शिल्प की कारीगिरी से ऐसे सुन्दर दोहों की रचना की है जो सरलता से सहज ही पाठक की समझ में आ जाते हैं। सभी दोहे बिना शब्दों की कलिष्टता में उलझे, सरल है, पाठक को समझने के लिए माथापच्ची नहीं करनी पड़ती। दोहे ज्ञानप्रद, पाठकोपयोगी व समयानुकूल हैं। सीख से भरपूर ये दोहे हमारी संस्कृति को संजोए रखने में कामयाब हुए हैं।

इसी सन्दर्भ में इस कृति की भूमिका लिखने वाले त्रिलोक सिंह ठकुरेला लिखते हैं कि 'तारकेश्वरी तरु' 'सुधि' का यह दोहा संग्रह कुछ आपबीती कुछ जगबीती से परिपूर्ण है। यह वर्तमान समय में संवाद करता हुआ काव्य कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। विनीत चौहान ने भी तारकेश्वरी के इस पहले काव्य संग्रह की हृदय से सराहना की है।

हिन्दी साहित्य में 'सुधियों की देहरी पर' एक पाठकोपयोगी दोहा संग्रह है। इस कृति का मुखावरण रोचक व आकर्षक है। यह पुस्तक विद्यालयों व पुस्तकालयों में संग्रहणीय है। कवयित्री 'सुधि' को साधुवाद कि उन्होंने एक निराली कृति पाठकों के सामने रखी है। इनका प्रथम प्रयास प्रशंसनीय है।

समीक्षकः **रामजीलाल घोड़ेला**
प्रधानाचार्य, C/o राज क्लॉथ स्टोर,
लूणकरणसर, बीकानेर (राज.)
मोः 9414273575

सम्भवामि युगे युगे

लेखक : हुक्मीचंद लाम्बीवाला; **प्रकाशक** : श्री चार मरुवा सेवा ट्रस्ट, जी-3, लक्ष्मी भवन, 72 नेहरु प्लेस, नई दिल्ली-110019; **पृष्ठ संख्या** : 256; **संस्करण** : 2019; **मूल्य** : ₹ 150

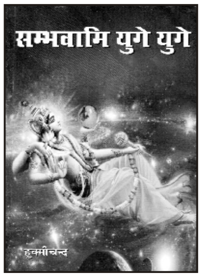

समीक्ष्य पुस्तक 'सम्भवामि युगे युगे' भारत भू भाग पर अवतीर्ण देवांशधारी महान रचनाकार महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित महाकाव्य 'महाभारत' के आधार पर श्री हुकमी चन्द लाम्बीवाला द्वारा लिखी गई है।

'महाभारत' जीवन दर्शन है। इसमें हमारे जीवन और रिश्तों पर कर्म-व्यवहार का क्या प्रभाव होता है उसका विस्तृत वर्णन किया गया है। साथ ही साथ यह भी दर्शाया गया है कि श्रेष्ठ कर्म-व्यवहार कैसे बनाए जा सकते हैं, जिससे विकार उत्पन्न न हो। पुरुषार्थ के चारों आधार को कैसे सुदृढ़ बनाया जावे, परिवार और राष्ट्र के श्रेष्ठ निर्माण और उसके संचालन में मुखिया की भूमिका कैसी होनी चाहिए, इसे दर्शाया गया है। जीवन में ज्ञान प्राप्ति पर बल दिया गया है। समाज में नारी की भूमिका को समझने तथा उनके साथ किए जाने वाले व्यवहारों (अच्छे-बुरे) के परिणामों को दृष्टान्त के साथ सविस्तारपूर्वक दर्शाया गया है। सुसंस्कृत जीवन बनाने हेतु इसमें योगेश्वर श्री कृष्ण, महात्मा विदुर व गांगेय भीष्म की श्रेष्ठ नीतियों का उल्लेख किया गया है, जो प्रत्येक व्यक्ति को दिशा देने वाली है।

यह महाकाव्य आज भी प्रासंगिक है, चूंकि यह 'दर्शन' है जो प्रत्येक काल में हमें सन्मार्ग पर चलने को प्रेरित करता है तथा मन-वचन-कर्म से की गई उचित-अनुचित क्रियाओं के परिणामों का बोध करवाता है।

इस महाकाव्य पर अनेक लेखकों ने समय-समय पर लघु-विस्तृत लेखन किया है। चलचित्र एवं दूरदर्शन के माध्यम से भी इसे दर्शाया गया है। यह उन महान लेखक की इस श्रेष्ठ कृति का ही प्रभाव है कि व्यक्ति इसे पढ़ने के लिए इसकी ओर आकृष्ट होता है तथा लिखने के लिए प्रेरित। समीक्ष्य पुस्तक भी इसी का परिणाम है। श्री लाम्बीवाला ने 'महाभारत' महाकाव्य के सारभूत आख्यानों को इकतालीस अध्यायों में वर्णित किया है। जो इस महाकाव्य के प्रारम्भ से समापन तक की विशिष्ट घटनाओं पर आधारित हैं। इसे कथात्मक भाषा शैली में वर्णित किया गया है। महाभारत में उल्लिखित संस्कृत के श्लोकों की भावार्थयुक्त व्याख्या सरल हिन्दी भाषा में करके, इसे पठनार्थ प्रस्तुत किया गया है।

वस्तुतः 'महाभारत' मानवी स्वभाव पर आधारित महाकाव्य के रूप में एक ऐसी अनुपम रचना है जो पृथ्वी पर मानव की सृष्टि के रहने तक उसे धर्म के सन्मार्ग पर चलते रहने की प्रेरणा समय-समय पर देती रहने वाली है। अतः प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक 'सम्भवामि युगे युगे' सार्थकता लिए है।

समीक्ष्य पुस्तक महाभारत एवं श्रीमद् भगवद् गीता को पढ़ने-समझने का ध्येय रखने वालों के लिए सहायक है चूंकि प्रसंग रुचिकर ज्ञानवर्धक हैं तथा भाषा सरल है। पुस्तक का मुद्रण सुन्दर है, मूल्य उचित है। परन्तु अनुक्रमणिका का प्रकाशन न होने से पुस्तक के स्वरूप में कमी दृष्टिगोचर होती है।

समीक्षक : **सतीश चन्द्र श्रीमाली**
जस्सुसर गेट रोड, धर्म कांटे के पास,
बीकानेर (राज.)
मो. 9414144456

धुन्ध, धुआँ और धूप

लेखक : सुरेशचन्द्र सर्वहारा; **प्रकाशक** : साहित्यागार, चौड़ा रास्ता, जयपुर; **संस्करण** : 2019; **पृष्ठ** : 119; **मूल्य** : ₹ 200

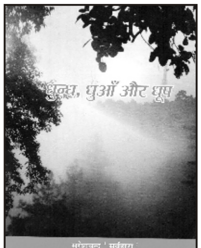

यशस्वी वरिष्ठ साहित्यकार एवं सुरुचिपूर्ण बाल साहित्य के सृजनकार सुरेशचन्द्र 'सर्वहारा' की 'धुन्ध, धुआँ और धूप' बीसवीं कृति है। यह छंद मुक्त कविताओं की अनुपम काव्य कृति है। इसमें कुल 50 कविताएँ संगृहीत हैं जो आधुनिक भाव बोध एवं प्रगतिवादी चिंतन की भावपूर्ण झलकियाँ प्रस्तुत करती हैं।

ये कविताएँ जनमानस की चेतना को झंकृत कर उनमें संवेदना का सागर उँड़ेल देती हैं। इनमें जहाँ जीवन की विसंगतियों एवं विद्रूपताओं

का पर्दाफाश हुआ है, वहीं युगीन यथार्थ बोध की सघन अनुभूतियों की भी सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।

कवि ने आम आदमी के संघर्ष, दुख-दर्द, संताप, संत्रास एवं अकेलेपन की मर्मव्यथा को बड़ी संजीदगी से रूपायित किया है।

प्रस्तुत काव्य संग्रह सामाजिक सरोकारों से अनुस्यूत है तथा जीवन में सनातन मानवीय मूल्यों के संरक्षण की वकालत करता है। आलोच्य कृति में प्रकृति के नैसर्गिक सौंदर्य एवं उसके अवदान को चित्रात्मक शैली में बड़ी शिद्दत से उद्घाटित किया गया है तथा प्रकृति के माध्यम से मानव समाज को प्रेरक सन्देश दिया है।

कवि 'धूप' कविता में उसका मानवीकरण प्रस्तुत करते हुए आभार-प्रकट करता है- ''आभारी हूँ धूप/जो भर जाती हो तुम/मेरे ढलते जीवन में/सुबह-सुबह ही/खुशियों के रंग/वरना कौन निभाता है/आज के समय में/यूँ रोज-रोज आकर/बिना मतलब/किसी का संग।''

इसी प्रकार 'सांझ की धुंध' एवं 'ढलती हुई शाम' कविता में भी प्रकृति के अप्रतिम भावबिम्बों की सुंदर सर्जना की गई है।

''जाने के बाद, तुम्हारी याद, असामयिक मौत, दुःख व बीता हुआ पल'' करुण रस की अप्रतिम कविताएँ हैं, जो विछोह जन्य अवसाद का मार्मिक उद्घाटन करती हैं। संग्रह की 'प्यार के फूल' कविता सरल भाषा में प्रेम, सौहार्द्र एवं भाईचारे का अनुपम संदेश देती है।

यथा-''दीवारें उठी हैं/सीमा पर ऊँची-ऊँची-ऊँची/लेकिन खिले हैं दोनों ही ओर/लोगों के मन में/प्यार के फूल/उड़ रही है गन्ध/संस्कृतियों की दीवारों को फाँद/मिल रही है गले/सभी गिले-शिकवे भूल।''

''चिमनी का धुँआ, खालीपन, अकेलापन, अकेली, मार्ट की लड़की, लुटी हुई नदी'' आदि कविताएँ आधुनिक युग बोध की त्रासदियों को रेखांकित करती हैं तथा ''वह सफाई वाली, झोंपड़-पट्टी के लोग, आम आदमी, घटिया किस्म के आम'' आदि कविताएँ प्रगतिवादी चिंतन की अत्यंत मर्मस्पर्शी कविताएँ हैं, जो पाठकों की चेतना को आंदोलित कर उन्हें झकझोर देती हैं। मिट्टी के दीप आध्यात्मिक चिंतन की उत्कृष्ट कविता है।

इनके अतिरिक्त ''आतंकवाद, अच्छे दिनों की आस, शहर में पेड़, काली चिड़िया, पेड़ और पिता, जंगली शहर, गौरैया तथा शांति कपोत'' संग्रह की श्रेष्ठ कविताएँ हैं जो सरल और सुबोध भाषा में सामयिक परिवेश एवं स्थितियों का पारदर्शी चित्रण प्रस्तुत करती हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सुरेशचन्द्र 'सर्वहारा' द्वारा रचित धुन्ध, धुआँ और धूप' काव्य संग्रह भाव, भाषा शिल्प, अभिव्यक्ति कौशल, काव्य अभिप्रेत, शीर्षक एवं सन्देश की दृष्टि से अत्यंत उत्कृष्ट व उपादेय है। कृति पठनीय और संग्रहणीय है। लेखक को कोटिशः साधुवाद।

समीक्षक : **ज्ञानप्रकाश 'पीयूष'**
1/258, मस्जिदवाली गली,
तेलियान मोहल्ला, सदर बाजार के समीप,
सिरसा (हरियाणा)-125055
मो. 9414537902

भूतणी
(राजस्थानी बाल उपन्यास)

उपन्यासकार : श्री देवकिशन राजपुरोहित
प्रकाशक : राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
संस्करण : 2019 **पृष्ठ संख्या** : 48 **मूल्य** : ₹ 80

लोकमानस री मनगत नै चौवड़ै करै-भूतणी

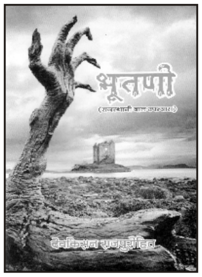

राजस्थानी साहित्य री गद्य विधावां माथै लगौलग लिखण रौ जसजौग काम लूंठा उपन्यासकार अर वरिष्ठ पत्रकार मानजौग मारवाड़ रतन श्री देवकिशन जी राजपुरोहित करै।

आप आपरी लेखणी रै पांण राजस्थानी उपन्यास रौ परयाय पण बण गिया है। आपरी उन्यास जातरा मांय-सूरज, जंजाळ, कपूत, धाड़वी, कंळक, दातार, लिछमी, किशन, किरण, बीनणी, खेजड़ी, संथारौ, मीरां, भंवरी, गजबण, अर चोथौ पागौ आद सामळ है। औ बाळ उपन्यास 'भूतणी' राजस्थानी बाळ उपन्यास विधां सारू संजीवणी रौ काम करै। ठैठ राजस्थानी रंग मांय रंगिज्यौड़ा श्री देवकिशन जी राजपुरोहित लेखन रै सागै राजस्थानी भासा मान्यता सारू भी सदीव आगीबांण रैया है।

औ उपन्यास गाँव री जिनगाणी रौ सांचौ चितराम उकेरै। राजस्थानी लोक मानस री मनगत नै चौवड़ै करै। राजस्थानी परम्परा मुजब दादाजी-दादीजी आपरै घर-गुवाड़ी रा टाबरियां नै वैळू-वैळ्या पछै बातां सुणावता हा। टाबरां रै सागै लुगाईयां अर मोट्यार भी इण बातां नै अणूताचाव सूं सुणता हा। बातां री सरुवात तो छोगा सूं ई हुवती ही, जिणसूं हरेक सुणणवाळा रौ ध्यान बात माथै अटक जावतौ हौ। भूत-भूतणी, राकस-राकसणी, इंदर-अपछरावां, नरग-सरग, सेठ-सेठाणी, चोर, घाड़ायतां आद री बातां घणी जगचावी ही।

औ बाळ उपन्यास 'भूतणी' रै औळावै समाज मांय व्याप्त अंधविस्वास अर कुरीतियां नै हदभांत मिटावण री बात करै। लोक री मनगत नै चौवड़ै करण रै सागै नूंवी दीठ राखै। इण उपन्यास मांय टाबर हेतियां अर चेतियां रै सागै राव सुखजी, लालजी, जसजी, बिसनोजी, घीसोजी, रूगजी, किसनोजी, सांवतरामजी, देबूजी, धनजी पटवारी, धापू काकी, बिरमचारीजी, हरीजी, कुनणजी, हनीफजी, हापूजी, सन्तोकजी, दिनेशजी अर जितुणी आद चरित्रां रै मारफत भूतणी रौ रचाव करीज्यौ है।

संसार रै रहस्यां मांय आत्मा, परमात्मा अर बिरमाण्ड महताऊ गिणीजै। आजलग भी आमजन सूं लेय'र वैग्यानिक तांई इण रहस्य री खोज मांय लागयौड़ा है। आत्मा रौ ई अेक रूप है-भूत री जूणी। इणभांत भूत अर भूतणी लोकमानस माथै घणौ असर राखै। मिनख जद अधूरी इच्छावां सागै कुमौत मर जावै तौ लोकमान्यता मुजब बौ भूत री जूणी पावै। उपन्यास रा सिरै पात्र हेतियो अर चेतियो इणीज रहस्य नै जाणण री आफळ हरमेस करता रेवै अर भूतणी रौ सांच सेवट गांव साम्ही चौवड़ै करै।

उपन्यास री सरूवात बूढ़ा-बडेरां कांनी सूं कैवीजणआळी बातां सूं हुवै, जिण मांय हेतिया अर चेतिया रै कैवणै सूं भूतां री बातां दरसाव-दर-दरसाव बरणीजै। इण उपन्यास मांय भूतणी रौ रूप-सरूप लोकमानस री दीठ सूं ई बतायीज्यौ है क्यूंक ''आज तांई भूतणी देखणियौ कोई जीवतो ई कोनी रह्यौ। (पेज-9)। भूत-भूतणी री बातां सुणण सूं टाबरियां डरफै तो बीजै कांनी रहस्य जाणण री हूंस रै परवाणै पूरी बात सुणै। लोक मान्यता मुजब भूत रा पग ऊंधा, पड़-छाया नीं हुवणी, तावड़ा मांय मेह बरसै तो भूत-भूतणी परणीजै, भूत री चोटी

सूं भूत बख में आ जावै, भूत नै पकड़'र सीसी मांय घालणौ, भूत सूं बकरौ, लरड़ी, भैंस, भतूळियौ आद बण जावणौ आद रौ बरणाव हुयौ है। बिलोवणौ स्यारीजणौ अर पित्तर रूप रौ बरणाव भी हुयौ है।

उपन्यास मांय छोटा टाबरां मांय रोग हुवण रै इलाज सारू झाड़-फूंक, ताबीज आद माथै करारी चोट कर'र ''भरम रा भूत'' नै मिटावण रौ बरणाव हुयौ है। ''दवाई दिराय दी तौ भूतणी पैली लेय जावैली। पछै थारी थै जाणौ। (पेज 14)'' हां आ बात बिसवाबीस खरी है'क ठगावै कुण-कै रोगी, कै भोगी। बीमारी रै मांय टाबरां रा मायत सगळा पड़पंच अर जतन कर लेवण मायं ई भलाई मानै। पण अन्धविस्वास री परम्परा नै उपन्यासकार तोड़ण मांय सेवर सफळ हुय जावै।

''हेतिया अर चेतिया रौ माथौ ई काम नीं करै। कांई, दादी कूड़ी है? कांई रावजी कूड़ा है? कांई मास्टरजी कूड़ा है? कुण कुड़ौ अर सांचौ, निरणै नीं कर सकै। (पृ. 19)'' अठै गतागम मांय पज्यौड़ा निगै आवै-हेतियो'र चेतियो। बाळ मनगत तो म्यांनौ चावै पण खुदोखुद विरोळ नीं कर सकै'क सांच कांई अर कूड़ कांई। टाबरां सारू आपरी दादीसा ई सौ टक्का खरी तौ मास्टरजी ई सौळा आना सांचा। इण रौ म्यांनौ जाणण सारु ई टाबरिया मौकौ मिलता ई भूंता री बात सुणण री फरमाईश करता रैवता हा। बातां रै दरम्यान ई 'भूताळी बावड़ी' धनजी पटवारी अर वां रा बापूजी री बातां उणां नै भळै गतागम मांय पजावै अर वै म्यांनौ जाणण री आफळ करता ई रैवै।

सेवट धापू काकी रै मारफत टाबरियां भूतणी रौ म्यांनौ जाण लेवै। साथै ई उपन्यासकार इण जीवत-भूतणी नै संजीवणी (नातौ) देय'र उणां रै जीवण मांय सुरगा री मौजां थरपण मायं सफळ हुय जावै।

उपन्यास मांय ठैठ गांवाई खेल सतोळियो, लुकमिचणी, चर-भर, नार-कांकरी आद रौ बरणाव करै। गांव री रीत, गुवाड़ री हथाईयां, सुख-दुख री मेळप अर पंच-परमेस्वर आद रौ ठावकौ बरणाव हुयौ है। उपन्यास मांय अन्धविस्वास माथै करारी चोट करी है। झाड़-फूंक री ठौड़ दवा-दारू लेवण री बात हुयी है। उपन्यास रौ मुख्य विसय अेक सामाजिक बुराई है-बाळ विधवा सेवट उपन्यासकार इण कूड़ी रूढ़ी नै तोड़'र विधवा ब्याव रौ सरजाम कर'र सामाजिक बदलाव कांनी सांनी करै।

उपन्यास री भासा सरल अर लोक रूप ली थकी है। ठौड़-ठौड़ आडी-औखाणा रौ सांतरौ प्रयोग हुयौ है। साथैई उपन्यासकार री जबरी मठोठ अर लळब सूं उपन्यास अेक चलचित्र री भांत अेक अेक चितराम साम्ही राखतौ लखावै।

समीक्षक-**डॉ. रामरतन लटियाल**

प्राध्यापक राजस्थानी साहित्य

बी-5, गाँधी नगर विस्तार, मेड़ता-341510,

नागौर (राज.), **मो. 9783603087**

अनूठी पहल

शिक्षा चौपाल: एक नवाचार

❒ महेश कुमार मंगल

ठहराव युक्त शत प्रतिशत नामांकन एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए क्या हम तैयार है? यदि हो तो धौलपुर जिले में जिला कलेक्टर के निर्देशन में जिला निष्पादक समिति की बैठक में लिए गए निर्णयानुसार जिले के प्रत्येक गाँव के विद्यालय प्रांगण में प्रत्येक शनिवार को शाम 4 बजे से 5 बजे तक शिक्षा चौपाल का आयोजन जुलाई से लगातार किया जा रहा है। आयोजन का दायित्व संबंधित बीएलओ व कैचमेंट के राजकीय विद्यालय के संस्थाप्रधान का है। शिक्षा चौपाल में संबंधित विकास अधिकारी, पटवारी, बीएलओ, सरपंच, वार्डपंच, संस्थाप्रधान व समस्त स्टाफ, कुक कम हैल्पर तथा समस्त अभिभावक उपस्थित होते थे। शिक्षा चौपाल में केवल शिक्षा संबंधी समस्याओं के निस्तारण यथा-अनामांकित/ड्रॉपआउट बालक-बालिकाओं को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ना, शिक्षा विभाग की कल्याणकारी विभिन्न योजनाओं यथा- पोषाहार कार्यक्रम, अन्नपूर्णा दुग्ध योजना, निःशुल्क पाठ्य पुस्तक, गार्गी एवं प्रोत्साहन योजना, आपकी बेटी योजना, इन्दिरा प्रियदर्शिनी पुरुस्कार, पूर्व एवं उत्तर मैट्रिक समस्त प्रकार की छात्रवृत्तियाँ, निःशुल्क साइकिल वितरण, ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना, शैक्षिक भ्रमण योजना, मुख्यमंत्री हमारी बेटी योजना, मेधावी छात्रों को गुणवत्ता युक्त लेपटॉप वितरण योजना, इन्सपायर अवार्ड योजना, माडा छात्रवृत्ति, सामूहिक दुर्घटना बीमा योजना, पन्नाधाय जीवन अमृत योजना आदि की विस्तृत जानकारी दी गई।

विद्यार्थियों के शैक्षणिक उन्नयन हेतु प्रयास व भामाशाहों को प्रोत्साहन, विद्यालय की मूलभूत आवश्यकता आदि बिन्दुओं पर चर्चा की जाती थी। शिक्षा चौपालों के प्रभावी आयोजन हेतु शिक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ-साथ जिला कलेक्टर, एसडीएम, पुलिस अधिकारी एवं अन्य विभाग सहित 80 अधिकारियों को पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया था। जिसकी रिपोर्ट निर्धारित प्रपत्र में उनके द्वारा चौपाल की समाप्ति पर दी जाती थी।

धौलपुर जिले में नामांकन वृद्धि हेतु किए गए प्रयासों में शिक्षा चौपाल मील का पत्थर साबित हुई। जिले में जहाँ राजकीय विद्यालय में सत्र 2018-19 में कक्षा 1 से 12 का नामांकन 186639 था वह बढ़कर सत्र 2019-2020 में 191308 हो चुका है। सत्र 2019-20 में जिले में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु बीएलओ द्वारा सर्वेक्षित कलेक्टर महोदय के ड्रीम प्रोजेक्ट ड्रॉप आउट/अनामांकित बालिकाओं की संख्या 3924 थी जिसमें 3212 को विभिन्न विद्यालयों नामांकित कर दिया गया है। शेष 15 से 18 वर्ष की बड़ी बालिकाओं को राजस्थान स्टेट ओपन बोर्ड से जुड़ने हेतु प्रेरित किया गया है।

शिक्षा चौपाल राज्य सरकार की कल्याणकारी योजना के साथ-साथ दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रोत्साहन हेतु देए सुविधाओं की जानकारी, विद्यालयों में पेयजल, शौचालय मूत्रालय सुविधा, विद्युत कनेक्शन, पौधारोपण, वृक्ष मित्र योजना, विद्यालय विकास हेतु खेल मैदान, चारदीवारी कक्षा-कक्ष तथा साज सज्जा हेतु ग्राम पंचायत एवं भामाशाहों को प्रेरित करने, सहयोग करने वाले भामाशाहों को चौपाल में सम्मानित किया जाता है। जिला कलेक्टर महोदय की अभिनव पहल शिक्षा विभाग एवं जन सामान्य के बीच एक संवाद सेतु के रूप में देखी जा रही है।

नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्र महि विद्यते।
तत्स्वयं योग संसिद्ध काले नात्मनि विन्दति।।

(ज्ञान के समान पवित्र पृथ्वी पर कुछ भी नहीं है यह योग के द्वारा स्वयं सिद्ध है। समयानुसार प्राप्त होता है।)

अति. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी द्वितीय

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय,

बाडी, धौलपुर (राज.)-328021

मो: 9460455085

बाल शिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

जिन्दगी एक ख्वाब हैं

जिन्दगी को शतरंज मत बनाइए।
रिश्तों के मोहरे मत सजाइए।
आज को आज ही जीलें तो अच्छा है
आज को कल में मत मिलाइए।
तलाश खत्म न होगी कभी
पर वक्त खत्म हो जाएगा।
जिन्दगी का यह ताना बाना
तलाश में ही बिखर जाएगा।
सपने तो होते है स्वप्निल
इन्हें बंद आखों में बसाइए।
पर खुली आँखों से अरमान
जिन्दगी को ठोकरो से बचाइए।
छोटी हो एक मंजिल अगर
बेहिचक बस कदम बढाइए।
हसरतो में फंसी है जो जिंदगी
उसे बेहसरत भी जीना सीखाइए।

–लक्ष्मी जोगपाल
कक्षा–11 (कला संकाय)
रा.उ.मा.वि. भैरूपुरा सीलवानी, सूरतगढ़, श्रीगंगानगर

फौजी

फौजी देश की शान हैं।
हम सबका सम्मान हैं।
बॉर्डर पर वह लड़ता हैं।
नहीं किसी से डरता हैं।
सिपाही का एक ही काम।
भारत की बढ़ाना शान।
सर्दी-गर्मी वह लड़ता हैं।
नहीं किसी से डरता हैं।
भूखा प्यासा रह सकता है।
कष्ट सहन कर सकता है।
हम रहे सदा सुरक्षित इसलिए
सर्दी-गर्मी जान की बाजी लगाता है।
फौजी देश की शान हैं।
हम सबका सम्मान है।

–अनु सहारण
कक्षा–11 (कला संकाय)
रा.उ.मा.वि. भैरूपुरा सीलवानी, सूरतगढ़, श्रीगंगानगर

कौन जीता

एक चींटी थी। उसे एक बताशा दिखा। बताशा बहुत बड़ा था। वह भागकर बताशे के पास पहुँची। अरे वाह! मुँह में पानी आ गया। तभी एक दूसरी चींटी वहाँ आ गई। बताशा खींचने लगी। उठाते-उठाते दम निकल गया।

पहली चींटी भी बताशा खींचने लगी। दोनों चींटियाँ आपस में झगड़ने लगी। यह बताशा मेरा है!-नहीं, यह मेरा बताशा है।

लड़ते-लड़ते बताशे को धक्का लगा। वह एक गड्ढे में जा गिरा। गड्ढे में पानी था। बताशा गड्ढे के पानी में घुल गया। दोनों चींटियाँ देखती रह गई।

ओह! यह क्या हो गया। चींटियों को अपनी गलती पर पछतावा हुआ। हाँ बहन! दोनों को आधा-आधा बताशा मिल-बाँटकर खाना चाहिए था।

–लक्षीत पवार
कक्षा–5
एम.जी.जी. स्कूल शिवाजी नगर, जालोर

प्रकृती

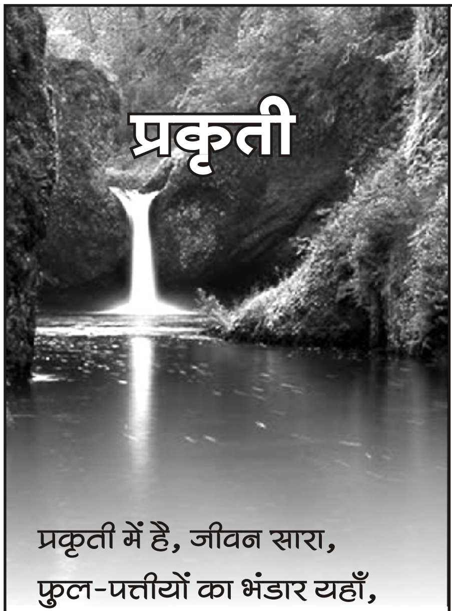

प्रकृती में है, जीवन सारा,
फुल-पत्तीयों का भंडार यहाँ,
वन-उपवन में बच्चे खेले
हरी-भरी है, घास यहाँ
गुन-गुन करते भंवरे गुंजें
हर डाली पर फूल यहाँ
देखों यह पेड़ है, कैसा?
खुशीयों का पैगाम यहाँ
प्रकृती में है, जीवन सारा।
प्रकृती में हैं, जीवन सारा।

No Limits, No Limits

I want to fly
Measure the sky
No limits, No limits

I will sit on the tree
and feel free
No limits, No Limits

I will sing sweeter
Like a greater singer
No limits, No limits

I will make a nest
and take rest
No limits, No limits

I want to fly
fly, fly and fly
No limits, No limits

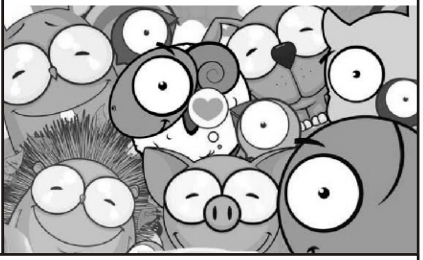

–इशान दवे, कक्षा-4
एम.जी.जी. स्कूल, शिवाजी नगर, जालोर

रा.उ.मा.वि., भैरूपुरा, सीलवाना, सूरतगढ़, श्रीगंगानगर (पृष्ठ 43) तथा एम.जी.जी. स्कूल, शिवाजी नगर, जालोर (पृष्ठ 43, 44) के विद्यार्थियों की हस्तलिखित स्वरचित रचनाओं को एक साथ प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है।

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है। –वरिष्ठ संपादक

मेहनती व मददगार

एक बार एक गाँव में एक गरीब लड़का रहता था। उसके परिवार में केवल वो और उसकी माँ ही रहती थी। वो बड़ा होकर एक फौजी बनना चाहता था, परन्तु वह बहुत गरीब था इसलिए वह स्कूल में नहीं पढ़ सकता था।

एक दिन वह अपने घर जा रहा था। तभी उसे एक आदमी दिखाई दिया। वह आदमी उसे बुला रहा था। तभी वह दोड़कर उस आदमी के पास गया और आदमी ने कहा क्या तुम मेरी सहायता करोगे?

वह लड़का कहने लगा कि मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ? तभी वह आदमी बोला कि तुम मेरी यह लकड़ियाँ रख दो। उसने कहा ठीक है और उसने लकड़ियाँ रख दी और अपने घर चला गया तो उसने देखा की उसकी माँ एक खत पढ़ रही थी। तो उसने अपनी माँ से पूछा की आप क्या पढ़ रही हो? उसकी माँ कहती हैं की बेटा! तुम्हारा प्रवेश एक स्कूल में हो गया है। कल तुम्हें बुलाया है। सुबह जब वह स्कूल जाता है तो वही आदमी उस स्कूल का प्रधानाचार्य होता है और वे कहते है कि तुमने मेरी सहायता की यह उसका फल है। उसे प्रवेश मिल जाता है। कुछ साल बाद वह पढ़-लिख कर फोजी बन जाता है। खुशी-खुशी जीवन व्यतीत करता है।

शिक्षा: बच्चों इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें मेहनती व मददगार बनना चाहिए।

–इशान दवे
एम.जी.जी. स्कूल शिवाजी नगर, जालोर

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

सम्मानित होकर लौटने पर श्रीमती परमेश्वरी देवी वैष्णव का किया स्वागत

जालोर–राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय बालवाड़ा की प्रबोधक श्रीमती परमेश्वरी देवी वैष्णव के जिलास्तरीय शिक्षा सम्मान समारोह में सम्मानित होकर लौटने पर विद्यालय परिवार, विद्यार्थियों, स्कूल स्टाफ, ग्रामीणों ने ढोल ढमाकों के साथ माल्यार्पण कर स्वागत किया। प्रधानाध्यापक श्री पुखराज ने बताया कि परमेश्वरी देवी वैष्णव को बालिका नामांकन, जनसहयोग, शैक्षिक एवं सहशैक्षिक गतिविधियों में उत्कृष्ट कार्य के लिए जिला कलक्टर जालोर श्री महेन्द्र सोनी व अन्य अतिथियों ने राज्य सरकार की ओर देय पुरस्कार राशि ग्यारह हजार रुपये का चैक, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न, श्रीफल देकर व शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया

अलवर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शाहजहाँपुर, नीमराना, अलवर में अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस गार्गी–मीनामंच के माध्यम से मनाया गया। बालिकाओं द्वारा आत्मविश्वास से परिपूर्ण गतिविधियाँ, बाल विवाह एवं बालश्रम के दुष्परिणाम, आत्मरक्षा प्रशिक्षण का महत्त्व, बालिकाओं के लिए सरकारी विद्यालयों में विभिन्न योजनाएँ, बालिका शिक्षा की आधुनिक जीवन में उपयोगिता आदि विषयों पर कविता, लघुनाटक, सामूहिक गायन एवं चार्ट प्रदर्शिनी लगाकर जानकारी दी गई। अलवर जिले की थानागाजी तहसील की छात्रा पायल जाँगिड़ को अमेरिका में बाल विवाह के खिलाफ आवाज उठाने एवं बालिका शिक्षा एवं सशक्तिकरण हेतु बिल गेट्स द्वारा वर्ल्ड ग्लोबल पीस गोलकीपर अवार्ड से नवाजा गया। इस पूरी कहानी को गार्गी मंच/मीना मंच की बालिकाओं एवं प्रभारी श्रीमती पुष्पा यादव एवं सुषमा शर्मा ने सभी को एक नाटक द्वारा अभिनय कर दिखाया गया। बालिकाओं में नेतृत्व क्षमता एवं जिम्मेदारी पूर्ण दायित्व बोध कराने हेतु कक्षा 12ए की बालिका पिंकी को एक दिवस के लिए संस्थाप्रधान बनाकर संपूर्ण दिवस में कार्यालय की शैली को समझाया गया। सभी बालिकाओं ने शपथ लेकर यह बात अपनाई की बालविवाह न करेंगी, न ही होने देगी, शिक्षा जारी रखेगी एवं अपने आप सशक्त, हिम्मतवाली, कामयाब भारतीय नागरिक बनेंगी। विभिन्न प्रतियोगिताओं की विजेता छात्राओं सिमरन, बन्टी आर्य, पायल, खुशनसीब, पिंकी, आरती, मनीषा, गौरी, हैप्पी, प्रियांशु, हितेश आदि को संस्थाप्रधान श्री वी.के. शर्मा एवं अन्य स्टाफ सदस्यों द्वारा सम्मानित किया गया। बालिका पायल कक्षा 4 की छात्रा ने अपनी कविता मैं भी तेरा ही अंश हूँ माँ–से सभी को भावविभोर कर दिया एवं कन्या भ्रूण हत्या रोकने हेतु एक हृदयस्पर्शी प्रेरणा दी। गार्गी मंच प्रभारी श्रीमती पुष्पा यादव ने सभी का आभार व्यक्त किया।

जय हिन्द–जय भारत।

सलाम है भारत की होनहार विदूषी बेटियों को।

शाला की छात्राएँ जिले में प्रथम

श्रीगंगानगर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, श्योपुरा बास (सूरतगढ़) की चार छात्राओं का राज्यस्तरीय प्रतियोगिता हेतु चयन हुआ है। विद्यालय की छात्राएँ वंदना टाक, कमलेश, रेखा व कल्पना ने 16वें जिलास्तरीय 'जीवन कौशल बाल मेला' श्री गंगानगर में 5-6 नवम्बर, 2019 को 'आओ गीत गाएँ' प्रतियोगिता में भाग लिया और जिले में प्रथम रही।

छात्राओं ने बालसभा व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभारी श्री कृष्ण गेदर के निर्देशन में तैयारी कर बाल मेले में भाग लिया। राज्यस्तरीय प्रतियोगिता 8-10 जनवरी, 2020 को उदयपुर जिले में होनी निश्चित है इस हेतु छात्राएँ मेहनत कर ही है।

विद्यालय में पहुँचने पर ग्रामीणों तथा विद्यालय स्टाफ ने छात्राओं का माला पहनाकर व तिलक लगाकर स्वागत किया। विद्यालय प्रधानाचार्य सुनीता शर्मा ने प्रभारी श्री कृष्ण गेदर को बधाई दी तथा छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना की तथा राज्यस्तरीय कार्यक्रम हेतु और मेहनत करने को कहा।

खेरपुरा में बाल सभा का आयोजन

चित्तौड़गढ़–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खेरपुरा में बाल सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थाप्रधान श्री दिनेश कुमार भट्ट, मुख्य अतिथि श्री शंभू लाल जी धाकड़ पूर्व सरपंच ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम की शुरुआत की। छात्र–छात्राओं ने बाल सभा में अनेक प्रस्तुतियाँ दी। रोवर स्काउट लीडर श्री जितेन्द्र शर्मा ने बताया कि छात्र–छात्राओं ने बालिका शिक्षा प्रोत्साहन हेतु रैली निकालते हुए बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओं के नारे लगाते हुए खेरपुरा चारभुजा जी के मंदिर तक बाल सभा स्थल पर पहुँचे। वहाँ पर छात्रों ने पोस्टर प्रतियोगिता में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। इस अवसर पर क्विज प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। जिसमें आशा हजूरी ने प्रथम, नीतू वैष्णव द्वितीय, चंदा धाकड़ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। संबलन अधिकारी डॉक्टर ललित कुमार धाकड़ ने छात्रों को शिक्षा के महत्त्व को बताते हुए लक्ष्य निर्धारण कर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में छात्र–छात्राओं ने ''हम दीप शिक्षा के हैं, जगमगाएंगे'' पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में श्री कृष्णकांत शर्मा के नेतृत्व में छात्र–छात्राओं ने अब्दुल कलाम के स्लोगन प्रतियोगिता में भाग लिया। संबलनकर्त्ता श्री दिनेश डीडवानिया ने बाल सभा की बढ़ती लोकप्रियता के विषय में चर्चा की। कार्यक्रम के पश्चात एसडीएमसी मीटिंग एवं अभिभावक शिक्षक मीटिंग का आयोजन भी किया गया।

शिक्षक मोहरसिंह मीना सलावद का विद्यालय में किया अभिनंदन

बीकानेर–राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती पर शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय सेवाओं के लिए लगातार दूसरी बार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शिवनगर के वरिष्ठ शिक्षक मोहरसिंह मीना सलावद को खाजूवाला उपखंड अधिकारी श्री संदीप कुमार, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्री प्रमोद कुमार तिवाड़ी, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्री रामप्रताप मीना, श्री संजय गिरधर, सीसीवी चेयरमैन श्री भागीरथ ज्यानी, व्यापार मंडल अध्यक्ष श्री मोहन सियाग, कांग्रेस ब्लॉक महासचिव श्री मुसे खा, पूर्व सरपंच एवं समाजसेवी श्री पदमाराम चौहान ने ब्लॉकस्तरीय शिक्षक सम्मान 2019 से सम्मानित किया इस मौके पर सलावद को इक्यावन सौ रुपये का चैक एवं प्रशस्ति पत्र व शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया। मोहरसिंह मीना शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए इससे पूर्व जिलास्तरीय शिक्षक सम्मान 2017, ब्लॉक स्तरीय शिक्षक सम्मान 2018 में एवं उपखंड अधिकारी पूगल से एवं जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक श्री उमाशंकर किराडू से सम्मानित हो चुके हैं। लगातार दो बार ब्लॉक स्तर पर सम्मानित होने पर वरिष्ठ शिक्षक मोहरसिंह मीना का प्रधानाचार्य श्री रूपेन्द्र सिंह, व्याख्याता तथा विद्यार्थियों आदि ने माला पहनाकर स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य श्री सिंह ने कहा कि वरिष्ठ शिक्षक मीना हमेशा विद्यालय विकास हेतु भामाशाहों को सहयोग करने हेतु प्रेरित करते है एवं प्रवेश प्रभारी, छात्रवृत्ति, ट्रांसपोर्ट वाउचर, इंस्पायर अवार्ड आदि योजनाओं से बच्चों को लाभान्वित करवाते हैं। साथ ही हमेशा इनके विषय का बोर्ड परीक्षा परिणाम उत्कृष्ट रहता है सभी इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

दांदू में बाल सभा का आयोजन

चूरू–राजकीय माध्यमिक विद्यालय दांदू (चूरू) में 19.10.2019 को बाल सभा का आयोजन गाँव के चौपाल में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता छात्रा मनसिका ने की। इस अवसर पर बच्चों ने एपीजे अब्दुल कलाम व महात्मा गाँधी का जीवन परिचय, कविताएँ व लघु नाटिकाएँ प्रस्तुत की। संस्थाप्रधान श्री नेमीचंद सुडिया ने राजकीय विद्यालयों में मिलने वाली लोक कल्याणकारी योजनाओं जैसे इन्दिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार, गार्गी पुरस्कार, ट्रांसपोर्ट वाउचर, निशुल्क साइकिल वितरण, लेपटोप वितरण, विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियाँ, छात्रवृत्ति परीक्षाओं (NMMS, STSE व NTSE), विभागीय प्रतियोगिताओं, विज्ञान मेला, कला उत्सव, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित सर्जनात्मक प्रतियोगिताओं, विज्ञान सेमिनार, इंस्पायर अवार्ड की जानकारी दी तथा भरोसा दिलाया कि हम विद्यालय के बच्चों में अच्छी शिक्षा व संस्कार देने के लिए प्रतिबद्ध है। इस अवसर पर संबलनकर्त्ता अधिकारी ACBEO-II श्री हरिप्रसाद शर्मा ने विद्यालय का अवलोकन किया। उन्होंने बताया कि विद्यालय का शैक्षिक व सहशैक्षिक वातावरण सराहनीय है तथा विद्यालय में संचालित सह शैक्षणिक गतिविधियों जैसे कैलीग्राफी, सामान्य ज्ञान क्विज, पत्र वाचन प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता आदि मासिक आयोजन को अनुकरणीय बताया। इस अवसर पर गाँव के अभिभावकगण उपस्थित थे।

राष्ट्रीय एकता व अखंडता की शपथ दिलाई

बालोतरा–सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती व इंदिरा गाँधी की पुण्यतिथि राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भीमरलाई गाँव में भी मनाई गई। सर्वप्रथम सरदार पटेल की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया तथा इंदिरा गाँधी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किए गए। तत्पश्चात विद्यालय अध्यापक ठाकराराम प्रजापत ने सरदार वल्लभभाई पटेल तथा इंदिरा गाँधी की जीवनी पर विस्तृत प्रकाश डाला तथा वरिष्ठ अध्यापक ईसराराम ने राष्ट्रीय एकता की बच्चों को शपथ दिलाई, और वरिष्ठ अध्यापक धर्मेंद्र कुमार ने बच्चों को प्रेरणादायक बातें

बताई तथा विद्यालय प्रधानाचार्य मोहनाराम चौधरी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए बच्चों को आशीर्वचन प्रदान किया। इस अवसर पर प्रभात फेरी व निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

भवाना विद्यालय में शाला स्तर पर अवकाश के दौरान होती है विशेष तैयारी

हनुमानगढ़– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भवाना में प्रधानाचार्य द्वारा मध्यावधि अवकाश दौरान भी बोर्ड परीक्षा का परिणाम बेहतर रखने के लिए अतिरिक्त कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। प्रधानाचार्य श्री दानाराम इन्दलिया ने बताया कि अवकाश के दौरान विशेष तैयारी शाला स्तर पर करवाई जाती है। एनएमएमएस की परीक्षा 17 नवम्बर से है। अतिरिक्त कक्षाओं के संचालन से बच्चों व अभिभावकों में उत्साह है। प्रधानाचार्य ने बताया कि विद्यार्थियों में पढ़ाई की निरन्तरता के लिए उन्हें नियमित अध्ययन करना आवश्यक है जिससे कि बालकों में पढ़ाई के प्रति व परीक्षा परिणाम के प्रति जारूकता बनी रहे। उन्होंने बताया कि नियमित अध्ययन से ही सफलता पायी जा सकती है।

'बाल अधिकार सप्ताह' के तहत उदावास स्कूल में प्रतियोगिताएं हुई

झुंझुनूं–बाल अधिकार व चाइल्ड लाइन 1098 से दोस्ती सप्ताह के तहत राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय उदावास में बाल अधिकारिता विभाग व चाइल्ड लाइन 1098 द्वारा चित्रकला व मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन करवाया गया। प्रतियोगिता का शुभारंभ प्रधानाचार्य राकेश ढाका, चाइल्ड लाइन निदेशक राजन चौधरी व बाल अधिकार संरक्षण विभाग के अधिकारी विकास कुमार द्वारा किया गया। इस अवसर पर स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा बड़े उत्हासपूर्वक भाग लिया गया, चित्रकला व मेहंदी प्रतियोगिता में विद्यार्थियों द्वारा बेटी बचाओ, बाल अधिकार, बाल संरक्षण, बाल विवाह, चित्रकला व मेहंदी प्रतियोगिता में विद्यार्थीयों द्वारा बेटी बचाओं, बाल अधिकार, बाल संरक्षण, बाल विवाह, बाल श्रम, जल पर्यावरण व स्वच्छता विषय पर चित्र बनाए गए। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को चाइल्ड लाइन व बाल अधिकारिता विभाग द्वारा ट्रॉफी, लंच बॉक्स, पैन व नकद राशि उपहार स्वरूप प्रदान की गई।

लक्ष्मण डूंगरी में भामाशाहों ने दिया सहयोग

जयपुर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, लक्ष्मणडूंगरी बदनपुरा में श्री शिशिर सराफ द्वारा 2,10,247 रुपये की लागत से विद्यालय में एक बड़ा वाटर कूलर व विद्युत फिटिंग कार्य, शौचालय में पानी की पाइप लाईन डलवाई व शौचालय की छत पर टीन शेड निर्माण कार्य करवाया व बालक और बालिका टॉयलेट में मरम्मत और रंगरोगन करवाया गया। श्री बृजपाल सिंह द्वारा 11,000 रुपये की लागत के 5 छत पंखें, मनमोहन अग्रवाल (व्यवसायी) द्वारा 10,800 रुपये की लागत के 5 सीलिंग पंखें, निशांत चौधरी द्वारा (वितरण प्रमुख – शॉओमी) 12,200 रुपये की लागत के 4 सीलिंग पंखे, मुकेश कुमार अग्रवाल (व्यवसायी) द्वारा 2,200 रुपये की लागत का 1 सीलिंग पंखा (ऑरिएन्ट) विद्यालय को सप्रेम भेंट किया गया।

शाला की अध्यापिका श्रीमती राजबाला द्वारा 3,600 रुपये की लागत के 2 सीलिंग पंखें भी विद्यालय को सप्रेम भेंट किए गए। विज्ञान दिवस के लिए विज्ञान समाग्री व नामांकन अभिवृद्धि के लिए पेम्पलेट वितरण किया। उपर्युक्त कार्य अध्यापिका राजबाला की प्रेरणा से निष्पादित हुआ। संस्थाप्रधान ने प्रेरक अध्यापिका राजबाला एवं भामाशाहों का विज्ञान दिवस के अवसर पर शाला प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापित किया और आभार प्रकट किया।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

रपट

मिड-फ़ेस्ट : उड़ान

महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेज़ी माध्यम) कोटा

❒ राहुल शर्मा

महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेज़ी माध्यम) कोटा में दिनांक : 08.11.2019 को मिड-फ़ेस्ट : उड़ान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमान गोविन्द सिंह डोटासरा मुख्य अतिथि रहे। कार्यक्रम में प्रमुख शिक्षा सचिव महोदया, श्रीमती मंजू राजपाल व निदेशक महोदय (माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा) श्रीमान नथमल डिडेल की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी।

विद्यार्थियों ने विभिन्न रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कक्षा-6 की बालिकाओं ने अतिथियों का स्वागत किया व कक्षा-8 की छात्राओं ने अंग्रेज़ी में स्वागत गीत गाया। इसी क्रम में कक्षा-6 के यथार्थ ने अंग्रेज़ी में एकल गीत की प्रस्तुति दी। कक्षा 6-8 के विद्यार्थियों ने सर्वधर्म समभाव पर विचारोत्तेजक नाटक का मंचन किया। कक्षा 6,7,8 की छात्राओं ने लोक नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति दी। तेजस्व (कक्षा-8) ने अंग्रेज़ी में व्याख्यान दिया जिसमें उसने अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालय खोलने के निर्णय की प्रशंसा करते हुए इसके अनेक लाभों के बारे में बताया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य राहुल शर्मा ने पॉवर पॉइंट प्रज़ेन्टेशन के माध्यम से विद्यालय की अब तक की उपलब्धियों को सभी के सामने रखा और इसके लिए समर्पित स्टाफ़ को बधाई दी। इस अवसर पर प्रधानाचार्य ने विद्यालय एवं विद्यार्थियों को उपलब्धियाँ हासिल करने में सहयोग प्रदान करने वाले भामाशाहों की भी सराहना की व उन्हें धन्यवाद ज्ञापित किया। इसके साथ ही आगामी योजनाओं के संबंध में भी जानकारी दी।

माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने अपने संबोधन में विद्यालय के योग्य स्टाफ़ व विद्यार्थियों की मुक्त-कंठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि सरकारी विद्यालय के अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत विद्यार्थियों और स्टाफ़ द्वारा इस प्रकार के भव्य आयोजन को देख बहुत अच्छा लगा और ऐसा महसूस हो रहा मानो 'मंत्री बनने का आनंद ही आज आया है।' प्रमुख शिक्षा सचिव श्रीमती मंजू राजपाल ने अंग्रेज़ी में संबोधित करते हुए ख़ुशी व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों द्वारा दी गई प्रस्तुतियों की प्रशंसा की व विद्यालय के कुशल संचालन के लिए प्रधानाचार्य एवं स्टाफ़ को बधाई एवं शुभकामनाएँ दी। निदेशक महोदय ने योग्य स्टाफ़ की सराहना करते हुए विद्यालय परिवार को बधाई दी। इस अवसर पर बीकानेर से पधारे श्री महेंद्र कुमार, सेवानिवृत संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, चूरू, जयपुर से ऑफ़िसर ऑन स्पेशल ड्यूटी, शिक्षा, श्री रणवीर सिंह व बीकानेर से श्री नीरज कांडपाल भी उपस्थित रहे। कोटा से श्रीमान संयुक्त निदेशक महोदय, स्कूल शिक्षा, कोटा श्री रामस्वरुप मीणा सहित कोटा जिले के समस्त शिक्षा अधिकारी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। अन्त में प्रधानाचार्य राहुल शर्मा महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेज़ी माध्यम) कोटा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

प्रधानाचार्य
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय
(अंग्रेजी माध्यम) कोटा-राजस्थान
मो. 9462830333

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

ध्वनि तरंगों से खत्म किया जा सकेगा ट्यूमर

लॉस एंजेल्स–वैज्ञानिकों ने कैंसर के ट्यूमर को खत्म करने का एक नया तरीका विकसित किया है। उनका कहना है कि उच्च क्षमता वाली कैंसर की दवाओं को छोटे से बुलबुले में डालकर सीधे साउंड वेव्स (ध्वनि तरंगों) के जरिए ट्यूमर तक पहुँचाया जा सकता है। यह विचित्र साउंडिंग तकनीक एक मशीन पर आधारित है, जो ध्वनि तरंगों से ऊर्जा का उपयोग करके छोटे बुलबुले से ट्यूमर को लक्षित कर सकती है।

बुलबुले में भरकर ट्यूमर तक पहुँचाई जाएगी दवा : वैज्ञानिकों ने बताया कि दवाओं को बुलबुले में भर दिया जाता है। फिर कंपन का उपयोग करके उन्हें कैंसर वाली जगह पहुँचाया जाता है। लॉस एंजेलिस की सदर्न कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के शोधकर्त्ताओं ने सूअर के माँस में डाली गई ट्यूब्स पर इस तकनीक का सफल परीक्षण किया है। इस तकनीक का रोगी के शरीर पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं होगा। कंपन द्वारा बुलबुले को ट्यूमर के आसपास बेहद सावधानी से संचालित किया जाता है। सही जगह पर पहुँचने के बाद ध्वनि तरंगों से बुलबुला फोड़ दिया जाता है, जिससे ट्यूमर पर दवा पहुँच जाती है।

दवाओं का असर देखने में होगी आसानी : शोध के लेखक डॉ. जुजुन कियान ने कहा, हमने वेव इमेजिंग पद्धति के संयोजन से इंसान के शरीर के अंदर दवा को सही जगह पहुँचाने के लिए एक नया तरीका प्रस्तावित किया है। यह थेरेपी उन दुष्प्रभावों से भी बचा सकती है, जो लक्षित जगह के बाहर वाले स्वस्थ ऊतकों को प्रभावित कर दवाओं से उत्पन्न होते हैं।

एक वायरस खत्म कर देगा हर तरह का कैंसर

सिडनी–वैज्ञानिकों ने एक ऐसा वायरस खोजने का दावा किया है, जो हर तरह के कैंसर का खात्मा करने में सक्षम है। चिकित्सा के क्षेत्र में इसे एक बड़ी सफलता के तौर पर देखा जा रहा है। इस वायरस को वैक्सीनिया सीएफ-33 नाम दिया गया है। इस समय दुनियाभर में 100 से भी ज्यादा प्रकार के कैंसर पाए जाते हैं। किसी भी तरह के कैंसर का पता तीसरे या चौथे स्टेज में चलने पर इलाज की संभावना बहुत कम हो जाती है। वैज्ञानिक इस वायरस के खोज की सफलता के बाद उम्मीद कर रहे हैं कि जल्द ही कैंसर को जड़ से खत्म किया जा सकेगा। अगर परीक्षण में सब कुछ ठीक रहा तो अगले साल ही इसका दवा के तौर पर स्तन कैंसर के मरीजों पर परीक्षण किया जाएगा। शोध के अनुसार यह एक ऐसा वायरस है, जो शरीर में सर्दी-जुकाम का कारण बनता है। मगर इसे कैंसर कोशिकाओं के साथ मिलाने के बाद वैज्ञानिक हैरान थे। इस वायरस ने पैट्री डिश में सभी प्रकार के कैंसर को खत्म कर दिया। चूहों पर परीक्षण करने पर वैज्ञानिकों ने पाया कि इस वायरस ने ट्यूमर को सिकोड़ कर छोटा कर दिया। इस वायरस को ऑस्ट्रेलियन बायोटेक कंपनी इम्यूजीन ने बनाया है। इसे बनाने का श्रेय अमेरिका के वैज्ञानिक और कैंसर स्पेशलिस्ट प्रोफेसर युमान फॉन्ग को जाता है। प्रोफेसर फॉन्ग बताते हैं कि काउपॉक्स नाम का वायरस होता है, जो 200 साल से मिजल्स को ठीक करने के लिए प्रयोग किया जा रहा है।

चंद्रयान-2 ने चांद की 3डी तस्वीर भेजी

नई दिल्ली। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने चंद्रयान-2 के टेरेनमैपिंग कैमरे द्वारा क्रेटर के 3 डी व्यू की तस्वीर जारी की है। ये करीब 100 किलोमीटर ऑर्बिट से ली गई है। तस्वीर में चांद पर मौजूद गड्ढों, लावा ट्यूब (भविष्य में इन्हीं जगहों पर जीवन की संभावनाएँ हैं), रिलेस (लावा ट्यूब के फट जाने से पैदा हुई जगह) के साथ कई ऐसी चीजें हैं, जो आगे शोध के लिए अहम मददगार साबित हो सकती हैं।

ठीक से काम कर रहा ऑर्बिटर : बता दें कि बीते दिनों भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष के. शिवन ने कहा था कि चंद्रयान-2 मिशन ने अपना 98 फीसदी लक्ष्य हासिल किया है। ऑर्बिटर ठीक से काम और तय वैज्ञानिक प्रयोग कर रहा है। जबकि लैंडर 'विक्रम' के साथ संपर्क स्थापित करने के लिए वैज्ञानिक कड़ी मेहनत कर रहे हैं।

मुँह के कैंसर की जाँच के लिए बनाया उपकरण

इंदौर– राजा रमन्ना सेंटर फॉर एडवांस्ड टेक्नोलॉजी (आरआर कैट) ने दस साल की शोध और 4 लाख रुपये खर्च कर एक पोर्टेबल आंकोस्कोप डिवाइस बनाया है, जो मुँह के कैंसर की जाँच 15 मिनट में कर सकता है। इस डिवाइस का लोकार्पण इंडियन सोसायटी ऑफ ऑन्कोलॉजी ने किया। वैज्ञानिक शोभन कुमार मजूमदार ने कहा, यह देश की पहली लेजर मशीन है। यह उपकरण टैबलेट आधारित है। आकार में छोटा होने के साथ यह मशीन उन मरीजों के काम आएगी, जिनमें कैंसर के लक्षण नजर नहीं आते।

गूगल मैप में आया ट्रांस्लेशन फीचर

सैन फ्रांसिस्को। किसी नए शहर या नई जगह में घूमना और उसके बारे में जानना एक बेहतरीन अनुभव हो सकता है, लेकिन अगर आपको स्थानीय भाषा न आती हो तो आपको थोड़ी मुश्किल हो सकती है। गूगल मैप ने स्थानीय भाषा की समस्या को सुलझाने के लिए ट्रांसलेशन फीचर लॉन्च किया है। गूगल ने कहा, किसी दूसरे देश में जाने पर यदि आपको वहाँ की भाषा नहीं आती हो तो आपको परेशानी का सामना करना पड़ता है। किसी टैक्सी ड्राइवर को अपनी बात या दिशाएँ न समझा पाना काफी परेशान करने वाला होता है। गूगल मैप और गूगल ट्रांसलेट को मिलाकर वह ट्रांसलेशन फीचर बनाया गया है। इस फीचर के तहत आपका फोन आपको स्थानीय भाषा में बोलकर बताएगा कि आपको कौन सी जगह जाना है। इस फीचर का इस्तेमाल करने के लिए गूगल मैप में प्लेस नेम और एड्रेस के पास में मौजूद न्यू स्पीकर बटन को दबाना होगा और गूगल मैप बोलकर बताएगा कि यह कौन-सी जगह है।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। -व. संपादक

नागौर

रा.उ.मा.वि. टूंकलियां, पं.स. मेड़ता को श्रीराम खोजा (प्रधानाचार्य) से एक स्पीकर प्राप्त जिसकी लागत 2,500 रुपये, दो पुस्तक रैक प्राप्त जिसकी लागत 4,400 रुपये व शौचालय में पानी की टंकी व फिटिंग करवाई जिसकी लागत 4,500 रुपये, श्री राजेश खदाव (व.अ.) से एक एच.पी. प्रिन्टर प्राप्त जिसकी लागत 15,000 रुपये, व पानी की टंकी व टूंटियाँ लगवाई जिसकी लागत 5,100 रुपये, श्री पांचाराम जी मातवा (व.अ.) से एक अलमारी प्राप्त हुई जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्री बाबूलाल (अध्यापक) से रोटी सेंकने की भट्टी प्राप्त जिसकी लागत 5,500 रुपये, श्री संतोष कुमार चौहान से 25,000 रुपये की 21 टेबल व स्टूल प्राप्त हुई, श्री सोहनलाल गैणा से एक माइक सैट व एक स्पीकर प्राप्त जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्रीराम खोजा, श्री राजेश खदाव व श्री नेमाराम बेड़ा (शा.शि.) ने मिलकर 110 बेग छात्रों को वितरित किए जिसकी लागत 12,500 रुपये तथा 30,000 रुपये की लागत से शौचालय व मुत्रालय की मरम्मत करवाई, समस्त टूंकलियां स्टाफ द्वारा 15 पट्टी का बरामदा निर्माण करवाया जिसकी लागत 30,000 रुपये, 5 पंखे प्राप्त व 04 पानी के कैन प्राप्त जिसकी लागत 11,000 रुपये तथा 2,200 रुपये का एक वायरलेस माइक सैट भेंट, समस्त पी.ई.ई.ओ. टूंकलिया स्टाफ ने एक अलमारी भेंट की जिसकी लागत 15,000 रुपये श्री पुरखाराम (अध्यापक) ने विद्यालय परिसर में लाइट फीटिंग का कार्य करवाया।

सीकर

रा.मा.वि. सांवलोदा लाडखानी में श्री चिरंजीलाल जांगिड द्वारा प्रार्थना सभागार पर 1,30,000 (एक लाख तीस हजार रुपये) की लागत से टीन शैड लगवाया, श्री दीपक बीबी पुरिया कलकत्ता प्रवासी सांवलोदा लाडखानी वाले अग्रवाल समाज के द्वारा विद्यालय के 230 विद्यार्थियों को स्कूल ड्रेस बांटी।

बून्दी

रा.उ.मा.वि. आंतरदा को श्री सुभाष चन्द जैन द्वारा विद्यालय के विद्यार्थियों को शीतल जल हेतु 80 लीटर का वाटर कूलर भेंट जिसकी लागत 27,000 रुपये।

जालोर

रा.उ.मा.वि. नरता, तहसील-भीनमाल में भवानी ग्रुप (लौडा परिवार) की तरफ से विद्यालय में अध्ययनरत 630 विद्यार्थियों को भोजन एवं प्रत्येक को एक थाली, एक गिलास, एक कटौरी भेंट की गई, श्री खेदाराम चौधरी से 11,000 रुपये प्राप्त, श्री मुकेश कुमार, श्री खेताराम से 21,000 रुपये, श्री कोलाराम/देरवाजी से 5,000 रुपये प्राप्त तथा इन्ही रुपये से विद्यालय में 16 सीसी टीवी कैमरे लगाए गए, श्री रताराम/श्री भीमाजी से 15,500 रुपये की लागत से इन्सीलेटर मशीन प्राप्त।

जोधपुर

रा.उ.मा.वि. बारा खुर्द (ओसियाँ) को श्री श्रवण लाल विश्नोई (व्याख्याता हिन्दी) द्वारा बोर्ड परीक्षा 2019 में प्रथम श्रेणी या अधिक तथा 74% अंक लाने वाले 32 विद्यार्थियों प्रत्येक को 1,100-1,100 रुपये नकद पुरस्कार 75% एवं अधिक अंक प्राप्त करने वाले 2 विद्यार्थियों प्रत्येक को 2,100-2,100 रुपये नकद पुरस्कार तथा कक्षा 12 में बोर्ड परीक्षा में हिन्दी साहित्य में प्रथम श्रेणी अंक प्राप्त करने वाले 07 विद्यार्थियों प्रत्येक को 200 रुपये नकद पुरस्कार, श्री ओमाराम पनाराम पुत्र श्री जयराम सारण द्वारा पी.ई.ई.ओ. बारा खुर्द के 7 विद्यालयों के विद्यार्थियों को बोर्ड कक्षा 5वी, 8वी, 10वी एवं 12वी कक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले 36 विद्यार्थियों को पुरस्कार एवं स्मृति चिह्न भेंट किए, बोर्ड परीक्षा 2019 में 12वीं उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों द्वारा 08 पानी के केम्पर भेंट जिसकी लागत 4,000 रुपये, श्री बीन्जाराम पुत्र श्री पूनाराम सियाग द्वारा दो दिवस टेन्ट मय कुर्सियों की व्यवस्था की, श्री हरिराम पुत्र श्री मोतीराम सुथार एवं श्री हनुमान सिंह भाकर तरुण स्कूल द्वारा ब्लॉक के 6 श्रेष्ठ संस्थाप्रधानों, वार्ताकारों, अतिथियों एवं समस्त संभागियों को प्रशस्ति पत्र तथा स्मृति चिह्न भेंट किए।

झालावाड़

रा.उ.मा.वि. खोखरिया खुर्द, प.स. भवानी मण्डी से सर्व श्री लटूरचन्द योगी (प्रधानाचार्य), राकेश कुमार मीना (व्याख्याता) धर्म गुर्जर (व्याख्याता), राकेश कुमार (व.अ.), प्रमोद कुमार रावल (व.अ.) मुकेश कुमार मीना (अ.) प्रत्येक से 9000-9000 रुपये प्राप्त, इन्ही रुपये से संस्था प्रधान की प्रेरणा से 24×30 फीट के टीन शेड लगवाया गया, श्री पुखराज जैन से शाला को एक ओरियन्ट सीलिंग पंखा भेंट, श्री संदीप कुमार शर्मा (व.अ.) से शाला को 2,100 रुपये भेंट।

सवाईमाधोपुर

रा.उ.प्रा.वि. डलियाणा को भामाशाहों द्वारा 15 अगस्त, 2019 पर विद्यालय विकास हेतु प्रिंटर, कुर्सी, आलमारी, टेबल, फर्श मरम्मत हेतु 1,00,000 रुपये का दान किया।

जयपुर

रा.उ.मा.वि. लक्ष्मणडूंगरी, बासबदनपुरा को श्री शिशिर सराफ द्वारा 2,10,247 रुपये की लागत से निम्न कार्य करवाए। एक बड़ा वाटर कूलर, विद्युत्त व नल फिटिंग कार्य, शौचालय में पानी की पाइप लाईन डलवाई एवं शौचालय की छत पर टीन शेड का निर्माण कार्य करवाया एवं बालक और बालिका टॉयलेट में मरम्मत और रंगरोगन का कार्य करवाया गया, श्री ब्रजपाल सिंह द्वारा 11,000 रुपये की लागत से 5 छत पंखें विद्यालय को सप्रेम भेंट, श्री मनमोहन अग्रवाल (व्यवसायी) से 5 छत पंखे जिसकी लागत 10,800 रुपये, श्री निशांत चौधरी से 4 छत पंखे प्राप्त जिसकी लागत 12,200 रुपये, श्री मुकेश कुमार अग्रवाल (व्यवसायी) से एक छत पंखा प्राप्त जिसकी लागत 2,200 रुपये, श्रीमती राजबाला (अध्यापिका) से 02 छत पंखें प्राप्त जिसकी लागत 3,600 रुपये।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : दिसम्बर, 2019 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादकः अनिल कुमार अग्रवाल, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) कोटा में आयोजित ***'मिड-फेस्ट :उड़ान'*** में उपस्थित अभिभावकों व छात्र–छात्राओं को सम्बोधित करते हुए माननीय शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमान गोविन्द सिंह डोटासरा व माननीया प्रमुख शासन सचिव (स्कुल शिक्षा) श्रीमती मंजू राजपाल साथ ही उपस्थित श्रीमान नथमल डिडेल निदेशक, माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर, श्री रामस्वरूप मीणा संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा) कोटा मण्डल, कोटा एवं अधिकारीगण व श्री राहुल शर्मा प्रधानाचार्य, महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) कोटा।

राबाउमावि. सूरतगढ़ की छात्रा अंजू वर्मा, कक्षा–8 का चित्र राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम आने पर छात्रा को रुपये 50,000 का नकद पुरस्कार मिला। अब छात्रा राज्य का प्रतिनिधित्व राष्ट्रीय स्तर पर करेगी।

राबाउमावि. खेरपुरा पारसोली, चित्तौड़गढ़ में आयोजित स्लोगन प्रतियोगिता में सहभागी छात्राएं अपने स्लोगन के साथ। इस अवसर पर उपस्थित अतिथिगण, संस्थाप्रधान व शाला स्टाफ।

राउमावि. आंतरदा (बूंदी) से.नि. वरिष्ठ अध्यापक एवं भामाशाह श्री सुभाष चन्द जैन द्वारा 80ली. वाटरकूलर (लागत रुपए 27000) भेंट करने पर श्री जैन को संस्थाप्रधान श्री राकेश यादव सम्मानित करते हुए।

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाईड, डूंगरपुर द्वारा आयोज्य छोटी लिम्बोड़ में 5 दिवसीय प्रशिक्षिण शिविर के समापन के अवसर पर संस्थापक श्री मोहनलाल सुत्रधार, सी.ओ. स्काउट श्री सवाईसिंह, शिविर संचालक मोहनलाल गर्ग व श्री नानालाल अहारी, मास्टर ट्रेनर तथा प्रतिभागी स्काउट व गाइड।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/417/2017-19

शिविरा पत्रिका (मासिक) ● दिसम्बर, 2019
प्रकाशन तिथि : 2 दिसम्बर, 2019 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66

माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमान गोविन्द सिंह डोटासरा का कोटा संभाग के संस्थाप्रधानों एवं शिक्षा अधिकारियों से

शैक्षिक-संवाद

दिनांक-8नवम्बर, 2019

स्थान: यूआईटी.ऑडिटोरियम, कोटा

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334011